स्वस्थ चेतना का वाहक

सहयोग राशि
40/-₹

सितम्बर 2026

कान्ति

मासिक

शिक्षक दिवस

- शिक्षक : समाज के शिल्पकार
- शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं, गढ़ता भी है
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) : शिक्षाशास्त्र के प्रेरणा-स्रोत



(An ISO 22000:2005 Certified Company)

OCEANS SECRET

INDIA'S LEADING CANNED FOOD BRAND

- TUNA
- SARDINES
- MACKEREL



www.oceanssecret.in | info@seahath.com | Follow Us: oceanssecret | SHOP ONLINE @ amazon

SEAHATH CANNING CO. Plot - 8, Margao Industrial Estate, Curtorim, GOA, INDIA - 403 709 **CUSTOMER CARE : 0832-2860412**

प्रधान संपादक
डॉ. फ़रहत हुसैन

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 40/- रु॰ एक वर्ष 450/- रु॰
पांच वर्ष 2000/- रु॰ आजीवन रु॰ 6000/
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 150/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 50/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025
चेक / ड्राफ़्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत
ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
Printer : Akhilesh Singh
Press : AARYA PRINTERS
201, Ground Floor, DSIDC Complex
Okhla Industrial Area phase-1,
New Delhi-110020
Editor : Mohammad Ahmad

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

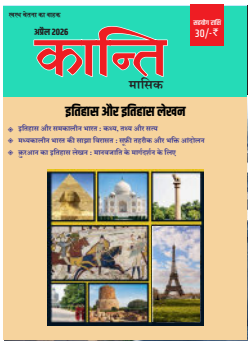
विचार सौरभ **डॉ. कौसर यज़दानी नदवी**

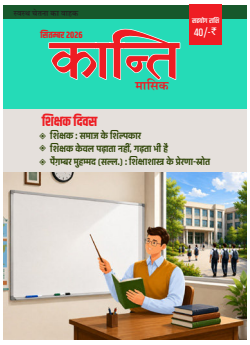
गोपाल कृष्ण गोखले

कौन नहीं जानता गोपाल कृष्ण गोखले को।
उन्हीं के बचपन की बात है।
गणित का पेपर हो चुका था, गुरु जी उसे जांच चुके थे।
उत्तर सही होने के कारण गुरु जी अति प्रसन्न थे,
गोपाल कृष्ण गोखले से बोले–
गोखले ! तुमने सारे सवाल सही किए हैं,
तुम्हारे उत्तरों से मैं अति प्रसन्न हूं।
सोचता हूं, तुम्हें इनाम दूं और लो इनाम में यह पुस्तक।
इनाम का नाम सुनकर बालक गोपाल का सिर झुक गया,
आंखें भीग गईं, अश्रु-धार गालों पर बह निकली।
वह फफक-फफक कर रोने लगे।
गुरु जी ने उन्हें अपने से क़रीब करते हुए पूछा,
बेटे। इनाम का नाम सुनकर तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए था,
तुम रोने क्यों लगे ?
क्या बात हो गई गोखले ?
बालक गोपाल ने रोते-रोते कहा–
गुरु जी! आप मुझे इनाम न दीजिए,
सज़ा दीजिए, मैं सज़ा का हक़दार हूं।
गुरु जी चकित स्तब्ध, पूछा, क्यों ?
बालक गोपाल ने बताया–
गुरु जी! गुरु जी !! और वह फिर रोने लगे
इतना कि हिचकियां बंध गई।
बड़ी मुश्किल से बिलख-बिलखकर बताया–
गुरु जी! इसमें से एक प्रश्न मुझे नहीं आ रहा था, बहुत परेशान था मैं कि क्या करूं।
पास के साथी से मैंने उसका हल पूछा,
फिर उसके बताए हल को मैंने कॉपी पर उतार दिया।
मैंने तो ग़लत काम किया,
और ग़लत काम पर इनाम ? मुझे तो सज़ा दीजिए।
मैं इनाम का नहीं सज़ा का हक़दार हूं।
अब बालक गोपाल के आंसू थम चुके थे,
मानो उसे सांत्वना मिल चुकी हो।
गुरु जी अब और अधिक प्रसन्न थे, बोले–
बेटे। तुम्हें पहले मैं यह इनाम तुम्हारी बुद्धि के लिए दे रहा था,
अब यह इनाम मैं तुम्हें तुम्हारी सच्चाई के लिए दे रहा हूं।
बहरहाल तुम इनाम ही के हक़दार हो। इसे लो और हमेशा सच बोलते रहो।

(प्रथम प्रकाशन : फ़रवरी 1998)

वर्ष 36 अंक 03 सितम्बर 2026





स्वस्थ चेतना का वाहक

कान्ति
मासिक

इस अंक में

➢ गोपाल कृष्ण गोखले (विचार सौरभ)	– डॉ. कौसर यज़दानी नदवी	3
➢ शिक्षक दिवस (संपादकीय)	–डॉ. फ़रहत हुसैन	5
➢ मार्गदर्शन	–अब्दुल अल्लाम नदवी	6
➢ संवाद का महत्व और संवादहीनता के दुष्परिणाम	–एम. एच. ख़ान	7
➢ महानता की कसौटी	–तबस्सुम शेख़ पुसद	11
➢ शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं, गढ़ता भी है	–डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	13
➢ शिक्षक : समाज के शिल्पकार	–शकील अहमद	17
➢ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) : शिक्षाशास्त्र के प्रेरणा-स्रोत	–डॉ. फ़रहत हुसैन	19
➢ शिक्षा के क्षेत्र में क़ुरआन का मार्गदर्शन	–मुहम्मद शकील शम्सी	23
➢ फ़ेल होती परीक्षाएं, गुम होती अकादमिक श्रेष्ठताएं	–सुफ़ियान अहमद	29
➢ ग़ज़ल	–'क़मर' रामनगरी, ज़हीर ललितपुरी	32
➢ लोकतंत्र को संदेश और मीडिया को रियलिटी चेक दे गया Gen Z आंदोलन	–सुफ़ियान अहमद	33
➢ Gen Z : चुनौती या उम्मीद की किरण?	–संपादन प्रभाग	37
➢ विश्व घटनाचक्र	–संपादन प्रभाग	39
➢ बीमार गुप्ता जी का हाल-चाल पूछने जाना	–मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	41
➢ मुस्लिम महिला : आधुनिकता, अस्मिता और आत्मविश्वास	–अज़का हयात	45
➢ इरफ़ान भी इरफ़ान से आगाह नहीं है	–सुफ़ियान अहमद	47
➢ ताइफ़ की यात्रा	–मुशर्रफ़ अली	49

संपादकीय



डॉ. फ़रहत हुसैन

शिक्षक दिवस

हर वर्ष 5 सितंबर को देश शिक्षक दिवस मनाता है। यह अवसर जहां शिक्षकों का सम्मान करने और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का है वहीं उस पूरी शिक्षा-व्यवस्था पर गंभीरता से विचार करने का भी है, जिसके केंद्र में शिक्षक, विद्यार्थी और समाज; तीनों समान रूप से उपस्थित हैं। शिक्षक किसी भी राष्ट्र की बौद्धिक चेतना, नैतिक दृष्टि और सांस्कृतिक विरासत के संवाहक होते हैं। वे केवल पाठ्य-पुस्तकों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, जिज्ञासा को दिशा देते हैं और आने वाली पीढ़ियों के चरित्र तथा भविष्य की नींव रखते हैं। इसलिए शिक्षक दिवस का वास्तविक अर्थ तभी पूर्ण होता है, जब हम शिक्षकों के सम्मान के साथ-साथ शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उसकी चुनौतियों और उसके भविष्य पर भी गंभीर विमर्श करें।

आज भारत सहित पूरी दुनिया शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है। नई शिक्षा नीति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डिजिटल तकनीक का बढ़ता प्रभाव, शिक्षा का निजीकरण और व्यवसायीकरण, रोज़गारोन्मुखी पाठ्यक्रमों की बढ़ती मांग, मातृभाषा में शिक्षा की बहस, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, सरकारी विद्यालयों की स्थिति, शोध और नवाचार की चुनौतियां, विद्यार्थियों पर बढ़ता मानसिक दबाव तथा शिक्षा में नैतिक मूल्यों का क्षरण; ये ऐसे प्रश्न हैं जिनसे आंखें नहीं मूंदी जा सकतीं। शिक्षा अब केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रह गई है; वह आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श का भी केंद्रीय विषय बन चुकी है। ऐसे में यह आवश्यक है कि शिक्षा को केवल आंकड़ों, नीतियों और परीक्षाओं की कसौटी पर न आंका जाए, बल्कि उसके मूल उद्देश्य को भी केंद्र में रखा जाए।

आज के समय में बढ़ते प्रशासनिक दायित्व, परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था, तकनीकी बदलाव, बाज़ार की प्रतिस्पर्धा और संस्थागत दबावों के बीच शिक्षक की भूमिका पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। दूसरी ओर, विद्यार्थी भी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। सूचना के विस्फोट, डिजिटल माध्यमों की निर्भरता, प्रतिस्पर्धा, बेरोज़गारी की आशंका और मानसिक तनाव ने शिक्षा को केवल सीखने की प्रक्रिया नहीं रहने दिया, बल्कि उसे अस्तित्व और भविष्य से जुड़े प्रश्नों का विषय बना दिया है।

ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक दिवस शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के साथ ही आत्ममंथन का अवसर भी है। यह हमें पूछने के लिए प्रेरित करता है कि हमारी शिक्षा किस दिशा में जा रही है? क्या वह केवल डिग्रियां और कुशल कर्मचारी तैयार कर रही है, या विचारवान, चरित्रवान और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक भी गढ़ रही है? क्या हमारी शिक्षा में ज्ञान के साथ विवेक, कौशल के साथ संवेदना और सफलता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का समुचित संतुलन है?

इन्हीं प्रश्नों को केंद्र में रखकर 'कान्ति' का यह अंक तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य केवल समस्याओं का प्रस्तुतिकरण नहीं है, बल्कि शिक्षा के विविध आयामों; नई शिक्षा नीति, शिक्षा के निजीकरण, डिजिटल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण, मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षक की बदलती भूमिका, शिक्षा में समान अवसर, मूल्य-आधारित शिक्षा, शोध एवं अनुसंधान, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और शिक्षा के भविष्य पर गंभीर, संतुलित और रचनात्मक विमर्श को आगे बढ़ाना है। साथ ही, ज्ञान की उस परंपरा को भी स्मरण करना है जो शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम बनती है, जिसे व्यवहार में लाकर इनसान सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा परलोक में सफलता प्राप्त करता है।

हमारी मनोकामना है कि शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रकाशित यह अंक शिक्षा से जुड़े बुनियादी प्रश्नों पर सार्थक संवाद बने। यदि यह अंक शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, नीति-निर्माताओं और समाज के बीच शिक्षा के उद्देश्य, स्वरूप और भविष्य को लेकर नए विचारों तथा गंभीर चिंतन को प्रेरित कर सके, तो यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। ■■

–अब्दुल अल्लाम नदवी

क़ुरआन



ज्ञान को जीवन का आधार बनाने का आह्वान

"पढ़ो। (ऐ नबी!) अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से इन्सान को बनाया। पढ़ो, और तुम्हारा रब बड़ा करीम (मेहरबान) है, जिसने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया, इन्सान को वह इल्म दिया जिसे वह न जानता था।" (क़ुरआन, 96:1-5)

इस्लाम का सबसे पहला सन्देश किसी युद्ध, सत्ता या संपत्ति का नहीं, बल्कि "पढ़ो" (इक़रा) का था। यही इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि शिक्षा और ज्ञान मानव जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। सूरा अलक़ की प्रथम पांच आयतों में ईश्वर ने इन्सान की रचना का उल्लेख करते हुए ज्ञान, क़लम और शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया है। यह सन्देश केवल मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए है कि अज्ञानता से मुक्ति और सभ्यता की उन्नति का मार्ग शिक्षा से होकर ही जाता है।

ईश्वर ने इन्सान को क़लम के माध्यम से वह ज्ञान सिखाया, जिसे वह नहीं जानता था। क़लम ज्ञान की सुरक्षा और प्रसार का सबसे बड़ा माध्यम है। लिखने के कारण ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचता है। सभ्यताओं का निर्माण, विज्ञान की प्रगति और मानव समाज का विकास शिक्षा और लेखन के कारण ही संभव हुआ है। इस आयत में क़लम का उल्लेख करके इस्लाम ने अध्ययन, शोध और ज्ञान के प्रसार का महत्व स्पष्ट किया है। इसका अर्थ यह है कि ज्ञान मनुष्य को सोचने, समझने, सत्य और असत्य में अंतर करने तथा न्याय, करुणा और नैतिकता के मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करता है। जिस समाज में शिक्षा का प्रकाश होता है, वहां शान्ति, सद्भाव और प्रगति का वातावरण बनता है। क़ुरआन में एक और स्थान पर ईश्वर फ़रमाता है–"क्या जानने वाले और न जानने वाले समान हो सकते हैं?" (क़ुरआन, 39:9)

आज संसार को सबसे अधिक आवश्यकता ऐसी शिक्षा की है, जो केवल बुद्धि का विकास न करे, बल्कि चरित्र का भी निर्माण करे और मनुष्य को मनुष्य का सम्मान करना सिखाए। यही क़ुरआन का सन्देश है। ■■

हदीस

अनिवार्य कर्तव्य

हज़रत अनस-बिन-मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया–"शिक्षा ग्रहण करना हर मुसलमान पर अनिवार्य है।" (हदीस : इब्ने-माजा)

यह हदीस बताती है कि इस्लाम में शिक्षा केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि प्रत्येक स्त्री और पुरुष की धार्मिक एवं नैतिक ज़िम्मेदारी है। ऐसा ज्ञान, जो मनुष्य को अपने रब की पहचान कराए, अच्छे चरित्र का निर्माण करे, मानवता की सेवा करना सिखाए और समाज में न्याय, शान्ति तथा सद्भाव स्थापित करे—उसे प्राप्त करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

इसीलिए क़ुरआन की पहली वह्य "इक़रा" (पढ़ो) से आरम्भ हुई। इससे स्पष्ट होता है कि इस्लाम अज्ञानता नहीं, बल्कि ज्ञान, चिंतन और विवेक का धर्म है। शिक्षा मनुष्य को केवल विद्वान नहीं बनाती, बल्कि उसे विनम्र, संवेदनशील, न्यायप्रिय और उत्तरदायी नागरिक भी बनाती है।

आज के युग में इस हदीस का सन्देश और भी अधिक प्रासंगिक है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों को भी अपनाए, तो भेदभाव, हिंसा और अज्ञानता का स्थान प्रेम, भाईचारे, करुणा और मानवता ले सकती है। इसलिए सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को स्वयं के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए जीना सिखाए। ■■

संवाद का महत्व और संवादहीनता के दुष्परिणाम

❖एम. एच. ख़ान

जब तक दुनिया रहिए नानक,
कुछ सुनिए कुछ कहिए नानक।

मानव जीवन मूलतः संवाद पर आधारित है। विचारों का आदान-प्रदान, भावनाओं की अभिव्यक्ति, मतभेदों का समाधान और साझा लक्ष्यों की प्राप्ति—इन सबका मूल आधार संवाद ही है। जहां संवाद जीवित रहता है, वहां रिश्ते फलते-फूलते हैं; और जहां संवाद टूट जाता है, वहां ग़लतफ़हमियां, अविश्वास और टकराव जन्म लेते हैं। आज का युग तकनीकी रूप से अत्यंत उन्नत है, पर विडंबना यह है कि संवाद की गुणवत्ता लगातार गिरती जा रही है। हम बोल तो बहुत रहे हैं, पर सुन कम रहे हैं; प्रतिक्रिया दे रहे हैं, पर समझने का धैर्य खोते जा रहे हैं।

संवाद का सही अर्थ

संवाद का अर्थ केवल अपनी बात कहना नहीं, बल्कि सामने वाले की बात को ध्यान से सुनना, उसकी भावना और दृष्टिकोण को समझना भी है। सच्चा संवाद दोतरफ़ा होता है—इसमें अहंकार नहीं, विनम्रता होती है; हठ नहीं, लचीलापन होता है; और आरोप नहीं, समाधान की भावना होती है।

संवाद का अर्थ केवल अपनी बात कहना नहीं, बल्कि सामने वाले की बात को ध्यान से सुनना, उसकी भावना और दृष्टिकोण को समझना भी है। सच्चा संवाद दोतरफ़ा होता है—इसमें अहंकार नहीं, विनम्रता होती है; हठ नहीं, लचीलापन होता है; और आरोप नहीं, समाधान की भावना होती है।

जब संवाद इस संतुलन को खो देता है और केवल बहस, शोर या तर्क-वितर्क बनकर रह जाता है, तब वह अपने उद्देश्य से भटक जाता है। इसीलिए इस्लामी शिक्षाएं हमें 'अहसन' यानी सर्वोत्तम तरीक़े से संवाद करने की ओर मार्गदर्शन देती हैं। क़ुरआन का निर्देश है–"और उनसे उत्तम तरीक़े से संवाद करो।" (क़ुरआन, 16:125)

संवाद केवल बोलने का नाम नहीं, बल्कि भलाई, शालीनता और बुद्धिमत्ता के साथ बात रखने की प्रक्रिया है।

व्यक्तिगत स्तर पर संवाद का महत्व

व्यक्ति के जीवन में संवाद की भूमिका अत्यंत गहरी है। परिवार, मित्रता, कार्यस्थल और समाज—हर जगह व्यक्ति संवाद के माध्यम से ही अपने संबंधों को आकार देता है। पति-पत्नी के बीच संवाद की कमी वैवाहिक जीवन में तनाव पैदा करती है। माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद न हो तो पीढ़ियों का अंतर खाई बन जाता है।

व्यक्तिगत जीवन में संवाद व्यक्ति को मानसिक शांति देता है। जब मन की बात साझा होती है, तो बोझ हल्का होता है। इसके विपरीत, संवादहीनता व्यक्ति को भीतर ही भीतर तोड़ देती है। वह अपने ही विचारों का क़ैदी बन जाता है, और धीरे-धीरे कुंठा, अकेलापन और निराशा उसे घेर लेती है।

आज अनेक मानसिक समस्याओं की जड़ में संवाद की कमी है। लोग बात करना चाहते हैं, पर सुने जाने का भरोसा नहीं पाते। यही स्थिति व्यक्ति को समाज से काट देती है।

संवादहीनता के व्यक्तिगत दुष्परिणाम

संवाद के अभाव में व्यक्ति अनुमान लगाने लगता है, और अनुमान प्रायः नकारात्मक होते हैं। ग़लतफ़हमियां जन्म लेती हैं, जो धीरे-धीरे स्थायी दूरी में बदल जाती हैं। व्यक्ति दूसरों की मंशा को बिना पुष्टि के ही नकारात्मक मान लेता है।

संवादहीनता आत्मविश्वास को भी प्रभावित करती है। जो व्यक्ति खुलकर अपनी बात नहीं रख पाता, वह भीतर ही भीतर असंतोष से भर जाता है। परिणामस्वरूप उसका व्यवहार या तो अत्यधिक आक्रामक हो जाता है या अत्यधिक मौन। दोनों ही स्थितियां संतुलित जीवन के लिए हानिकारक हैं।

सामाजिक स्तर पर संवाद की भूमिका

समाज विविध विचारों, संस्कृतियों और अनुभवों का संगम होता है। इस विविधता को समृद्धि में बदलने का माध्यम संवाद ही है। जब समाज के विभिन्न वर्ग आपस में संवाद करते हैं, तो सह-अस्तित्व की भावना मज़बूत होती है।

संवाद सामाजिक सुधार का भी सबसे प्रभावी साधन है। इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े परिवर्तन तलवार से नहीं, बल्कि विचार और संवाद से आए हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियां, अन्याय और असमानताएं तभी दूर होती हैं, जब उन पर खुलकर और ज़िम्मेदारी के साथ चर्चा की जाती है।

सामाजिक संवादहीनता और उसके परिणाम

जब समाज में संवाद का स्थान आरोप और नारेबाज़ी ले लेती है, तो ध्रुवीकरण बढ़ता है। लोग एक-दूसरे को समझने के बजाय लेबल लगाने लगते हैं। 'हम' और 'वे' की मानसिकता जन्म लेती है, जो समाज को अंदर से खोखला कर देती है।

संवादहीन समाज में अफ़वाहें तेज़ी से फैलती हैं। तथ्य पीछे छूट जाते हैं और भावनाएं आगे आ जाती हैं। इससे सामाजिक सौहार्द बिगड़ता है और छोटी-छोटी बातों पर बड़े टकराव खड़े हो जाते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर संवाद का महत्व

एक राष्ट्र अनेक मतों, विचारधाराओं और हितों से मिलकर बनता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में संवाद उसकी रीढ़ होता है। संसद से लेकर सड़क तक, संवाद ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मतभेदों को टकराव में बदले बिना सुलझाया जा सकता है।

राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है, जब सत्ता और समाज, सरकार और नागरिक, बहुमत और अल्पसंख्यक—सब एक-दूसरे से संवाद में रहें। स्वस्थ आलोचना और सकारात्मक संवाद राष्ट्र को मज़बूत बनाते हैं।

राष्ट्रीय संवादहीनता के दुष्परिणाम

जब राष्ट्रीय स्तर पर संवाद बंद हो जाता है, तो असहमति को देशद्रोह और सवाल को चुनौती समझा जाने लगता है। इससे भय का वातावरण बनता है और रचनात्मक विचार दब जाते हैं।

एक राष्ट्र अनेक मतों, विचारधाराओं और हितों से मिलकर बनता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में संवाद उसकी रीढ़ होता है। संसद से लेकर सड़क तक, संवाद ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मतभेदों को टकराव में बदले बिना सुलझाया जा सकता है। राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है, जब सत्ता और समाज, सरकार और नागरिक, बहुमत और अल्पसंख्यक—सब एक-दूसरे से संवाद में रहें। स्वस्थ आलोचना और सकारात्मक संवाद राष्ट्र को मज़बूत बनाते हैं।

संवादहीनता नीतियों में कठोरता लाती है। जनता की वास्तविक समस्याएं सामने नहीं आ पातीं और निर्णय ज़मीनी हक़ीक़त से कट जाते हैं। परिणामस्वरूप असंतोष बढ़ता है, जो कभी भी विस्फोट का रूप ले सकता है।

वैश्विक स्तर पर संवाद की आवश्यकता

यह ग्लोबल विलेज का ज़माना है। आज की दुनिया आपस में एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। एक देश की समस्या दूसरे देश को प्रभावित करती है। ऐसे में वैश्विक संवाद की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। युद्ध, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता और मानवीय संकट—इन सबका समाधान संवाद के बिना संभव नहीं है।

वैश्विक मंचों पर संवाद केवल हितों की रक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि मानवता के साझा भविष्य की योजना है। सभ्यताओं के बीच संवाद टकराव को रोक सकता है और सहयोग के नए रास्ते खोल सकता है। अलग-अलग वर्गों के बीच भी कम ही बातों में मतभेद पाया जाता है अधिकतर मूल्य तो सभी मानव समुदायों के बीच समान ही होते हैं। मतभेदों को अलग रखकर अगर समान मूल्यों पर संवाद होते रहें तो समस्याओं का समाधान भी निकलेगा और समय के साथ-साथ कम होते चले जाएंगे। संसार बनाने वाले और संसार में मनुष्य को समझ-बूझ देकर भेजने वाले ईश्वर का आदेश है–"ऐ किताब वालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है।" (क़ुरआन, 3:64)

वैश्विक संवादहीनता के दुष्परिणाम

जब राष्ट्र संवाद छोड़कर शक्ति और दबाव की भाषा बोलने लगते हैं, तो युद्ध और विनाश का मार्ग खुल जाता है।

इतिहास में जितने भी बड़े संघर्ष हुए हैं, उनकी शुरुआत संवाद की विफलता से हुई है।

वैश्विक संवादहीनता मानवता को ख़ेमों में बांट देती है। 'हम सही हैं' और 'वे ग़लत हैं' की सोच पूरी दुनिया को असुरक्षित बना देती है।

'अहसन' संवाद की अवधारणा

"और उनसे उत्तम (अहसन) तरीक़े से संवाद करो।" केवल धार्मिक निर्देश नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। इसका अर्थ है—सम्मान, शालीनता, तर्क और करुणा के साथ संवाद। यह हमें सिखाता है कि असहमति के बावजूद इंसानियत को न छोड़ा जाए।

उत्तम संवाद में आवाज़ ऊंची नहीं होती, बल्कि विचार ऊंचे होते हैं। इसमें जीतने की नहीं, समझाने और समझने की इच्छा प्रबल होती है।

समसामयिक भारतीय संदर्भ में संवाद की आवश्यकता

वर्तमान भारतीय परिदृश्य में संवाद का महत्व और भी बढ़ गया है। हमारा देश भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों और विचारधाराओं की बहुलता का प्रतीक है। ऐसी विविधता में संवाद केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आवश्यकता है। आज सार्वजनिक विमर्श में अक्सर यह देखने को मिलता है कि असहमति को शत्रुता समझ लिया जाता है और प्रश्न पूछने को नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। इससे लोकतांत्रिक परंपराएं कमज़ोर पड़ती हैं।

सोशल मीडिया और त्वरित समाचारों के युग में संवाद की गति तेज़ हुई है, पर उसकी गहराई कम होती जा रही है। अधूरी जानकारी, भावनात्मक भाषा और तात्कालिक प्रतिक्रिया संवाद को बहस और टकराव में बदल देती है। भारतीय समाज के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि यहां शब्दों की आग जल्दी ही सामाजिक तनाव का रूप ले सकती है।

धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर संवाद की कमी समाज में अविश्वास को जन्म देती है। एक-दूसरे की बात सुने बिना निष्कर्ष निकाल लेना, पूरे समुदाय को एक ही रंग में रंग देना—ये प्रवृत्तियां सामाजिक ताने-बाने को नुक़सान पहुंचाती हैं। ऐसे समय में—"और उनसे उत्तम तरीक़े से संवाद करो।" का सिद्धांत हमें याद दिलाता है कि मतभेद के क्षणों में भी भाषा संयमित और उद्देश्य सकारात्मक होना चाहिए।

भारत की परंपरा संवाद की रही है—शास्त्रार्थ से लेकर पंचायत तक, और संसद से लेकर सभ्य नागरिक चर्चा तक। आज आवश्यकता इस विरासत को नए सिरे से जीवित करने की है। सरकार, मीडिया, सामाजिक नेतृत्व और सामान्य नागरिक—सबकी ज़िम्मेदारी है कि संवाद को सम्मान, तथ्य और संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ाया जाए।

संवाद जीवन की सांस है। व्यक्तिगत शांति से लेकर वैश्विक स्थिरता तक, हर स्तर पर संवाद अनिवार्य है। संवादहीनता हमें भीतर से भी तोड़ती है और बाहर से भी। भारतीय संदर्भ में तो संवाद की कमी सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक मूल्यों—दोनों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम संवाद की संस्कृति को पुनर्जीवित करें—ऐसे संवाद की, जो 'अहसन' हो; जो जोड़ने वाला हो, तोड़ने वाला नहीं। यही रास्ता है जो एक स्वस्थ व्यक्ति, सशक्त समाज, मज़बूत राष्ट्र और सुरक्षित विश्व की ओर जाता है।

निष्कर्ष

संवाद जीवन की सांस है। व्यक्तिगत शांति से लेकर वैश्विक स्थिरता तक, हर स्तर पर संवाद अनिवार्य है। संवादहीनता हमें भीतर से भी तोड़ती है और बाहर से भी। भारतीय संदर्भ में तो संवाद की कमी सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक मूल्यों—दोनों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम संवाद की संस्कृति को पुनर्जीवित करें—ऐसे संवाद की, जो 'अहसन' हो; जो जोड़ने वाला हो, तोड़ने वाला नहीं। यही रास्ता है जो एक स्वस्थ व्यक्ति, सशक्त समाज, मज़बूत राष्ट्र और सुरक्षित विश्व की ओर जाता है। ■■

क़ौम के अहले- सर्वत और अहले - ख़ैर हज़रात से ख़ुसूसी अपील

यतीमख़ाना इस्लामिया गया आपके माली तआवुन का मुंतज़िर है

109 साल की ख़िदमात



तआरुफ़ इदारा की बुनियाद अक्तूबर 1917 में एक उस्ताद और दो यतीम बच्चों से आठ आने (50 पैसे) माहवार किराया की कोठरी में Rs. 30 रुपये की छोटी-सी रक़म से पड़ी थी **तालीमी साल :** अप्रैल ता मार्च **तालीमी मराहिल :** इब्तिदाई, • सानवी, • आला, • शोबा-ए-हिफ़्ज़ व नाज़रा, • इनायत (I.T.I) • पांच जवानों में तालीम • अरबी • उर्दू • फ़ारसी • हिन्दी • अंग्रेज़ी • तादाद ज़ेरे-तालीम तलबा व तालिबात : तक़रीबन 450 **• तादाद कुल यतीम तलबा** 60 • बेरूनी तलबा, जो अपना ख़र्च देकर हॉस्टल में रहते हैं, उसके अलावा हैं। • तादाद तदरीसी व ग़ैर-तदरीसी स्टाफ़ : 28 **सालाना ख़र्च :** चालीस लाख (RS. 40,00,000) रुपये से ज़्यादा। **ज़रिया आमदनी :** मुस्लिम अवाम के चंदे। **ख़र्चे :** यतीम तलबा का सारा ख़र्च (तआम, क़ियाम, रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त [Free]) ये सारा ख़र्च इदारा पूरा करता है। किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **याद रखें :** (1) यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन या उजरत पर चंदा वसूल नहीं किया करता है। (2) पांच ज़बानों में क़ुरआन व इस्लामियात के साथ क्लास 1 से मैट्रिक (Matric) तक (जो बिहार बोर्ड से मंज़ूरशुदा है) मेयारी तालीम दी जाती है। • हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक का नज़्म (3) 108 साल से इदारा यतीम और ग़ैर-यतीम तलबा की इस्लामी माहौल में दीनी व असरी तालीम के साथ तालीमी व तरबियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। (4) इदारा ही के अहाते (Campus) में दो हरे-भरे पार्क के साथ शानदार मस्जिद, तालीमगाह, इक़ामतगाह, मतबख़ और दूसरे शोबे वग़ैरा हैं • इसलिए तलबा को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता है। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम तालिब-इल्म का सालाना ख़र्च तीस हज़ार रुपये RS. 30,000 है। आप भी इस कारे-सवाब में शरीक हों। • यहां के तलबा को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में आलिमियत के पहले व दूसरे साल में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। (5) यतीमख़ाना से मैट्रिक पास करने वाले यतीम तलबा का दाख़िला यतीमख़ाना के इनायत (I.T.I.) में बिल्कुल मुफ़्त (Free) है। उनसे किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। पहले ही की तरह रहने-सहने और खाने-पीने की सारी सहूलियात दी जाती है। **अपील :** इस माद्दापरस्ताना (Materialistic) और जदीद दौर में दीनी व असरी उलूम के रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। • आप आसमान छूती महंगाई में इदारा की भरपूर माली मदद करें। तआवुन की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं जैसे • ज़कात • अतियात • सदकात वग़ैरा और इदारा के बाक़ी तालीमी व तामीरी मन्सूबों के लिए भी रुपये की बहुत ज़रूरत है। इदारा आपसे नन्हे-मुन्ने मासूम यतीम बच्चों को तालीम के साथ-साथ बाहुनर बनाने के लिए और उन्हें ऊंचा उठाने के लिए फ़राख़दिलाना माली तआवुन की अपील करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत (Nazr-e-Enayeth) यू-ट्यूब (You Tube) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ़ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता
Hon. Secretary, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE,
Cherki-824237, Distt. : Gaya (Bihar) India

Mobile : 9801213022, Whatsapp No. : 7258063440

Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
Bank A/C No.: 300402010010581 (ज़कात/Zakat)
Bank A/C No.: 300402010002982 (डोनेशन/Donation)
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए-मेहरबानी स्कैन एंड पै पर (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) और नाम व पता ऊपर के व्हाट्सऐप नम्बर पर भेज दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ान (सदर)
9631867066

डॉक्टर जेड. एच. ख़ान
एजाज़ी सेक्रेट्री

E-mail : gmocde@yahoo.com.in
Website : www.gmogaya.in

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता क़ायम करें।
जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सदर) समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9934943229
जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9631867066

चिंतन

महानता की कसौटी

❖तबस्सुम शेख़ पुसद

आज पूरी दुनिया अभूतपूर्व वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के दौर से गुज़र रही है। मनुष्य ने ऐसी-ऐसी उपलब्धियां प्राप्त कर ली हैं जिनकी कभी केवल कल्पना की जाती थी। ऊंची इमारतें, तेज़ रफ़्तार वाहन और इंटरनेट, आधुनिक चिकित्सा ने जीवन को पहले से कहीं अधिक सुविधाजनक बना दिया है। लेकिन इन सबके बीच एक प्रश्न आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है—क्या केवल भौतिक विकास किसी समाज को महान बना सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर इतिहास भी देता है और वर्तमान भी। किसी भी समाज की पहचान उसकी ऊंची इमारतों, आधुनिक तकनीक, आर्थिक समृद्धि या राजनीतिक शक्ति से नहीं होती, बल्कि उसके लोगों के चरित्र से होती है। जिस समाज के नागरिक सत्यनिष्ठ, ईमानदार, दयालु, न्यायप्रिय और ज़िम्मेदार होते हैं, वही समाज वास्तव में महान कहलाने का अधिकारी होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन सभ्यताओं ने चरित्र और नैतिक मूल्यों को अपनाया, वे लंबे समय तक सम्मान और स्थिरता के साथ जीवित रहीं। इसके विपरीत, जब समाजों में चरित्र का पतन हुआ, तो उनकी शक्ति और वैभव भी अधिक समय तक टिक नहीं सके।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने फ़रमाया- "तुममें सबसे श्रेष्ठ वह है जिसका चरित्र सबसे उत्तम है।" (हदीस : बुख़ारी)

एक और प्रसिद्ध हदीस में आप (सल्ल.) ने फ़रमाया-"मैं उत्तम चरित्र निर्माण और नैतिकता की पूर्णता के लिए भेजा गया हूं।" (हदीस : मुस्नद अहमद)

सवाल है कि चरित्र क्या है? चरित्र केवल बाहरी व्यवहार का नाम नहीं है। चरित्र वह शक्ति है जो इंसान को सही और ग़लत में अंतर करना सिखाती है। जब कोई अकेला हो और फिर भी झूठ न बोले, किसी का अधिकार न छीने, बेईमानी न करे और अपने रब से डरते हुए सही रास्ता चुने, तो यही उसका चरित्र है। चरित्र वह है जो इंसान को लालच, स्वार्थ और अन्याय से रोकता है।

आज समाज में अनेक समस्याएं दिखाई देती हैं। रिश्वतख़ोरी, भ्रष्टाचार, झूठ, धोखाधड़ी, मिलावट, नशाख़ोरी, महिलाओं के साथ अपराध, बच्चों पर अत्याचार, बुज़ुर्गों की उपेक्षा और सोशल मीडिया पर झूठी ख़बरों का सैलाब—ये सब केवल क़ानून की समस्या नहीं हैं। इनकी जड़ चरित्र का पतन है। यदि व्यक्ति का चरित्र मज़बूत हो, तो वह किसी क़ानून के डर से नहीं, बल्कि अपनी नैतिक चेतना के कारण बुराई से दूर रहेगा।

परिवार चरित्र निर्माण की पहली पाठशाला है। एक बच्चा बोलना सीखने से पहले अपने माता-पिता के व्यवहार को देखना शुरू कर देता है। यदि घर में सत्य, ईमानदारी, सम्मान, अनुशासन और प्रेम का वातावरण होगा, तो वही गुण उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बनेंगे। लेकिन यदि बच्चा बचपन से झूठ, गाली-गलौज, धोखा, लालच और अनैतिक व्यवहार देखेगा, तो वही उसके जीवन की दिशा बन सकता है। इसलिए किसी भी समाज को सुधारना है तो सबसे पहले परिवारों को मज़बूत बनाना होगा।

शिक्षा का उद्देश्य भी केवल डिग्री और नौकरी तक सीमित नहीं होना चाहिए। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य एक अच्छा इंसान तैयार करना है। यदि कोई व्यक्ति बहुत बड़ा वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर या अधिकारी बन जाए, लेकिन उसके भीतर ईमानदारी और मानवता न हो, तो उसका ज्ञान भी समाज के लिए ख़तरा बन सकता है। इसलिए विद्यालयों और महाविद्यालयों में निर्माण को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

आज के युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती चरित्र की रक्षा करने की है। सोशल मीडिया, नशे की लत, आसान

धन कमाने की चाह, ऑनलाइन जुआ और सट्टेबाज़ी, अश्लील सामग्री तथा ग़लत संगति अनेक युवाओं को नैतिक पतन की ओर ले जा रही है। क्षणिक आनंद के लिए लोग अपना भविष्य, परिवार का विश्वास और समाज में सम्मान तक खो देते हैं। ऐसे समय में युवाओं को यह समझना होगा कि सफलता का सबसे मज़बूत आधार प्रतिभा नहीं, बल्कि चरित्र है।

समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान भी चरित्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिस समाज में महिलाओं की गरिमा सुरक्षित नहीं होती, वह कभी महान नहीं बन सकता। इसी प्रकार अनाथों, विधवाओं, ग़रीबों, दिव्यांगों और कमज़ोर लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना भी चरित्र की पहचान है। महान व्यक्ति वह नहीं जो केवल अपने लिए जीता है, बल्कि वह है जो दूसरों के जीवन में भी सुख और सुरक्षा का कारण बनता है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने फ़रमाया–"तुममें सबसे श्रेष्ठ वह है जिसका चरित्र सबसे उत्तम है।" (हदीस : बुख़ारी)

एक और प्रसिद्ध हदीस में आप (सल्ल.) ने फ़रमाया– "मैं उत्तम चरित्र निर्माण और नैतिकता की पूर्णता के लिए भेजा गया हूं।" (हदीस : मुस्नद अहमद)

शिक्षाओं से स्पष्ट होता है कि इस्लाम में केवल इबादत ही नहीं, बल्कि अच्छा चरित्र भी अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का माध्यम है। यदि नमाज़, रोज़ा और अन्य इबादतें इंसान के चरित्र को बेहतर न बनाएं, तो उनके उद्देश्य अधूरे रह जाते हैं।

चरित्र केवल व्यक्ति का निजी गुण नहीं है, बल्कि पूरे समाज की आत्मा है। एक व्यक्ति का अच्छा चरित्र उसके परिवार को प्रभावित करता है, परिवार समाज को और समाज राष्ट्र को। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सत्य, ईमानदारी, वचनबद्धता, अनुशासन और करुणा को अपनाए, तो समाज में अपराध, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, हिंसा और अन्याय अपने आप कम होने लगते हैं। इसलिए चरित्र निर्माण केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकता भी है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का पूरा जीवन सत्य, ईमानदारी, न्याय और उत्तम चरित्र का जीवंत उदाहरण है। पैग़म्बरी मिलने से पहले भी मक्का के लोग आपकी सच्चाई और ईमानदारी के इतने बड़े प्रशंसक थे कि वे आपको "अस-सादिक़" (सच्चे) और "अल-अमीन" (विश्वसनीय, अमानतदार) की उपाधि से पुकारते थे। यह सम्मान आपको किसी पद, शक्ति या धन के कारण नहीं मिला था, बल्कि आपके निष्कलंक चरित्र और सच्चे व्यवहार के कारण मिला।

मक्का के लोग अपने सबसे क़ीमती धन, सोना, चांदी और अन्य अमानतें भी आपके पास निश्चिंत होकर रखते थे, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) कभी किसी की अमानत में ख़यानत नहीं करेंगे। यहां तक कि जब कुछ लोगों ने इस्लाम का विरोध किया और आपको तकलीफ़ें दीं, तब भी वे अपनी अमानतें आपके पास ही सुरक्षित रखते थे। जब आप (सल्ल.) मक्का से हिजरत करके मदीना जाने लगे, तब भी आपने हज़रत अली (रज़ि.) को इस उद्देश्य से पीछे छोड़ा कि वे लोगों की सभी अमानतें उनके मालिकों तक लौटा दें। यह घटना बताती है कि दुश्मनों के साथ भी ईमानदारी छोड़ना आपके स्वभाव में नहीं था।

आज का युग भौतिक प्रगति का युग है। लोग धन, पद और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। लेकिन यदि इन सबके साथ चरित्र न हो, तो यह सफलता अधूरी है। धनवान होना महानता की पहचान नहीं है, चरित्रवान होना महानता की पहचान है। एक ईमानदार मज़दूर समाज के लिए उस भ्रष्ट अधिकारी से कहीं अधिक सम्मान का पात्र है, जो अपने पद का दुरुपयोग करता है।

आज समाज जिन समस्याओं से जूझ रहा है—भ्रष्टाचार, रिश्वतख़ोरी, नशाख़ोरी, महिलाओं पर अत्याचार, झूठ, धोखा, साइबर अपराध और सामाजिक वैमनस्य—उनकी जड़ में कहीं न कहीं चरित्र का पतन दिखाई देता है। क़ानून अपराधियों को सज़ा दे सकता है, लेकिन अच्छा चरित्र अपराध को जन्म लेने से पहले ही रोक देता है। इसलिए चरित्र समाज की सबसे बड़ी सुरक्षा है।

परिवार चरित्र निर्माण की पहली पाठशाला है। बच्चे अपने माता-पिता के व्यवहार से सीखते हैं। यदि घर में सत्य, सम्मान, अनुशासन और प्रेम का वातावरण होगा, तो वही संस्कार बच्चों के व्यक्तित्व का हिस्सा बनेंगे। विद्यालय और महाविद्यालय भी केवल ज्ञान देने तक सीमित न रहें, बल्कि चरित्र निर्माण को अपनी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बनाएं। क्योंकि शिक्षित व्यक्ति यदि चरित्रहीन हो, तो उसका ज्ञान भी समाज के लिए हानिकारक बन सकता है।

याद रखिए—धन से अमीर बना जा सकता है, लेकिन चरित्र से ही महान बना जा सकता है। और महान चरित्र ही महान समाज का निर्माण करता है। ■■

विशेष आयोजन

शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं, गढ़ता भी है

❖डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी



इक्कीसवीं सदी का संसार अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, वैश्वीकरण और तीव्र सामाजिक परिवर्तन ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। आज विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल सामग्री, वर्चुअल प्रयोगशालाएं और AI आधारित शिक्षण प्रणालियां तेज़ी से प्रवेश कर रही हैं। ज्ञान अब केवल पुस्तकालयों और शिक्षकों तक सीमित नहीं है; वह प्रत्येक विद्यार्थी की हथेली पर रखे मोबाइल फ़ोन में उपलब्ध है।

ऐसी स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि विद्यालयी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है? क्या शिक्षा का लक्ष्य केवल ऐसे युवाओं को तैयार करना है जो रोज़गार के बाज़ार में प्रतिस्पर्धा कर सकें, या ऐसे मनुष्यों का निर्माण करना है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ चरित्रवान, उत्तरदायी, संवेदनशील और न्यायप्रिय भी हों? इसी प्रश्न के साथ एक और प्रश्न जुड़ता है—यदि ज्ञान का स्वरूप बदल गया है, तो अब शिक्षक की भूमिका होगी?

इन प्रश्नों के उत्तर केवल शिक्षाशास्त्र तक सीमित नहीं हैं; वे राष्ट्र के भविष्य, सामाजिक संस्कृति और मानवीय सभ्यता की दिशा से जुड़े हुए हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम विद्यालयी शिक्षा को केवल आर्थिक विकास के उपकरण के रूप में न देखें, बल्कि उसे मनुष्य और समाज के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में समझें।

रोज़गार से आगे : शिक्षा का व्यापक उद्देश्य

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा का मूल्यांकन प्रायः रोज़गार, वेतन और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता के आधार पर किया जाने लगा है। माता-पिता विद्यालय का चयन इस आधार पर करते हैं कि वहां से कितने विद्यार्थी प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाते हैं। विद्यालय भी अपनी उपलब्धियों का प्रचार प्रायः बोर्ड परीक्षाओं के परिणामों और चयनित विद्यार्थियों की संख्या से करते हैं।

निस्संदेह, शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को सम्मानजनक आजीविका अर्जित करने योग्य बनाए—यह उसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है। परन्तु यदि शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम बनकर रह जाए तो उसका व्यापक मानवीय उद्देश्य अधूरा रह जाता है। वास्तविक शिक्षा मनुष्य की सम्पूर्ण क्षमता का विकास करती है। वह उसकी बुद्धि को प्रखर बनाती है, विवेक को जागृत करती है, नैतिक चेतना को सुदृढ़ करती है, संवेदनशीलता विकसित करती है और उसे अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल 'क्या सोचना है' यह बताना नहीं, बल्कि 'कैसे सोचना है' यह सिखाना भी है।

महान शिक्षाविदों ने सदैव इस बात पर बल दिया है कि

ज्ञान और चरित्र का संबंध अविभाज्य है। यदि ज्ञान नैतिकता से अलग हो जाए तो वही ज्ञान शोषण, हिंसा और विनाश का साधन भी बन सकता है। विज्ञान ने मानवता को अद्भुत सुविधाएं प्रदान की हैं, परन्तु उसी विज्ञान ने परमाणु बम, जैविक हथियार और साइबर अपराध जैसी चुनौतियां भी उत्पन्न की हैं। इसलिए शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य केवल दक्षता (Competence) नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व (Responsibility) भी होना चाहिए।

विद्यालय ऐसा वातावरण बनाए जहां विद्यार्थी सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहयोग, सहिष्णुता, करुणा और न्याय जैसे मूल्यों को केवल पढ़ें ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने व्यवहार में भी उतारना सीखें।

शिक्षक केवल अध्यापक नहीं, मार्गदर्शक भी

एक समय था जब शिक्षक ज्ञान का लगभग एकमात्र स्रोत माना जाता था। विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तक और शिक्षक ही ज्ञान की दुनिया थे। आज स्थिति बिल्कुल भिन्न है। इंटरनेट पर किसी भी विषय की असंख्य जानकारियां कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाती हैं। AI आधारित प्रणालियां प्रश्नों के उत्तर देती हैं, लेख लिखती हैं, चित्र बनाती हैं और यहां तक कि जटिल समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। ऐसी परिस्थिति में कुछ लोग यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या भविष्य में शिक्षक की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी? इसका उत्तर स्पष्ट है—नहीं। वास्तव में तकनीक ने शिक्षक की आवश्यकता को कम नहीं किया, बल्कि और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। अंतर केवल इतना है कि शिक्षक की भूमिका बदल रही है।

अब शिक्षक का कार्य केवल जानकारी देना नहीं है। जानकारी तो विद्यार्थी स्वयं भी प्राप्त कर सकता है। शिक्षक का वास्तविक कार्य यह है कि वह विद्यार्थी को सही और ग़लत सूचना में अंतर करना सिखाए; तथ्यों की आलोचनात्मक समीक्षा करना सिखाए; प्रश्न पूछने का साहस दे; जिज्ञासा जगाए; और ज्ञान को जीवन से जोड़ना सिखाए।

AI किसी प्रश्न का उत्तर दे सकता है, लेकिन वह किसी बच्चे की भावनात्मक उलझनों को नहीं समझ सकता। वह परीक्षा की तैयारी करा सकता है, परन्तु जीवन के संकटों में नैतिक निर्णय लेने की प्रेरणा नहीं दे सकता। वह भाषा सिखा सकता है, परन्तु संवेदनशील संवाद की कला नहीं सिखा सकता। यह भूमिका केवल एक संवेदनशील शिक्षक ही निभा सकता है।

आज आवश्यकता यह है कि शिक्षक स्वयं भी आजीवन शिक्षार्थी बना रहे। जो शिक्षक नई तकनीकों, नई शिक्षण विधियों और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं के साथ स्वयं को अद्यतन नहीं करेगा, वह विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार नहीं कर सकेगा। इसलिए आज के शिक्षक में विषय-ज्ञान के साथ-साथ डिजिटल दक्षता, संवाद कौशल, सहानुभूति, नेतृत्व क्षमता और नैतिक दृष्टि का होना पहले से अधिक आवश्यक हो गया है।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) : संभावनाएं, अपेक्षाएं और प्रश्न

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा को नई दिशा देने का प्रयास करती है। यह नीति रटन्त शिक्षा से आगे बढ़कर अनुभवात्मक शिक्षण, बहुविषयक अध्ययन, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और कौशल विकास पर बल देती है। इसमें प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग, स्थानीय ज्ञान परम्पराओं के सम्मान तथा मूल्य-आधारित शिक्षा की भी चर्चा की गई है।

किन्तु किसी भी नीति की सफलता केवल उसके दस्तावेज़ पर निर्भर नहीं करती; उसका वास्तविक मूल्य उसके क्रियान्वयन में निहित होता है। देश के अनेक विद्यालय आज भी प्रशिक्षित शिक्षकों, डिजिटल संसाधनों, प्रयोगशालाओं और आधारभूत सुविधाओं के अभाव से जूझ रहे हैं। ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के बीच संसाधनों की असमानता भी एक बड़ी चुनौती है। यदि शिक्षा नीति के उद्देश्यों को वास्तविकता में बदलना है, तो शिक्षक प्रशिक्षण, विद्यालयी इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्थानीय आवश्यकताओं और सामाजिक सहभागिता पर समान रूप से ध्यान देना होगा।

AI और डिजिटल शिक्षा : अवसर भी, चुनौती भी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी संभावनाएं प्रस्तुत की हैं। आज प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति के अनुसार सीख सकता है। कठिन विषयों को वीडियो, एनीमेशन और सिमुलेशन के माध्यम से सरल बनाया जा सकता है। दूर-दराज़ के क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भी नई तकनीकें शिक्षा को अधिक समावेशी बना रही हैं।

किन्तु प्रत्येक तकनीकी उपलब्धि अपने साथ कुछ प्रश्न

भी लेकर आती है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक उत्तर AI से प्राप्त करेगा, तो क्या उसकी मौलिक सोच विकसित हो पाएगी? यदि पढ़ने की आदत कम हो जाएगी, तो क्या उसकी गहराई से समझने की क्षमता प्रभावित नहीं होगी? यदि बच्चों का अधिकांश समय स्क्रीन पर बीतेगा, तो क्या उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास पर प्रभाव नहीं पड़ेगा?

यही वह बिंदु है जहां शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। तकनीक का उपयोग इस प्रकार होना चाहिए कि वह विद्यार्थी की जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ाए, न कि उसे केवल तैयार उत्तरों पर निर्भर बना दे।

मातृभाषा : सोच और सृजन की पहली भाषा

विद्यालयी शिक्षा में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती; वह सोचने, समझने और व्यक्तित्व के निर्माण का भी आधार होती है। यही कारण है कि विश्व के अधिकांश विकसित देशों ने प्रारम्भिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में सुनिश्चित की है। बाल-मनोविज्ञान और शिक्षा-विज्ञान के अनेक शोध बताते हैं कि बच्चा जिस भाषा को घर-परिवार और सामाजिक परिवेश में सहज रूप से सीखता है, उसी भाषा में वह अवधारणाओं को अधिक गहराई से समझ पाता है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में यह विषय और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। दुर्भाग्य से यहां अंग्रेज़ी माध्यम को अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का पर्याय मान लिया गया है। परिणामस्वरूप अनेक बच्चे विषय की समझ विकसित करने के बजाय भाषा से संघर्ष करते रह जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य भाषा की कठिन परीक्षा लेना नहीं, बल्कि ज्ञान तक सहज पहुंच उपलब्ध कराना होना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारम्भिक कक्षाओं में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा पर बल देकर इसी वास्तविकता को स्वीकार किया है। इसका अर्थ यह नहीं कि विदेशी भाषाओं का महत्त्व कम हो जाता है। आज के वैश्विक युग में अंग्रेज़ी सहित अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है। किन्तु यह ज्ञान मातृभाषा की मज़बूत नींव पर खड़ा हो तो अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

मातृभाषा में शिक्षा बच्चे की रचनात्मकता, तार्किक क्षमता और आत्मविश्वास को विकसित करती है। वह अपनी संस्कृति, इतिहास और सामाजिक परिवेश से भी गहरा जुड़ाव अनुभव करता है। ऐसी शिक्षा केवल सूचना का संचार नहीं करती, बल्कि पहचान और आत्मबोध का भी निर्माण करती है।

नवाचार और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन की चुनौती

आज की शिक्षा का सबसे बड़ा संकट शायद यह नहीं है कि हमारे पास संसाधन कम हैं, बल्कि यह है कि संसाधनों की प्रचुरता के बीच मानवीय मूल्यों में गिरावट दिखाई देने लगी है। विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य की क्षमताओं को असाधारण रूप से बढ़ाया है, किन्तु क्या उसी अनुपात में उसकी नैतिक चेतना भी विकसित हुई है?

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता लेख लिख सकती है, चित्र बना सकती है और जटिल गणनाएं कर सकती है; किन्तु वह सत्य, न्याय, करुणा और उत्तरदायित्व का अनुभव नहीं कर सकती। वह निर्णय तो दे सकती है, लेकिन नैतिक विवेक नहीं।

इसलिए विद्यालयों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे तकनीकी दक्षता और मानवीय संवेदनशीलता के बीच संतुलन कैसे स्थापित करें। यदि शिक्षा केवल प्रतिस्पर्धा, अंक और करियर तक सीमित रह जाएगी, तो समाज में सफल व्यक्ति तो बहुत होंगे, लेकिन अच्छे मनुष्य कम होते जाएंगे।

विद्यालयों में मूल्य-शिक्षा को किसी अलग विषय के रूप में पढ़ाना पर्याप्त नहीं है। सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक व्यवहार और विविधता के सम्मान जैसे मूल्य पूरे विद्यालयी वातावरण में दिखाई देने चाहिए। शिक्षक का आचरण, विद्यालय का अनुशासन, विद्यार्थियों के साथ व्यवहार और निर्णय लेने की प्रक्रिया—सब मिलकर मूल्य शिक्षा का वास्तविक माध्यम बनते हैं।

यही वह दृष्टिकोण है जो शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का साधन मानता है। ज्ञान तभी सार्थक है जब वह मनुष्य को अपने कर्तव्यों का बोध कराए, उसे सत्य का पक्षधर बनाए और समाज के प्रति उसकी जवाबदेही को मज़बूत करे। यदि शिक्षा मनुष्य के भीतर उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न नहीं करती, तो ऐसी शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

चरित्र निर्माण की साझा ज़िम्मेदारी

अक्सर यह समझ लिया जाता है कि बच्चों के चरित्र निर्माण की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी विद्यालय की है। यह धारणा

वास्तविकता से बहुत दूर है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विद्यालय, परिवार और समाज—तीनों की समान भागीदारी होती है।

परिवार बच्चे का पहला विद्यालय है। वह बोलना, व्यवहार करना, सम्मान करना, सत्य बोलना और दूसरों के प्रति संवेदनशील होना सबसे पहले अपने घर में सीखता है। विद्यालय इन गुणों को दिशा देता है और समाज उन्हें व्यवहार में परखता है।

यदि विद्यालय ईमानदारी का पाठ पढ़ाए और बच्चा समाज में बेईमानी को सफलता का माध्यम बनते हुए देखे, तो शिक्षा का प्रभाव कमज़ोर पड़ जाएगा। यदि विद्यालय समानता और सम्मान की बात करे, लेकिन परिवार या समाज में भेदभाव का वातावरण हो, तो बच्चे के मन में भ्रम उत्पन्न होगा। इसलिए शिक्षा को केवल कक्षा तक सीमित नहीं किया जा सकता। अभिभावकों और शिक्षकों के बीच निरन्तर संवाद, सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय संस्कृति का सम्मान तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनने चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की भी है कि विद्यालय केवल परीक्षाओं के परिणाम घोषित करने के लिए अभिभावकों को न बुलाएं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास, मानसिक स्वास्थ्य, डिजिटल सुरक्षा, नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों पर भी नियमित संवाद स्थापित करें।

आने वाले कल का शिक्षक

भविष्य का शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं होगा। उसे ज्ञान, तकनीक और मानवीय संवेदनाओं—तीनों का समन्वय करना होगा।

उसे डिजिटल तकनीकों का उपयोग करना आना चाहिए, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। उसे यह भी समझना होगा कि तकनीक का उपयोग कब करना है और कब मानवीय संवाद अधिक आवश्यक है। उसे विद्यार्थियों को केवल उत्तर नहीं देने हैं, बल्कि सही प्रश्न पूछना भी सिखाना है।

भविष्य के शिक्षक में कुछ विशेष गुण अनिवार्य होंगे–

• विषय का गहन ज्ञान तथा निरन्तर अध्ययन की प्रवृत्ति।

• डिजिटल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों के विवेकपूर्ण उपयोग की क्षमता।

• विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमियों और क्षमताओं के प्रति संवेदनशील दृष्टि।

• नैतिक नेतृत्व और आदर्श आचरण।

• संवाद, सहयोग और प्रेरणा देने की क्षमता।

• आलोचनात्मक तथा रचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने का कौशल।

• स्वयं आजीवन शिक्षार्थी बने रहने का संकल्प।

वास्तव में शिक्षक का सबसे बड़ा प्रभाव उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके व्यक्तित्व से पड़ता है। विद्यार्थी प्रायः वही बनते हैं जो वे अपने शिक्षक में देखते हैं। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य—एक बेहतर मनुष्य।

आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभूतपूर्व गति से विकसित हो रही है, तब यह आशंका स्वाभाविक है कि कहीं मशीनें शिक्षा पर हावी न हो जाएं। किन्तु इतिहास बताता है कि प्रत्येक तकनीकी परिवर्तन ने मनुष्य की भूमिका को समाप्त नहीं किया, बल्कि उसे नए रूप में परिभाषित किया है। शिक्षा में भी यही होगा। भविष्य का विद्यालय वह नहीं होगा जहां केवल अत्याधुनिक उपकरण हों, बल्कि वह होगा जहां तकनीक और मानवीय संवेदना का संतुलित समन्वय दिखाई दे। जहां स्मार्ट बोर्ड हों, परन्तु उनके साथ संवेदनशील शिक्षक भी हों; जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपलब्ध हो, परन्तु नैतिक बुद्धिमत्ता का विकास भी हो; जहां प्रतियोगिता हो, परन्तु सहयोग की भावना भी जीवित रहे।

वास्तविक शिक्षा वह है जो ज्ञान को जीवन से जोड़े। आधुनिक शिक्षा विज्ञान भी इसी निष्कर्ष पर पहुंच रहा है कि केवल सूचना देना पर्याप्त नहीं है; शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मनुष्यों का निर्माण करना होना चाहिए जो विवेकशील हों, नैतिक हों, सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करें और मानवता के कल्याण में अपनी भूमिका समझें।

अतः विद्यालयी शिक्षा का लक्ष्य केवल रोज़गार योग्य युवाओं का निर्माण नहीं, बल्कि ऐसे चरित्रवान, विचारशील, आत्मानुशासित और करुणाशील नागरिक तैयार करना होना चाहिए जो ज्ञान को शक्ति नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम समझें। तकनीक का युग जितनी तेज़ी से आगे बढ़ेगा, उतनी ही अधिक आवश्यकता ऐसे शिक्षकों की होगी जो विद्यार्थियों के भीतर केवल बुद्धि ही नहीं, बल्कि विवेक, चरित्र और जीवन का उद्देश्य भी जागृत कर सकें। यही शिक्षा की वास्तविक सफलता होगी और यही किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की सबसे मज़बूत आधारशिला है। ■■

विशेष आयोजन

शिक्षक : समाज के शिल्पकार

❖शकील अहमद
(असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी
ऑल इंडिया आइडियल टीचर्स एसोसिएशन)

किसी भी राष्ट्र की उन्नति केवल उसकी आर्थिक शक्ति, प्राकृतिक संसाधनों या आधुनिक तकनीक से नहीं होती, बल्कि उसके नागरिकों के चरित्र, संस्कार और ज्ञान से होती है। इन गुणों का निर्माण करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अध्यापक होता है। इसलिए कहा गया है–"एक अच्छा अध्यापक केवल विद्यार्थियों को पढ़ाता नहीं, बल्कि उनका भविष्य गढ़ता है।"

समाज की दिशा और दशा निर्धारित करने में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह केवल पाठ्य-पुस्तकों का ज्ञान नहीं देता, बल्कि जीवन जीने की कला, नैतिक मूल्यों तथा ज़िम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी देता है।

आज का विद्यार्थी ही कल का वैज्ञानिक, चिकित्सक, न्यायाधीश, सैनिक, किसान, उद्योगपति, प्रशासक और जनप्रतिनिधि बनता है। यदि विद्यार्थी योग्य, संस्कारी और कर्तव्यनिष्ठ बनता है, तो इसका श्रेय बहुत हद तक उसके अध्यापक को जाता है। इस प्रकार अध्यापक वास्तव में समाज-निर्माण का सबसे मज़बूत आधार है।

भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था, "अध्यापक राष्ट्र की सर्वोत्तम बुद्धि होते हैं।" यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है। अध्यापक राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करता है। वह विद्यार्थियों में ज्ञान, अनुशासन, आत्मविश्वास और देशप्रेम की भावना विकसित करता है। जिस देश के शिक्षक जितने योग्य और समर्पित होंगे, वह देश उतनी ही तीव्र गति से प्रगति करेगा।

चरित्र-निर्माण में अध्यापक की भूमिका

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान का निर्माण करना भी है। अध्यापक विद्यार्थियों में सच्चाई, ईमानदारी, अनुशासन, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग और ज़िम्मेदारी जैसे गुण विकसित करता है। वह अपने व्यवहार, वाणी और कार्यशैली से विद्यार्थियों के सामने आदर्श प्रस्तुत करता है।

बच्चे अपने अध्यापक की बातों से अधिक उसके व्यवहार से सीखते हैं। यदि अध्यापक समय का पाबंद, ईमानदार और परिश्रमी है, तो विद्यार्थी भी इन्हीं गुणों को अपनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार अध्यापक समाज को अच्छे चरित्र वाले नागरिक प्रदान करता है।

ज्ञान और कौशल का विकास

आज का युग ज्ञान और तकनीक का युग है। केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों में तार्किक सोच, समस्या-समाधान की क्षमता, रचनात्मकता, संवाद-कौशल और डिजिटल दक्षता विकसित करना भी आवश्यक है। अध्यापक विद्यार्थियों को नई तकनीकों से परिचित कराता है और उन्हें बदलते समय के अनुरूप तैयार करता है। एक अच्छा अध्यापक बच्चों में प्रश्न पूछने की आदत विकसित करता है। वह उन्हें रटने के बजाय समझने और विचार करने की प्रेरणा देता है। यही विद्यार्थी आगे चलकर नए आविष्कार करते हैं और समाज की समस्याओं का समाधान खोजते हैं।

सामाजिक समरसता का निर्माण

भारत विविधताओं का देश है। यहां अनेक धर्म, भाषाएं, संस्कृतियां और परंपराएं हैं। अध्यापक विद्यार्थियों को सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना सिखाता है। वह उन्हें समानता, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है।

विद्यालय ऐसा स्थान है, जहां विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं। अध्यापक उनमें सहयोग, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान की भावना विकसित करता है, इससे समाज में सद्भाव और शांति बनी रहती है।

लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास

लोकतंत्र तभी सफल होता है, जब नागरिक जागरूक, ज़िम्मेदार और संवेदनशील हों। अध्यापक विद्यार्थियों को संविधान, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और लोकतांत्रिक मूल्यों का ज्ञान देता है। वह उन्हें मतदान, क़ानून के सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रहित के प्रति जागरूक बनाता है। एक जागरूक नागरिक ही स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान होता है और ऐसे नागरिकों का निर्माण अध्यापक ही करता है।

नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

आज समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा

है। भ्रष्टाचार, हिंसा, नशाख़ोरी, पर्यावरण प्रदूषण, साइबर अपराध और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएं निरंतर बढ़ रही हैं। इन समस्याओं का स्थायी समाधान केवल क़ानून से नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा से संभव है।

अध्यापक विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करके उन्हें सही और ग़लत का अंतर समझाता है। वह उन्हें ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और मानवता का मार्ग दिखाता है। जब विद्यार्थी इन मूल्यों को अपनाते हैं, तब समाज अधिक सुरक्षित, संवेदनशील और न्यायपूर्ण बनता है।

पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। अध्यापक विद्यार्थियों को जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, स्वच्छता, प्लास्टिक-मुक्त जीवन और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का महत्त्व समझाता है।

विद्यालयों में आयोजित वृक्षारोपण, स्वच्छता और पर्यावरण-जागरूकता अभियानों के माध्यम से विद्यार्थी प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी का भाव विकसित करते हैं, इससे समाज में पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति मज़बूत होती है।

महिला शिक्षा और लैंगिक समानता

समाज के समग्र विकास के लिए महिलाओं की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। अध्यापक बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करता है तथा लड़कों और लड़कियों के बीच समानता का वातावरण बनाता है। वह विद्यार्थियों को लैंगिक समानता, पारस्परिक सम्मान और संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाता है।

जब शिक्षित और जागरूक पीढ़ी तैयार होती है, तब समाज में भेदभाव कम होता है और समान अवसरों का वातावरण विकसित होता है।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरुकता

अध्यापक समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों—बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, जातीय भेदभाव, अंधविश्वास, नशाख़ोरी और अशिक्षा—के विरुद्ध जागरूकता फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वह केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अभिभावकों और समुदाय के साथ भी संवाद स्थापित करता है। अनेक स्थानों पर शिक्षक सामाजिक अभियानों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य कर रहे हैं।

प्रेरणा का स्रोत

हर विद्यार्थी के जीवन में कोई-न-कोई अध्यापक ऐसा अवश्य होता है, जिसकी प्रेरणा जीवनभर उसका मार्गदर्शन करती है। अनेक महान वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, खिलाड़ियों और नेताओं ने अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षकों को दिया है।

एक प्रेरणादायक अध्यापक विद्यार्थियों में यह विश्वास जगाता है कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद परिश्रम, ईमानदारी और आत्मविश्वास के बल पर सफलता प्राप्त की जा सकती है। वह बच्चों के सपनों को नई उड़ान देता है।

डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका

नई शिक्षा नीति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल संसाधनों ने शिक्षा के स्वरूप को बदल दिया है। अब अध्यापक केवल जानकारी देने वाला नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शक, प्रेरक और सहयोगी बन गया है।

उसे तकनीकी दक्षता के साथ-साथ विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, नवाचार, डिजिटल नैतिकता और तकनीक के ज़िम्मेदार उपयोग की भावना भी विकसित करनी होगी। भविष्य का समाज ऐसे ही शिक्षकों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ेगा।

एक आदर्श शिक्षक

एक आदर्श अध्यापक में ज्ञान, धैर्य, अनुशासन, संवेदनशीलता, ईमानदारी, निरंतर सीखने की इच्छा, सकारात्मक सोच और विद्यार्थियों के प्रति स्नेह होना चाहिए। वह सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करता है तथा प्रत्येक बच्चे की क्षमता को पहचानकर उसे आगे बढ़ने का अवसर देता है। ऐसा शिक्षक केवल अच्छे विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि अच्छे इंसान भी तैयार करता है।

समाज का भविष्य विद्यालयों में और विद्यालयों का भविष्य अध्यापकों के हाथों में होता है। यदि अध्यापक अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी, समर्पण और संवेदनशीलता के साथ करें, तो एक शिक्षित, संस्कारित, आत्मनिर्भर और विकसित समाज का निर्माण निश्चित है।

आज आवश्यकता ऐसे शिक्षकों की है, जो केवल पाठ न पढ़ाएं, बल्कि जीवन का मार्ग भी दिखाएं; केवल परीक्षा की तैयारी न कराएं, बल्कि व्यक्तित्व का विकास करें; केवल नौकरी न करें, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का संकल्प लेकर कार्य करें।

अंत में स्वामी विवेकानन्द का यह विचार अत्यंत प्रेरणादायक है—"शिक्षा वह है, जो मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करे।" इस पूर्णता को उजागर करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व अध्यापक ही है। इसलिए निस्संदेह कहा जा सकता है कि अध्यापक समाज का शिल्पकार, राष्ट्र का निर्माता और मानवता का सच्चा पथप्रदर्शक है।■■

विशेष आयोजन

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) : शिक्षाशास्त्र के प्रेरणा-स्रोत

❖डॉ. फ़रहत हुसैन

शिक्षक दिवस हमें उन व्यक्तित्वों का स्मरण करने का अवसर देता है जिन्होंने केवल ज्ञान का प्रसार ही नहीं किया, बल्कि मनुष्य और समाज के निर्माण में भी अमूल्य योगदान दिया। इतिहास में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, इन्हीं महान हस्तियों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का स्थान बहुत ऊंचा है। इस्लाम में उन्हें केवल ईश्वर के अंतिम दूत के रूप में ही नहीं, बल्कि मानवता के लिए आदर्श, मार्गदर्शक और नैतिक प्रशिक्षक के रूप में देखा जाता है।

सातवीं शताब्दी का अरब सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक दृष्टि से अनेक समस्याओं से घिरा हुआ था। जनजातीय संघर्ष, अंधविश्वास, स्त्रियों के प्रति भेदभाव, सामाजिक असमानता, शराब, जुआ और हिंसा जैसी बुराइयाँ व्याप्त थीं। ऐसे वातावरण में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने ज्ञान, नैतिकता और मानवता पर आधारित एक नई चेतना का संचार किया और लोगों के विश्वासों एवं ग़लत अक़ीदों में क्रांतिकारी बदलाव किया।

शिक्षा के क्षेत्र में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने सीखने और सिखाने की ऐसी संस्कृति विकसित की जिसमें ज्ञान को समाज की साझा संपत्ति माना गया। अन्य भाषाओं तथा नई तकनीक के सीखने को प्रोत्साहित किया गया। इसी का परिणाम था कि मध्य युग में मुस्लिम वैज्ञानिकों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण खोजें की गईं।

उन्हें बताया कि सारे जगत का स्रष्टा, पालनहार और मालिक एक अकेला अल्लाह है। इंसानों के मार्गदर्शन के लिए ईश्वर ने अपने दूत भेजे। सारे इंसानों को मरने के बाद ईश्वर के समक्ष उपस्थित होना है और अपने क्रियाकलापों का हिसाब देना है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित होने वाला पहला दिव्य संदेश था-"इक़रा" (पढ़ो)। यह तथ्य स्वयं इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम में ज्ञान और शिक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया गया। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बताया। सत्य बोलने, न्याय करने, वचन निभाने, ईमानदारी, करुणा और सहिष्णुता जैसे जीवन मूल्यों की भी शिक्षा दी। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अरब समाज के नैतिक उत्थान में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या और बालिकाओं को जीवित दफ़नाने जैसी अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया तथा महिलाओं को सम्मान, शिक्षा और संपत्ति के अधिकार प्रदान करने पर बल दिया। उन्होंने अनाथों, विधवाओं, ग़रीबों और कमज़ोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा को धार्मिक दायित्व बताया। इस प्रकार उन्होंने समाज में करुणा, समानता और सामाजिक न्याय की भावना को मज़बूत किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसके वंश, धन या जाति में नहीं, बल्कि उसके चरित्र और सदाचार में है।

शिक्षा के क्षेत्र में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने सीखने और सिखाने की ऐसी संस्कृति विकसित की जिसमें ज्ञान को समाज की साझा संपत्ति माना गया। अन्य भाषाओं तथा नई तकनीक के सीखने को प्रोत्साहित किया गया। इसी का परिणाम था कि मध्य युग में मुस्लिम वैज्ञानिकों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण खोजें की गईं। उन पर अवतरित कुरआन धार्मिक पुस्तक है परंतु उसमें मानव जीवन के सभी पहलूओं के संबंध में ऐसी बुनियादी शिक्षाएं तथा जानकारी / ज्ञान उपलब्ध है जिन पर चिंतन मनन करके मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने दर्शनशास्त्र,

विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र तथा कानून संबंधी विषयों पर बहुत ही महत्वपूर्ण शोध कार्य किया तथा हर विषय पर ऐसा साहित्य तैयार किया जिससे संपूर्ण मानवता को बहुत लाभ मिला।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने न केवल एक नए समाज की नींव रखी, बल्कि शिक्षा और मार्गदर्शक (Mentorship) के ऐसे मानदंड स्थापित किए जो आज चौदह सौ साल बाद भी आधुनिक शिक्षाशास्त्र (Modern Pedagogy) के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। वे केवल एक धार्मिक गुरु या नेता नहीं थे, बल्कि एक कुशल शिक्षक, मनोवैज्ञानिक मेंटर और सहानुभूति से भरे मार्गदर्शक थे। उन्होंने अरब के एक अत्यंत पिछड़े, अनपढ़ और हिंसक समाज को ज्ञान, नैतिकता और भाईचारे के वैश्विक केंद्र में बदल दिया।

शिक्षण शैली

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षण शैली केवल उपदेश देने तक सीमित नहीं थी। वे जानते थे कि किसी के दिल और दिमाग़ में बात कैसे उतारी जाती है। उनकी शिक्षण पद्धतियों में कुछ मुख्य विशेषताएं शामिल थीं :

सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग : वे हमेशा ऐसी भाषा बोलते थे जो सुनने वाले की बौद्धिक क्षमता के अनुकूल हो। वे बहुत तेज़ी से बात नहीं करते थे, बल्कि ठहर-ठहर कर बोलते थे ताकि लोग उनकी बात को पूरी तरह समझ सकें। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि वे अपनी महत्वपूर्ण बातों को तीन बार दोहराते थे ताकि सुनने वाले उसे कंठस्थ कर सकें।

उदाहरणों और उपमाओं का सहारा : अमूर्त (Abstract) विचारों को समझाने के लिए वे दैनिक जीवन के ठोस उदाहरणों का उपयोग करते थे। एक बार उन्होंने अपने साथियों से पूछा, "यदि किसी के घर के सामने एक नदी बहती हो और वह उसमें दिन में पांच बार स्नान करे, तो क्या उसके शरीर पर कोई मैल बचेगा?" साथियों ने कहा, "नहीं।" तब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा, "यही स्थिति पांच वक़्त की प्रार्थना (नमाज़) की है, जो इंसान के गुनाहों को धो देती है।

प्रश्न-उत्तर और जिज्ञासा तकनीक : वे अक्सर सीधे उत्तर देने के बजाय पहले एक सवाल पूछते थे ताकि शिक्षार्थी का ध्यान पूरी तरह आकर्षित हो जाए। जैसे, उन्होंने एक बार पूछा, "क्या तुम जानते हो कि असल में कंगाल (Bankrupt) कौन है?" जब साथियों ने आर्थिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति का नाम लिया, तो उन्होंने समझाया कि असल कंगाल वह है जिसके पास कर्म तो बहुत हों, लेकिन उसने दूसरों का दिल दुखाया हो।

“पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने न केवल एक नए समाज की नींव रखी, बल्कि शिक्षा और मार्गदर्शक (Mentorship) के ऐसे मानदंड स्थापित किए जो आज चौदह सौ साल बाद भी आधुनिक शिक्षाशास्त्र (Modern Pedagogy) के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। वे केवल एक धार्मिक गुरु या नेता नहीं थे, बल्कि एक कुशल शिक्षक, मनोवैज्ञानिक मेंटर और सहानुभूति से भरे मार्गदर्शक थे। उन्होंने अरब के एक अत्यंत पिछड़े, अनपढ़ और हिंसक समाज को ज्ञान, नैतिकता और भाईचारे के वैश्विक केंद्र में बदल दिया।”

एक बेहतरीन मेंटर

एक बेहतरीन मेंटर की सबसे बड़ी पहचान यह होती है कि वह अपने शिष्यों की छिपी हुई प्रतिभा को पहचानता है और उन्हें सही दिशा में तराशता है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) इस कला में निपुण थे। उन्होंने अपने हर साथी (सहाबा रज़ि.) की विशेष योग्यता को समझा और उन्हें उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

युवा नेतृत्व पर भरोसा : वे युवाओं की ऊर्जा और उनकी क्षमताओं पर गहरा विश्वास करते थे। उन्होंने मात्र 18-19 वर्ष के युवा ओसामा बिन ज़ैद को एक महत्वपूर्ण सैन्य अभियान का कमांडर नियुक्त किया, जिसमें कई बड़े और अनुभवी बुज़ुर्ग शामिल थे। यह इस बात का प्रमाण है कि एक मेंटर के रूप में वे योग्यता को उम्र से ऊपर रखते थे।

विशेषज्ञता को बढ़ावा देना : उन्होंने अपने साथियों को अलग-अलग क्षेत्रों में विशेषज्ञ बनने के लिए प्रेरित किया। जैसे, उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित को विदेशी भाषाएं सीखने

के लिए प्रेरित किया, जिससे वे राज्य के आधिकारिक अनुवादक और कूटनीतिज्ञ बने।

सुधारात्मक दृष्टिकोण

सिखाने पर ज़ोर : एक शिक्षक या मेंटर के रूप में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का दृष्टिकोण सुधारात्मक था, न कि दंडात्मक। जब कोई व्यक्ति ग़लती करता, तो वे उसे सबके सामने अपमानित करने के बजाय अकेले में या बहुत ही दयालुता के साथ समझाते थे।

आत्मसम्मान की रक्षा : जब भी उन्हें समाज की किसी आम बुराई को सुधारना होता, तो वे मंच से कभी किसी का नाम नहीं लेते थे। वे कहते थे, "कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वे ऐसा करते हैं..." इससे ग़लती करने वाले व्यक्ति को अपनी भूल का एहसास भी हो जाता था और समाज में उसका आत्मसम्मान (Self-respect) भी बच जाता था।

समान एवं समावेशी शिक्षा के प्रबल समर्थक

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के दौर में अरब समाज में महिलाओं, दासों और ग़रीबों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता था। उन्होंने इस व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया और शिक्षा को हर पुरुष और महिला के लिए अनिवार्य घोषित किया।

महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान : उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए सप्ताह में एक दिन विशेष रूप से निर्धारित किया था, जहां महिलाएं आकर उनसे सीधे सवाल पूछ सकती थीं। उनकी पत्नी हज़रत आयशा (रज़ि.) स्वयं एक महान शिक्षिका और न्यायविद बनीं, जिनसे बड़े-बड़े विद्वान जटिल क़ानूनी मामलों में सलाह लेते थे।

युद्ध के क़ैदियों से शिक्षा : बद्र के युद्ध के बाद, जो ग़ैर-मुस्लिम क़ैदी पढ़े-लिखे थे, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने उनकी रिहाई के लिए एक अनूठी शर्त रखी। उन्होंने कहा कि जो क़ैदी मदीना के दस बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखा देगा, उसे आज़ाद कर दिया जाएगा। यह इतिहास में शिक्षा के महत्व की सबसे बड़ी और अनोखी मिसाल है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का जीवन एक ऐसी कार्यशाला (Workshop) था, जिसने इंसानों के चरित्र का निर्माण किया। उन्होंने डराकर या ज़बरदस्ती करके नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा, तर्क और बेहतरीन मेंटरशिप के ज़रिए लोगों के दिलों को जीता। उनकी अनूठी शिक्षण पद्धतियों ने ही बंजर भूमि के चरवाहों को दार्शनिक, वैज्ञानिक और दुनिया का शासक बना दिया। आज के आधुनिक युग में भी यदि कोई शिक्षक, प्रोफ़ेसर या कॉर्पोरेट मेंटर सफलता के उच्चतम शिखर को छूना चाहता है, तो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के जीवन और उनके सिखाने के तौर-तरीक़ों में उसके लिए संपूर्ण मार्गदर्शन मौजूद है।

आचरण से सिखाना

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सबसे बड़ी ताक़त यह थी कि वे जो कुछ भी सिखाते थे, पहले स्वयं उस पर अमल करते थे। वे एक रोल मॉडल (Role Model) शिक्षक थे।

विनम्रता और सादगी : एक बार एक व्यक्ति उनसे मिलने आया और उनके प्रभाव के कारण कांपने लगा। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने उसे गले लगाया और कहा, "घबराओ मत, मैं कोई राजा नहीं हूँ। मैं तो सूखी हुई रोटियां खाने वाली एक साधारण महिला का बेटा हूं।

श्रम का सम्मान : मदीना में मस्जिद के निर्माण के समय या खंदक (Tranch) की खुदाई के समय, वे एक आम मज़दूर की तरह पत्थर और मिट्टी उठाते थे। उन्होंने सिखाया कि कोई भी काम छोटा नहीं होता।

वस्तुतः पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन एक ऐसी कार्यशाला (Workshop) था, जिसने इंसानों के चरित्र का निर्माण किया। उन्होंने डराकर या ज़बरदस्ती करके नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा, तर्क और बेहतरीन मेंटरशिप के ज़रिए लोगों के दिलों को जीता। उनकी अनूठी शिक्षण पद्धतियों ने ही बंजर भूमि के चरवाहों को दार्शनिक, वैज्ञानिक और दुनिया का शासक बना दिया। आज के आधुनिक युग में भी यदि कोई शिक्षक, प्रोफ़ेसर या कॉर्पोरेट मेंटर सफलता के उच्चतम शिखर को छूना चाहता है, तो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन और उनके सिखाने के तौर-तरीक़ों में उसके लिए संपूर्ण मार्गदर्शन मौजूद है। ■■

एक अपील, एक ऐलान और तआरुफ़

आपकी ख़ुसूसी तवज्जह का सब से ज़्यादा मुस्तहिक़

40 साल की ख़िदमात

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना गया



कैफ़ियते-क़ियाम : इदारा का तीन यतीम लड़कियों से 21 दिसम्बर 1986 को एक किराया के खपरैल मकान में क़ियाम अमल में आया था, जो कभी साँप, बिच्छू और चिड़ियों का बसेरा था—बक़ौल अल्लामा इक़बाल (रह.) "इश्क़ ने आबाद कर डाले हैं दश्त-ओ-कोहसार"

हिन्दुस्तान की रियासत बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा (ओडीशा) में अपने तर्ज़ की पहली और वाहिद इक़ामती दीनी व असरी उलूम की मशहूर तालीमगाहें (Residential) जो इस्लामी और असरी उलूम का संगम होने की वजह से मशहूर है। • इदारा बुनियाद के दिन से ही सही इस्लामी ख़ुतूत पर यतीम के साथ-साथ ग़रीब और ग़ैर-यतीम तालिबात की तालीमी व तर्बियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहां की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में पहले और दूसरे साल में बाआसानी दाख़िला मिल जाता है। • शोबा-ए-हिफ़्ज़ की तालिबा को भी हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक (Matric) तक पढ़ाया जाता है। • पांच ज़ुबानों में क़ुरआन और इस्लामियात और बिहार बोर्ड के निसाबे-तालीम के साथ मेयारी तालीम का नज़्म है। • **तालीमी साल** अप्रैल ता मार्च, • इदारा के अहाता (Campus) में ही पर्दे (Purdah) में रहकर नर्सरी (Nursery) से मैट्रिक (Matric) तक की तालीम, होम साइंस, उमोरे-ख़ानादारी, सिलाई-कटाई, मेहंदी व पेंटिंग और कम्प्यूटर की तालीम वग़ैरा दी जाती है। इसके लिए बच्चियों को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता। • **तालीमी मराहिल** • इब्तिदाई • सानवी • आला • फ़ासलाती तालीम • शोबा हिफ़्ज़ व नाज़रा **यतीम तालिबात की तादाद** 75 है। **नोट** यतीम तालिबात का सारा ख़र्च, तआम व क़ियाम व रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त (Free) है किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **बैरूनी तालिबात की तादाद** अपने ख़र्च पर दारुल अक़ामा (Boarding) में रहकर तालीम हासिल करने वाली और दूसरे गांव से पढ़कर जाने वाली लगभग 100 हैं। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम बच्ची का सालाना ख़र्च तीस हज़ार रुपये (Rs. 30,000) है। आप भी एक यतीम बच्ची की किफ़ालत की ज़िम्मेदारी लेकर सवाब में शरीक हों। **असातिज़ा, मुअल्लिमात और दीगर मुलाज़िमीन की तादाद** 33 है। एक माह की तनख़्वाह एक लाख अस्सी हज़ार रुपये (Rs. 1,80,000) से ज़्यादा है। **सालाना ख़र्च** तक़रीबन पैंतालिस लाख रुपये (Rs. 45,00,000)। **ज़रिया आमदनी** मुस्लिम अवाम के चंदे **अपील** आज के माद्दापरस्ताना (Materialistic) और जदीद दौर में लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़े-तालीम के साथ रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा बढ़कर ज़रूरत है। • आप इस आसमान छूती महंगाई को देखते हुए और माहे रमज़ानुल मुबारक वग़ैरह के मुबारक मौक़ा पर इदारे की नन्ही-मुन्नी मासूम यतीम बच्चियों को ऊंचा उठाने के लिए अपने • ज़कात • अतियात • सदक़ात से भरपूर माली मदद करें ताकि वे तालीम और हुनर के मैदान में आगे बढ़ सकें और किसी से पीछे न रहें। • बाक़ी तामीरी व तालीमी मन्सूबों को पूरा करने के लिए रक़म की फ़ौरी ज़रूरत है। • इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना भरपूर माली तआवुन का मुंतज़िर है। **याद रखें** यह लड़कियों का इदारा है। यहां चंदा वसूल करने वालों की बहुत कमी है। यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन (उजरत) पर चंदा वसूल नहीं किया करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत (Nazr-e-Enayeth) यू-ट्यूब (You Tube) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ़ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता

Founder & Hon. G. Secretary, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE,
At. : Kolowna, P.o : Cherki-824237, Distt. : Gaya (Bihar) India

Email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Mobile : 8969435151, Website : www.gmgo.in

Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE
Bank A/C No.: 300402010007752 (ज़कात/Zakath)
Bank A/C No.: 300402010009846 (डोनेशन/Donation)
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए-मेहरबानी स्कैन एंड पै (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) नाम व पता सहित व्हाट्स एप कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

व्हाट्स एप नम्बर 7367909126 बानी व इजाज़ी जनरल सेक्रेट्री इक़बाल अहमद ख़ां—9934480190
पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता करें।
जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सदर) समनपूरा, पटना, **मोबाइल : 9934943229**
जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, **मोबाइल : 9631867066**

शिक्षा के क्षेत्र में क़ुरआन का मार्गदर्शन

❖मुहम्मद शकील शम्सी

सड़क पर पड़ा हुआ पत्थर का एक टुकड़ा आने-जाने वालों की ठोकरें खाने के लिए अभिशप्त होता है। लेकिन वही पत्थर, यदि तराशकर सुंदर आकृति में ढाल दिया जाए, तो वह मूल्यवान बन जाता है और किसी घर के ड्रॉइंग रूम की शोभा बढ़ाता है। मनुष्य का भी कुछ ऐसा ही हाल है। शिक्षा से वंचित व्यक्ति सड़क पर पड़े पत्थर के समान होता है, जबकि शिक्षा ही उसे तराशकर ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करती है, जो न केवल स्वयं के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए उपयोगी और मूल्यवान बन जाता है। यही कारण है कि शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार कहा गया है।

इसी वजह से इस्लाम ने शिक्षा को अत्यंत महत्त्व दिया है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अवतरित होने वाला पहला शब्द ही था–"पढ़ो"। (क़ुरआन, 96:1) इसी प्रकार क़ुरआन स्पष्ट घोषणा करता है कि "क्या जानने वाले और न जानने वाले कभी समान हो सकते हैं?"

(क़ुरआन, 39:9)

ज्ञान प्राप्ति पर क़ुरआन द्वारा दिए गए इस विशेष बल का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम समाज में ज्ञान और अनुसंधान की एक व्यापक लहर उत्पन्न हुई। इस्लामी स्वर्ण युग (Islamic Golden Age) तथा उसके बाद विभिन्न मुस्लिम साम्राज्यों के दौर में शिक्षा और अनुसंधान के प्रति गहरी रुचि ने विज्ञान, चिकित्सा, गणित, दर्शन, खगोल विज्ञान तथा अनेक अन्य विषयों में अभूतपूर्व प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इस्लाम शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के समग्र विकास का पक्षधर है। उसका उद्देश्य केवल आध्यात्मिक या केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि दोनों का संतुलित और समन्वित विकास है। इस्लाम जहां आख़िरत (मृत्यु के बाद के जीवन) को अधिक महत्त्व देता है, वहीं यह भी सिखाता है कि मनुष्य इस संसार में भी अल्लाह की प्रदान की हुई नेमतों का उचित और संतुलित उपयोग करते हुए जीवन बिताए।

क़ुरआन कहता है–"ऐ आदम की संतान! हर इबादत के अवसर पर अपने आपको सुसज्जित रखो, खाओ और पियो, लेकिन सीमा का उल्लंघन न करो। निश्चय ही अल्लाह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसंद नहीं करता।"

(क़ुरआन, 7:32)

फिर उन लोगों की ग़लत धारणा का खंडन करते हुए, जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए संन्यास को आवश्यक समझते हैं, क़ुरआन कहता है–

"कहो, अल्लाह ने अपने बंदों के लिए जो शोभा और पाक-साफ़ रोज़ी पैदा की है, उसे किसने हराम कर दिया?"

(क़ुरआन, 7:31-32)

एक अन्य स्थान पर क़ुरआन स्पष्ट करता है–

"संन्यास (रहबानियत) हमने उन पर अनिवार्य नहीं किया था; यह तो उन्होंने स्वयं ही अपनी ओर से गढ़ लिया था।"

(क़ुरआन, 57:27)

इस प्रकार क़ुरआन शिक्षा को आध्यात्मिक और बौद्धिक; दोनों प्रकार की साधना मानता है। वह मनुष्य को ज्ञान अर्जित करने, चिंतन-मनन करने, ईश्वर की सृष्टि में निहित संकेतों पर विचार करने, प्रकृति के नियमों को समझने तथा उस ज्ञान का उपयोग अपने और समाज के कल्याण के लिए करने की प्रेरणा देता है। इतना ही नहीं, क़ुरआन ने विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं की ओर संकेत करते हुए उन पर विचार करने का आह्वान भी किया है।

क़ुरआन कहता है–"निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना में, तथा रात और दिन के परिवर्तन में बुद्धिमानों के लिए बड़ी निशानियां हैं; वे जो खड़े, बैठे और लेटे हर अवस्था में अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों तथा धरती की रचना

पर विचार करते हुए कहते हैं—'हे हमारे पालनहार! तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया। तू पाक है।" (क़ुरआन, 3:190–191)

मानव-भ्रूण के विकास की ओर संकेत करते हुए क़ुरआन कहता है–

"हमने मनुष्य को मिट्टी के सार से पैदा किया। फिर उसे एक सुरक्षित स्थान (गर्भाशय) में वीर्य-बिंदु के रूप में रखा। फिर उस वीर्य-बिंदु को जमे हुए लोथड़े में बदला, फिर उसे मांस के लोथड़े में, फिर उस लोथड़े से हड्डियां बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया। इसके बाद हमने उसे एक नई सृष्टि के रूप में उत्पन्न किया। अतः बड़ा ही बरकत वाला है अल्लाह, जो सबसे उत्तम सृष्टिकर्ता है।"

(क़ुरआन, 23:12-14)

यह आयत गर्भाधान से लेकर भ्रूण के क्रमिक विकास और पूर्ण मानव बनने तक की प्रक्रिया की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

इसी प्रकार क़ुरआन मनुष्य की उस उपेक्षा पर खेद प्रकट करता है कि वह ईश्वर की महान सृष्टियों पर गंभीरता से विचार नहीं करता। वह विभिन्न वैज्ञानिक विषयों की ओर संकेत करते हुए कहता है–

"क्या वे ऊंटों को नहीं देखते कि उन्हें कैसे पैदा किया गया? (प्राणी विज्ञान/Zoology)

और आकाश को नहीं देखते कि उसे कैसे ऊंचा उठाया गया? (खगोल विज्ञान/Astronomy)

और पर्वतों को नहीं देखते कि उन्हें कैसे दृढ़ता से स्थापित किया गया? (पर्वत विज्ञान/Orology)

और धरती को नहीं देखते कि उसे कैसे बिछाया गया?

(भूविज्ञान/Geology)

तो (हे नबी!) उन्हें समझाइए।" (क़ुरआन, 88:17-21)

ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं। क़ुरआन की अनेक अन्य आयतें समुद्र विज्ञान (Oceanography), मौसम विज्ञान (Meteorology) तथा अन्य अनेक वैज्ञानिक विषयों की ओर भी संकेत करती हैं। वास्तव में क़ुरआन में ऐसे अनेक संदर्भ मिलते हैं, जो विज्ञान, व्यापार एवं वाणिज्य, मानविकी तथा ज्ञान की अनेक शाखाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। इनमें से अनेक क्षेत्रों की गहराइयों तक मानव आज भी निरंतर पहुंचने का प्रयास कर रहा है।

उत्साहवर्धक प्रभाव

ज्ञान प्राप्ति पर क़ुरआन द्वारा दिए गए इस विशेष बल का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम समाज में ज्ञान और अनुसंधान की एक व्यापक लहर उत्पन्न हुई। इस्लामी स्वर्ण युग (Islamic Golden Age) तथा उसके बाद विभिन्न मुस्लिम साम्राज्यों के दौर में शिक्षा और अनुसंधान के प्रति गहरी रुचि ने विज्ञान, चिकित्सा, गणित, दर्शन, खगौल विज्ञान तथा अनेक अन्य विषयों में अभूतपूर्व प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

इस युग की विशेषता यह थी कि यूनानी, फ़ारसी और भारतीय ग्रंथों का बड़े पैमाने पर अनुवाद किया गया, शिक्षण एवं शोध संस्थानों की स्थापना हुई, और अनुभव, प्रयोग तथा अवलोकन पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति को प्रोत्साहन मिला। परिणामस्वरूप ज्ञान के अनेक नए आयाम विकसित हुए और मानव सभ्यता की प्रगति को नई दिशा प्राप्त हुई।

कुल मिलाकर, मुस्लिम इतिहास के उस दौर को, जिसमें वैज्ञानिक अनुसंधान, दार्शनिक चिंतन और मानविकी (Humanities) के विभिन्न क्षेत्रों को व्यापक विकास का अवसर मिला, मुख्यतः तीन कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है—अब्बासी काल, मुस्लिम स्पेन (अल-अंदलुस) और मुग़ल काल।

अब्बासी काल (750-1258 ई.)

अब्बासी शासन लगभग पांच शताब्दियों तक चला। इसकी राजधानी बग़दाद थी, जहां राज्य के संरक्षण में संगठित शोध एवं ज्ञान-विज्ञान की एक सुदृढ़ परंपरा विकसित हुई। अनेक इतिहासकार इस काल को इस्लामी इतिहास का स्वर्ण युग (Golden Age) मानते हैं, क्योंकि इसी दौर में शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

जब अब्बासी ख़लीफ़ाओं ने यह अनुभव किया कि ज्ञान और बुद्धिमत्ता ही समाज की उन्नति का आधार हैं, तब शिक्षा को राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल किया गया। इसी सोच के परिणामस्वरूप मध्यकाल के सबसे प्रसिद्ध ज्ञान-केंद्र बैतुल-हिक्मह (ज्ञान भवन/House of Wisdom) की स्थापना हुई।

यह संस्थान केवल एक विशाल पुस्तकालय ही नहीं था, बल्कि अनुवाद, शोध, अध्ययन और ज्ञान के आदान-प्रदान का विश्वविख्यात केंद्र भी था। यहां यूनानी, फ़ारसी और भारतीय सभ्यताओं के ग्रंथों का संरक्षण, अनुवाद और अध्ययन किया गया। इस प्रयास ने प्राचीन सभ्यताओं की बौद्धिक धरोहर को सुरक्षित रखा और आगे चलकर यूरोप

तक पहुंचाया, जहां उसी ज्ञान ने वैज्ञानिक और बौद्धिक पुनर्जागरण (Renaissance) की आधारशिला रखी। इस प्रकार बैतुल-हिक्मह इस्लामी इतिहास की सबसे उज्ज्वल उपलब्धियों में से एक बन गया।

इस काल में अनेक महान विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनमें से कुछ प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं–

अनुवाद आंदोलन (Translation Movement): बैतुल-हिक्मह के विद्वानों ने यूनानी, फ़ारसी और भारतीय ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया। इससे प्राचीन ज्ञान सुरक्षित रहा और आगे की वैज्ञानिक प्रगति का आधार तैयार हुआ।

बीजगणित (Algebra) का विकास : महान गणितज्ञ अल-ख़्वारिज़्मी ने बीजगणित को व्यवस्थित विज्ञान का रूप दिया। उन्होंने हिन्दू-अरबी अंक-पद्धति तथा शून्य (Zero) की अवधारणा को विकसित कर विश्व, विशेषकर पश्चिमी देशों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वैज्ञानिक पद्धति (Scientific Method) : इब्ने अल-हैसम (अल्हाज़ेन) ने प्रकाश-विज्ञान (Optics) और भौतिकी के क्षेत्र में प्रयोगों पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति की नींव रखी। उन्होंने यह सिद्धांत स्थापित किया कि किसी भी वैज्ञानिक परिकल्पना को बार-बार किए जा सकने वाले प्रयोगों द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए।

चिकित्सा विज्ञान का विकास : अल-राज़ी (रहेज़) और इब्ने-सीना (अविसेना) जैसे चिकित्सकों ने रोगों का व्यवस्थित वर्गीकरण किया, प्रारम्भिक सार्वजनिक अस्पतालों की स्थापना में योगदान दिया तथा चिकित्सा-विज्ञान पर ऐसे विश्वकोश तैयार किए, जो कई शताब्दियों तक मानक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में प्रयुक्त होते रहे। इब्ने-सीना ने यूनानी चिकित्सा-परंपरा को अपने चिकित्सकीय अनुभवों के साथ समन्वित कर चिकित्सा ज्ञान को नई दिशा प्रदान की।

मुस्लिम स्पेन (711-1492 ई.)

मुस्लिम शासन के अधीन स्पेन, जिसे अल-अंदलुस भी कहा जाता है, मध्यकालीन यूरोप तक वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान पहुंचाने का सबसे महत्वपूर्ण सेतु बना। शिक्षा, विज्ञान, कृषि, चिकित्सा और संस्कृति के क्षेत्र में यहां उल्लेखनीय उन्नति हुई।

मुस्लिम शासकों ने विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और विशाल पुस्तकालयों की स्थापना की। अनेक लैटिन ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया गया तथा शिक्षा को राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। इसके परिणामस्वरूप स्पेन में साक्षरता और बौद्धिक स्तर अत्यंत ऊंचा हो गया।

इस काल की कुछ प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं–

दार्शनिक पुनर्जागरण (Philosophical Revival) : महान दार्शनिक इब्ने-रुश्द (एवेरोएस) ने अरस्तू के ग्रंथों पर विस्तृत टीकाएं लिखीं तथा धर्म और तर्क के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उनके विचारों ने यूरोपीय पुनर्जागरण को गहरा प्रभाव दिया। इसी प्रकार अल-फ़ाराबी ने दर्शन, तर्कशास्त्र और राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में आधारभूत योगदान दिया।

कृषि क्रांति (Agricultural Green Revolution) : मुस्लिमों ने उन्नत सिंचाई व्यवस्था, नहरें, जलचक्र (Waterwheel) तथा नई कृषि तकनीकों का विकास किया। उन्होंने यूरोप में संतरा, नींबू, चावल, कपास और कठोर गेहूं जैसी अनेक नई फ़सलों का परिचय कराया, जिससे कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

शल्य चिकित्सा (Surgery) : कॉर्डोबा के प्रसिद्ध शल्य-चिकित्सक अल-ज़हरावी (अल्बुक़ासिस) ने अल-तसरीफ़ नामक विश्वविख्यात शल्य-चिकित्सा ग्रंथ की रचना की। इसमें उनके द्वारा विकसित दो सौ से अधिक शल्य-उपकरणों का चित्रात्मक विवरण तथा कैटगट (Catgut) टांकों सहित अनेक आधुनिक शल्य-प्रक्रियाओं का वर्णन मिलता है।

पुस्तकालय संस्कृति का विकास : शासक अल-हकम द्वितीय ने लाखों पांडुलिपियों वाला विशाल राजकीय पुस्तकालय स्थापित किया। इस बौद्धिक वातावरण में महिलाएं भी सुलेखक (Calligrapher), प्रतिलिपिकार (Copyist) और विदुषी (Scholar) के रूप में सक्रिय भूमिका निभाती थीं।

मुग़ल काल (1526-1857 ई.)

भारत में मुग़ल शासन के दौरान यूनानी चिकित्सा, धातुकर्म, खगोल विज्ञान, सिविल इंजीनियरिंग तथा वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हुए। मुग़लों ने किसी नई वैज्ञानिक परंपरा की शुरुआत करने के बजाय भारतीय (संस्कृत) गणितीय परंपरा तथा इस्लामी (फ़ारसी और अरबी) प्रेक्षण-आधारित वैज्ञानिक ज्ञान का सफल समन्वय किया।

इस काल की कुछ प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं–

खगोल विज्ञान का समन्वित विकास : मुग़ल खगोलविदों ने भारतीय गणितीय पद्धतियों और इस्लामी प्रेक्षण उपकरणों का समन्वय किया। दरबारी विद्वानों ने लगभग एक सौ ज़ीज़ (खगोलीय सारणियां) तैयार कीं तथा सम्राट हुमायूं ने दिल्ली के निकट अपना निजी वेधशाला (Observatory) भी स्थापित कराया।

उन्नत धातुकर्म (Advanced Metallurgy) : मुग़ल काल में धातु-निर्माण कला अत्यंत विकसित थी। कारीगरों ने बिना किसी जोड़ (Seam) के एक ही धातु से खोखले आकाशीय गोले (Celestial Globe) ढालने की अद्भुत तकनीक विकसित की। साथ ही विशाल तोपों और भारी कांस्य ढांचों के निर्माण में भी उन्होंने उच्च दक्षता प्राप्त की।

सिविल इंजीनियरिंग और जल प्रबंधन : मुग़ल वास्तुकारों ने बांधों, नहरों तथा फ़ारसी जलचक्रों (Persian Waterwheels) का विस्तृत जाल विकसित किया। इनसे शाही उद्यानों, क़िलों और नगरों के लिए प्रभावी जलापूर्ति सुनिश्चित की जाती थी।

यूनानी चिकित्सा : अरबी चिकित्सा परंपरा और भारतीय आयुर्वेद के समन्वय से यूनानी चिकित्सा-पद्धति को व्यापक रूप मिला। यह चिकित्सा प्रणाली आज भी दक्षिण एशिया के अनेक देशों में प्रचलित है।

इस्लामी स्वर्ण युग : ज्ञान और सभ्यता का उत्कर्ष

इस्लाम का स्वर्ण युग (Islamic Golden Age) इस्लामी इतिहास का वह दौर था, जब विज्ञान, समाज, संस्कृति, दर्शन, अर्थव्यवस्था और शिक्षा ने अभूतपूर्व उन्नति की। इस काल में विभिन्न नस्लों, भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों के विद्वान शांतिपूर्ण वातावरण में मिलकर कार्य करते थे। परिणामस्वरूप धार्मिक अध्ययन, दर्शन, जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, भौतिकी, भू-विज्ञान, खगोल विज्ञान, उद्योग, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कला, वास्तुकला, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र जैसे लगभग सभी क्षेत्रों में विश्वस्तरीय विद्वान और बहुविषयक प्रतिभाएं (Poly-maths) सामने आईं।

ज्ञान पर आधारित इस इस्लामी सभ्यता ने नस्ल, रंग, भौगोलिक सीमाओं और धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर विभिन्न संस्कृतियों को एक साझा बौद्धिक मंच पर एकत्र किया। यही इस्लाम की वास्तविक भावना भी है।

फिर ऐसा क्या हुआ?

आज सबसे महत्वपूर्ण और चिंताजनक प्रश्न यह है कि जिस मुस्लिम समाज ने विश्व को इतनी समृद्ध बौद्धिक विरासत दी, वह आधुनिक विश्व के बौद्धिक और वैज्ञानिक मानचित्र से लगभग ओझल क्यों हो गया? ऐसे कौन-से कारण थे, जिनकी वजह से मुसलमान ज्ञान और विज्ञान की उस राह से भटक गए, जहां कभी वे अग्रणी हुआ करते थे?

इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के अनुसार, इस्लामी स्वर्ण युग (लगभग तेरहवीं शताब्दी के बाद) के पश्चात अनेक मुस्लिम समाजों में शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में आई गिरावट किसी एक कारण से नहीं, बल्कि कई ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारणों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम थी। इनमें प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

बग़दाद का पतन (1258 ई.)

यह मुस्लिम बौद्धिक परंपरा के लिए पहला और सबसे बड़ा आघात था। मंगोलों ने बग़दाद पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। इसके साथ ही प्रसिद्ध बैतुल-हिक्मह (ज्ञान भवन / House of Wisdom) और उसके विशाल पुस्तकालय का भी विनाश हुआ। इस घटना में विज्ञान, दर्शन और चिकित्सा से संबंधित सदियों से संचित असंख्य दुर्लभ ग्रंथ नष्ट हो गए।

संरक्षण और आर्थिक सहायता का अभाव

अब्बासी ख़िलाफ़त के विघटन के बाद मुस्लिम साम्राज्य अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। परिणामस्वरूप बड़े स्तर पर वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रयोगशालाओं, अनुवाद-परियोजनाओं और शिक्षण संस्थानों को मिलने वाला केंद्रीय आर्थिक संरक्षण समाप्त हो गया।

बाद के औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक दौर में भी अधिकांश मुस्लिम-बहुल देशों को निरंकुश शासन, क्षेत्रीय संघर्षों और सीमित संसाधनों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसके कारण स्वतंत्र शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं के विकास के लिए पर्याप्त सार्वजनिक निवेश नहीं हो सका।

रिकॉन्क्विस्टा (स्पेन की पुनर्विजय)

स्पेन में ईसाई शासकों द्वारा मुस्लिम शासन को समाप्त करने के लिए लड़े गए लंबे युद्धों (Reconquista) के परिणामस्वरूप अल-अंदलुस का पतन हुआ। इससे कॉर्डोबा

और ग्रेनाडा जैसे विश्वविख्यात शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र मुस्लिम जगत के हाथ से निकल गए।

स्वतंत्र चिन्तन का सीमित होना

समय के साथ स्वतंत्र चिंतन और नवीन परिस्थितियों में इस्लामी सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या की परंपरा कमज़ोर पड़ती गई और उसकी जगह पूर्ववर्ती मतों के अनुसरण (तक़लीद) को अधिक महत्व मिलने लगा। संकट के दौर में सामाजिक स्थिरता बनाए रखने की दृष्टि से यह प्रवृत्ति बढ़ी, लेकिन इसके परिणामस्वरूप विधि और दर्शन के क्षेत्र में नए विचारों का विकास धीमा पड़ गया।

ज्ञान का विभाजन

धीरे-धीरे शिक्षा व्यवस्था में "धार्मिक ज्ञान" और "तार्किक अथवा लौकिक ज्ञान" के बीच स्पष्ट विभाजन होने लगा। मदरसों का पाठ्यक्रम मुख्यतः फ़िक़्ह (इस्लामी विधिशास्त्र) और धर्मशास्त्र तक सीमित होता गया, जबकि प्राकृतिक विज्ञानों और अन्य आधुनिक विषयों की उपेक्षा होने लगी।

परंपरावाद की प्रधानता

समय के साथ तर्कवादी दार्शनिकों और परंपरावादी धर्मशास्त्रियों के बीच होने वाली बौद्धिक बहसों का परिणाम प्रायः परंपरावादी दृष्टिकोण के पक्ष में गया। अत्यधिक तर्कवाद को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा, जिससे स्वतंत्र दार्शनिक चिंतन की गति प्रभावित हुई।

सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी कारण

धार्मिक ग्रंथों की शुद्धता बनाए रखने संबंधी आशंकाओं और कुछ प्रशासनिक कारणों से उस्मानी (ऑटोमन) साम्राज्य ने चल-अक्षर (Movable Type) वाले मुद्रण-यंत्र को व्यापक रूप से अपनाने में अठारहवीं शताब्दी तक विलंब किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वैज्ञानिक और शैक्षणिक साहित्य का बड़े पैमाने पर प्रसार अपेक्षाकृत धीमा रहा।

वैश्विक व्यापार मार्गों में परिवर्तन

यूरोपीय देशों द्वारा एशिया तक सीधे समुद्री मार्गों की खोज हो जाने से मध्य-पूर्व के पारंपरिक स्थलीय व्यापार मार्गों का महत्व घट गया। इससे प्रमुख इस्लामी साम्राज्यों की आर्थिक शक्ति कमज़ोर हुई और शिक्षा तथा अनुसंधान के संरक्षण पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

पश्चिमी उपनिवेशवाद का उदय

अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी के बीच यूरोपीय शक्तियों द्वारा अनेक मुस्लिम क्षेत्रों पर अधिकार कर लेने से वहां की पारंपरिक शैक्षणिक संस्थाएं, प्रशासनिक व्यवस्थाएं और स्थानीय बौद्धिक परंपराएं गंभीर रूप से प्रभावित हुईं। इससे स्वतंत्र ज्ञान-विकास की प्रक्रिया बाधित हुई।

फिर भी बौद्धिक परंपरा समाप्त नहीं हुई

यद्यपि उपर्युक्त कारणों से इस्लामी स्वर्ण युग के बाद अनेक मुस्लिम समाजों में शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान की गति धीमी पड़ गई, फिर भी इस्लामी बौद्धिक परंपरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। बाद की सदियों में भी अनेक महान विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इनमें तक़ी अल-दीन (1526–1585) उल्लेखनीय हैं, जो प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, अभियंता और आविष्कारक थे तथा जिन्होंने इस्तांबुल में एक प्रमुख वेधशाला की स्थापना की। अली क़ुश्जी (1403–1474) ने खगोल विज्ञान और गणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इब्ने-ख़ल्दून (1332–1406) ने इतिहास, इतिहास-दर्शन और समाजशास्त्र के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया।

इसी प्रकार फ़ख़रुद्दीन राज़ी (1150–1209), इमाम ग़ज़ाली (1058–1111) और अल्लामा मुहम्मद इक़बाल (1877–1938) ने दर्शन और इस्लामी चिंतन को नई दिशा दी। वहीं इब्ने-तैमिय्या (1263–1328), शाह वलीउल्लाह (1703–1762) तथा मौलाना अबुल आला मौदूदी (1903–1979) जैसे महान इस्लामी विद्वानों ने धर्मशास्त्र, इस्लामी क़ानून और शिक्षा के क्षेत्र में स्थायी योगदान दिया।

इन सभी विद्वानों का जीवन इस बात का प्रमाण है कि इस्लामी स्वर्ण युग के समाप्त होने के बाद भी मुस्लिम समाज में बौद्धिक जीवन निरंतर सक्रिय रहा। विशेष रूप से धर्मशास्त्र, विधि, इतिहास, दर्शन और शिक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य होते रहे, यद्यपि अनेक क्षेत्रों में वैज्ञानिक नवाचार की गति पहले की अपेक्षा धीमी हो गई थी।

खोई हुई बौद्धिक गरिमा की पुनर्प्राप्ति

यदि मुस्लिम समाज अपनी खोई हुई बौद्धिक श्रेष्ठता को पुनः प्राप्त करना चाहता है, तो उसके लिए व्यापक, दूरदर्शी और योजनाबद्ध पुनर्जागरण कार्यक्रम अपनाना आवश्यक है। अनेक इतिहासकारों और चिंतकों ने इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं, जिनका सार इस प्रकार है–

शिक्षा और अनुसंधान में व्यापक निवेश

ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण के लिए सुदृढ़

विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, प्रतिस्पर्धी शोध-अनुदानों (Research Grants) तथा शैक्षणिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। यही तत्व नवाचार (Innovation) और वैज्ञानिक प्रगति को प्रोत्साहित करते हैं।

विज्ञान, गणित, मानविकी और आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) पर आधारित उच्च-गुणवत्ता वाली प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालय शिक्षा किसी भी बौद्धिक पुनर्जागरण की आधारशिला है।

तुर्की, इंडोनेशिया तथा मध्य-पूर्व के मुस्लिम-बहुल देशों सहित अन्य मुस्लिम समाजों को मिलकर विभिन्न स्तरों के उच्च शिक्षण संस्थानों और शोध-केंद्रों की स्थापना में निवेश करना चाहिए। शिक्षा, अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग में दीर्घकालिक निवेश से वैज्ञानिक तथा बौद्धिक क्षमता को सुदृढ़ किया जा सकता है। इसके साथ ही स्थिर विधि-व्यवस्था, पारदर्शी शासन, शैक्षणिक संस्थानों की स्वतंत्रता और शोध के लिए निरंतर आर्थिक सहायता भी अत्यंत आवश्यक है।

मुस्लिम समाज का नया बौद्धिक उत्थान अतीत को ज्यों-का-त्यों दोहराने से नहीं आएगा, बल्कि ऐसा वातावरण तैयार करने से संभव होगा जहां शिक्षा, स्वतंत्र विचार, वैज्ञानिक अनुसंधान, नैतिक चिंतन और रचनात्मक समस्या-समाधान को समान रूप से प्रोत्साहन मिले।

शिक्षा में सुधार और स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा

धार्मिक तथा आधुनिक शिक्षा का समन्वय समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पारंपरिक मदरसों और आधुनिक विश्वविद्यालयों के बीच लंबे समय से बना हुआ विभाजन मुस्लिम समाज के बौद्धिक विकास में बाधक रहा है।

समकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए योग्य विद्वानों को नए प्रश्नों पर स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। केवल पुराने फ़ैसलों की पुनरावृत्ति करने के बजाय बदलती परिस्थितियों के अनुरूप नए समाधान खोजने की आवश्यकता है।

आधुनिक चुनौतियों का सकारात्मक सामना

मुस्लिम समाज को लोकतंत्र, मानवाधिकार, बहुलतावाद, विज्ञान और वैश्वीकरण जैसे समकालीन विषयों पर गंभीर अध्ययन और शोध के आधार पर विचार करना चाहिए। न तो आधुनिक विचारों को बिना सोचे-समझे अस्वीकार करना उचित है और न ही उन्हें बिना विवेक के स्वीकार कर लेना।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति समाज में जागरूकता और सहभागिता बढ़ाने से ऐसा वातावरण तैयार होगा, जो खोज, अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करेगा।

आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहन

इस्लाम मनुष्य को चिंतन (तफ़क्कुर), मनन, अध्ययन और ज्ञानार्जन की प्रेरणा देता है। यदि आलोचनात्मक विचार-विमर्श ज़िम्मेदारी और संतुलन के साथ किया जाए, तो वह इस्लामी शिक्षाओं के पूर्णतः अनुकूल है।

इस्लामी इतिहास के अनेक महान विद्वानों ने धर्मशास्त्र के साथ-साथ दर्शन, तर्कशास्त्र, गणित और प्राकृतिक विज्ञानों का भी गहन अध्ययन किया था। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रमाण-आधारित तर्क, खुली बौद्धिक चर्चा और गंभीर बहस की संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अन्य धर्मों और विचारधाराओं से संवाद

इस्लाम के विभिन्न विचार-प्रवाहों के बीच तथा मुसलमानों और अन्य धर्मों के अनुयायियों के बीच रचनात्मक संवाद सह-अस्तित्व और परस्पर समझ का आधार है। ऐसा संवाद समाज में सौहार्द बढ़ाने के साथ-साथ विचारों के आदान-प्रदान और बौद्धिक विकास का भी माध्यम बनता है।

बौद्धिक प्रगति टकराव और ध्रुवीकरण से नहीं, बल्कि सम्मानजनक संवाद और सहयोग से अधिक सशक्त होती है।

अनुकूल बौद्धिक वातावरण का निर्माण

मुस्लिम समाज का नया बौद्धिक उत्थान अतीत को ज्यों-का-त्यों दोहराने से नहीं आएगा, बल्कि ऐसा वातावरण तैयार करने से संभव होगा जहां शिक्षा, स्वतंत्र विचार, वैज्ञानिक अनुसंधान, नैतिक चिंतन और रचनात्मक समस्या-समाधान को समान रूप से प्रोत्साहन मिले।

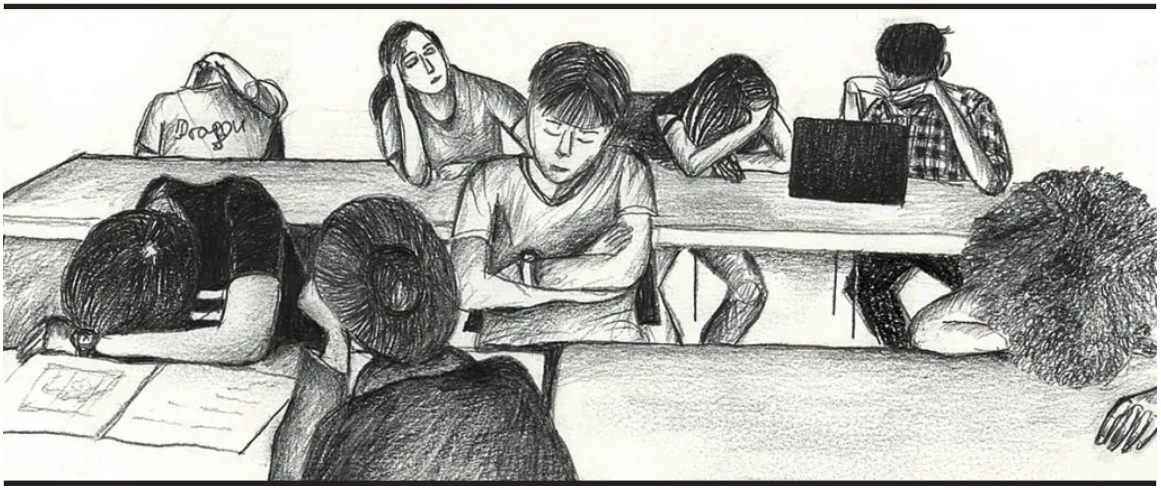
यदि इन दिशाओं में गंभीर, संगठित और दीर्घकालिक प्रयास किए जाएं, तो यही प्रयास मुस्लिम समाज की खोई हुई बौद्धिक गरिमा और ज्ञान-नेतृत्व को पुनः स्थापित करने की एक नई शुरुआत सिद्ध हो सकते हैं। ■■

विशेष आयोजन

फ़ेल होती परीक्षाएं, गुम होती अकादमिक श्रेष्ठताएं

❖सुफ़ियान अहमद

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि हमारे यहां वास्तव में शिक्षा व्यवस्था नहीं, परीक्षा व्यवस्था विकसित हुई है। विद्यार्थी ने क्या पढ़ा, कितना समझा, उसमें कितना विवेक, कौशल और मौलिक चिंतन विकसित हुआ; ये प्रश्न गौण हो गए हैं। योग्यता की असली कसौटी तीन घंटे की परीक्षा और उसमें प्राप्त अंक बनकर रह गई है। जो परीक्षा पास कर लेता है, वही योग्य और विद्वान मान लिया जाता है। परिणामस्वरूप शिक्षा परीक्षाएं प्रश्नपत्र लीक, संगठित नक़ल, तकनीकी गड़बड़ियों और प्रशासनिक अव्यवस्था के कारण विवादों में रही हैं। नीट और यूजीसी-नेट जैसे मामलों ने यह स्पष्ट कर दिया कि समस्या किसी एक राज्य या संस्था तक सीमित नहीं है। जब लाखों अभ्यर्थियों को परीक्षा दोबारा देनी पड़े या परिणामों पर ही प्रश्नचिह्न लग जाए, तो केवल समय और धन की हानि नहीं होती, बल्कि पूरी परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है। यही कारण है कि आज युवाओं में व्यवस्था के प्रति असंतोष बढ़ रहा है।



का पूरा ढांचा ज्ञान-केंद्रित होने के बजाय परीक्षा-केंद्रित हो गया है।

माध्यमिक शिक्षा पूरी होते-होते अधिकांश विद्यार्थी अपने भविष्य की दिशा तय कर लेते हैं। कोई शिक्षक बनना चाहता है, कोई डॉक्टर, इंजीनियर, जज, प्रशासनिक अधिकारी, सैनिक या चार्टर्ड अकाउंटेंट। इन सभी क्षेत्रों में प्रवेश का आधार प्रतियोगी परीक्षाएं हैं। इसलिए इन परीक्षाओं की विश्वसनीयता केवल चयन प्रक्रिया का प्रश्न नहीं, बल्कि देश की भावी प्रतिभाओं और संस्थागत गुणवत्ता का प्रश्न भी है। दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में यही व्यवस्था सबसे अधिक संदेह के घेरे में रही है।

राष्ट्रीय और राज्य स्तर की अनेक प्रवेश एवं भर्ती

लेकिन प्रश्नपत्र लीक की घटनाएं केवल प्रशासनिक विफलता नहीं है। वे शिक्षा के भीतर गहराई तक पैठ बना चुकी उस मानसिकता का परिणाम भी हैं, जिसमें किसी भी क़ीमत पर सफलता प्राप्त करना स्वीकार्य होता जा रहा है। समाज का एक वर्ग परीक्षा को ज्ञान की कसौटी नहीं, बल्कि किसी भी तरह पार कर लेने वाली बाधा मानने लगा है। जब ईमानदार परिश्रम के स्थान पर शॉर्टकट, नक़ल और धनबल को महत्त्व मिलने लगे, तो शिक्षा का नैतिक आधार स्वतः कमज़ोर पड़ जाता है।

इस संकट की जड़ें हमारी परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में हैं। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का पूरा ज़ोर पाठ्यक्रम को समझाने से अधिक परीक्षा की तैयारी कराने पर है।

विद्यार्थी विषय की गहराई में जाने के बजाय संभावित प्रश्नों, नोट्स और कोचिंग सामग्री पर निर्भर होते जा रहे हैं। सीखने की जिज्ञासा, स्वतंत्र चिंतन और बौद्धिक संवाद की जगह अंक, रैंक और कट-ऑफ़ ने ले ली है।

इसका दूसरा दुष्परिणाम अकादमिक गुणवत्ता के रूप में सामने आया है। आज बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च कक्षाओं तक पहुंचने के बाद भी अपेक्षित स्तर की भाषा और गणितीय दक्षता विकसित नहीं कर पाते। उच्च शिक्षा की स्थिति भी बहुत संतोषजनक नहीं है। डिग्रियां बढ़ रही हैं, लेकिन ज्ञान और कौशल उसी अनुपात में नहीं बढ़ रहे। अनेक स्नातक रोज़गार बाज़ार की अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार नहीं होते। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का पूरा तंत्र निजी कोचिंग उद्योग के हाथों में पहुंच चुका है, जहां शिक्षा भी धीरे-धीरे एक महंगे व्यवसाय का रूप लेती जा रही है।

विश्वविद्यालयों में भी स्थिति चिंता का विषय है। ज्ञान-सृजन और मौलिक शोध के केंद्र बनने के बजाय अनेक संस्थान केवल डिग्री प्रदान करने तक सीमित होते जा रहे हैं। शोध की गुणवत्ता, शैक्षणिक ईमानदारी और अकादमिक उत्कृष्टता पर लगातार प्रश्न उठ रहे हैं। नक़ल, औपचारिक शोध और खानापूरी वाले शोध-प्रबंधों ने उच्च शिक्षा की विश्वसनीयता को गहरा आघात पहुंचाया है। यदि विश्वविद्यालयों से निकलने वाला विद्यार्थी अपनी भाषा, विषय और विचार; तीनों पर पर्याप्त अधिकार विकसित नहीं कर पाता, तो यह केवल उसकी नहीं, पूरी शिक्षा व्यवस्था की विफलता है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि हमारे यहां वास्तव में शिक्षा व्यवस्था नहीं, परीक्षा व्यवस्था विकसित हुई है। विद्यार्थी ने क्या पढ़ा, कितना समझा, उसमें कितना विवेक, कौशल और मौलिक चिंतन विकसित हुआ; ये प्रश्न गौण हो गए हैं। योग्यता की असली कसौटी तीन घंटे की परीक्षा और उसमें प्राप्त अंक बनकर रह गई है। जो परीक्षा पास कर लेता है, वही योग्य और विद्वान मान लिया जाता है। परिणामस्वरूप शिक्षा का पूरा ढांचा ज्ञान-केंद्रित होने के बजाय परीक्षा-केंद्रित हो गया है।

समझ एवं कौशल आधारित मूल्यांकन का संकट

आज दुनिया भर में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है जो समस्याओं का समाधान कर सकें, नए विचार विकसित कर सकें और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्वचालन और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में केवल रटकर परीक्षा पास कर लेना पर्याप्त नहीं है। फिर भी हमारी परीक्षा प्रणाली अभी भी मुख्यतः स्मरण-शक्ति को परखती है, समझ और सृजनात्मकता को नहीं।

हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अवधारणात्मक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और कौशल-आधारित अधिगम पर विशेष बल दिया है, किंतु विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इसका प्रभाव अभी सीमित दिखाई देता है। अधिकांश संस्थानों में मूल्यांकन का आधार आज भी वार्षिक या प्रतियोगी परीक्षा ही है। परिणाम यह है कि विद्यार्थी उत्तर याद करने में अधिक समय लगाते हैं, जबकि विश्लेषण, शोध और प्रयोग की प्रवृत्ति कमज़ोर होती जाती है।

यही कारण है कि बड़ी संख्या में डिग्रीधारी युवा रोज़गार के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल से वंचित रह जाते हैं। शिक्षा और रोज़गार के बीच यह बढ़ती दूरी हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय है। विश्वविद्यालयों को केवल डिग्री देने वाले संस्थान नहीं, बल्कि ज्ञान-सृजन, नवाचार और शोध के केंद्र बनना होगा।

मानसिक दबाव और अनिश्चित भविष्य

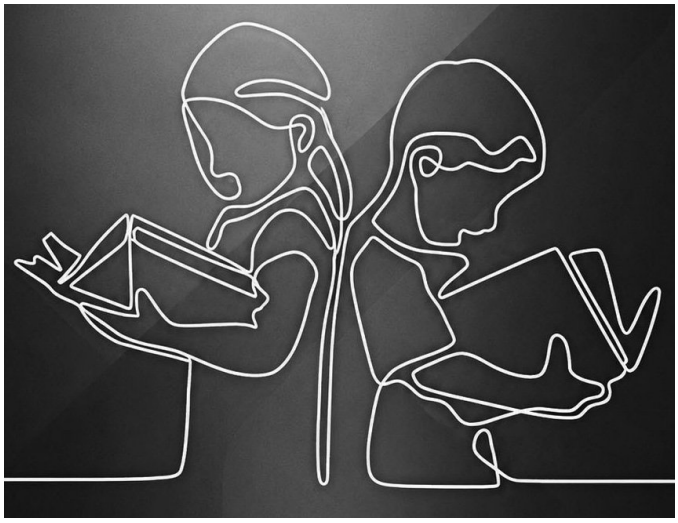
परीक्षा प्रणाली की अव्यवस्था का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। लाखों युवा वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हैं, परिवार अपनी सामर्थ्य से अधिक संसाधन उनकी शिक्षा पर ख़र्च करता है, और पूरा भविष्य एक परीक्षा से जुड़ जाता है। ऐसे में यदि परीक्षा रद्द हो जाए, प्रश्नपत्र लीक हो जाए या भर्ती प्रक्रिया वर्षों तक लंबित

रहे, तो केवल समय ही नष्ट नहीं होता, बल्कि युवाओं का आत्मविश्वास भी टूट जाता है।

अंक, रैंक और कट-ऑफ़ की अंधी दौड़ ने इस तनाव को और बढ़ा दिया है। सफलता की परिभाषा इतनी संकीर्ण हो गई है कि कुछ अंकों का अंतर भी जीवन की दिशा बदल देता है। असफलता को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा मानने के बजाय उसे जीवन की अंतिम हार समझ लिया जाता है। यह स्थिति शिक्षा के मूल उद्देश्य के विपरीत है।

परीक्षा सुधार : केवल क़ानून नहीं, समग्र परिवर्तन की आवश्यकता

हाल के वर्षों में सार्वजनिक परीक्षाओं में धांधली रोकने के लिए कठोर क़ानूनी प्रावधान किए गए हैं। यह स्वागतयोग्य क़दम है, किंतु समस्या का समाधान केवल क़ानूनों से नहीं होगा। परीक्षा आयोजन की पूरी प्रक्रिया को आधुनिक तकनीक, पारदर्शिता और जवाबदेही पर आधारित बनाना होगा। प्रश्नपत्रों की डिजिटल सुरक्षा, बहु-स्तरीय निगरानी, समयबद्ध मूल्यांकन और त्वरित शिकायत-निवारण जैसी व्यवस्थाएं अनिवार्य बनानी होंगी।



इसके साथ ही मूल्यांकन की पद्धति में भी व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता है। केवल तीन घंटे की परीक्षा किसी विद्यार्थी की संपूर्ण क्षमता का आकलन नहीं कर सकती। परियोजना-आधारित अध्ययन, प्रयोगात्मक कार्य, शोध, प्रस्तुतीकरण, समूह-कार्य और सतत मूल्यांकन को परीक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी केवल अंक प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि वास्तविक अर्थों में सीखने के लिए प्रेरित होंगे।

शिक्षा पर सार्वजनिक निवेश भी बढ़ाना होगा। वर्षों से यह प्रश्न उठता रहा है कि शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का अपेक्षित अनुपात अभी भी ख़र्च नहीं हो पा रहा है। गुणवत्तापूर्ण विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक, आधुनिक प्रयोगशालाएं, समृद्ध पुस्तकालय और शोध के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराए बिना अकादमिक उत्कृष्टता की कल्पना नहीं की जा सकती।

अकादमिक श्रेष्ठता की स्थापना

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी के लिए उम्मीदवार तैयार करना नहीं, बल्कि जागरूक, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक तैयार करना है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों को ज्ञान, शोध, चरित्र-निर्माण और बौद्धिक स्वतंत्रता का केंद्र बनाना होगा। शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने वाला कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज-निर्माता के रूप में देखना होगा। शोध में मौलिकता, अकादमिक ईमानदारी और उत्कृष्टता को संस्थागत संस्कृति का हिस्सा बनाना होगा।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान लागू होने के अवसर पर कहा था कि किसी भी व्यवस्था की सफलता अंततः उसे संचालित करने वाले लोगों के चरित्र और क्षमता पर निर्भर करती है। यही बात शिक्षा व्यवस्था पर भी लागू होती है। सर्वोत्तम नीतियां भी तब तक सफल नहीं हो सकतीं, जब तक उन्हें ईमानदारी, दक्षता और उत्तरदायित्व के साथ लागू न किया जाए।

भारत आज विश्व की सबसे युवा आबादी वाले देशों में है। यह हमारी सबसे बड़ी शक्ति भी है और सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी भी। प्रश्नपत्र लीक, नक़ल और तकनीकी अव्यवस्थाएं एक ऐसे गहरे संकट की अभिव्यक्ति हैं, जिसमें शिक्षा का मूल उद्देश्य कहीं पीछे छूट गया है।

यदि हमारी परीक्षा व्यवस्था निष्पक्ष, पारदर्शी और विश्वसनीय होगी, यदि विद्यालय और विश्वविद्यालय अकादमिक उत्कृष्टता के वास्तविक केंद्र बनेंगे, यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक नहीं बल्कि ज्ञान, कौशल, चरित्र और नवाचार होगा, तभी हम भविष्य के भारत की मज़बूत बुनियाद रख सकेंगे। ■■

ग़ज़ल

• 'क़मर' रामनगरी •

हृदय की कालिमा तू काश उसकी देख सके
वो जिसका मुखड़ा दमकता गुलाब है प्यारे
वो जिसके पास तिजोरी में चन्द सिक्के हैं
भ्रष्ट हो के भी 'आली जनाब' है प्यारे
धनी थे कल जो भिखारी दिखाई देते हैं
ज़माने का भी अजब इंक़िलाब है प्यारे
ख़ुदा के सामने देखोगे उसको कल बेबस
वो जिसका आज बड़ा रोबोदाब है प्यारे
है अपनी-अपनी पड़ी चिन्ता इस तरह सबको
कि जैसे आज ही रोज़े हिसाब[1] है प्यारे
वो कौन-सी है बुराई जो आज इसमें नहीं
समाज की बड़ी हालत ख़राब है प्यारे
जो धैर्य, सत्यता, संयम, सदाचरण, अपनाए
प्रभु के भक्तों में वो लाजवाब है प्यारे
ना उसमें पाओगे कल तुम तनिक भी आकर्षण
वो जिसमें आज बड़ी आबोताब है प्यारे
नहीं भरोसा कोई इसका एक क्षण के लिए
ये अपनी ज़िन्दगी मानो हबाब[2] है प्यारे
लगाना हाथ न तुम भूले से कभी इसको
हर एक बुराई की जड़ बस शराब है प्यारे
है सौन्दर्य से परिपूर्ण कितना ये संसार
जो देखा ध्यान से ये एक सराब[3] है प्यारे
सभी बिगाड़ों का है इसमें 'अचूक' इलाज
जो तेरे पास ख़ुदा की किताब[4] है प्यारे
जो आया जग में 'नराशंस' की उपाधि लिए
कहां उस अंतिम नबी का जवाब है प्यारे !

---

1. रोज़े हिसाब-प्रलय दिवस, 2. हबाब-बुलबुला, 3. सराब-मृग-मरीचिका, 4. ख़ुदा की किताब-क़ुरआन

ग़ज़ल

• ज़हीर ललितपुरी •

एआई जेन-ज़ी का ज़माना है साथियो
इसको तबाहियों से बचाना है साथियो
फ़्यूचर हैं नौजवान हमारे समाज का
उनको भी सीधी राह दिखाना है साथियो
निकले हैं नौजवान जो सच की तलाश में
गुमराह रहबरों से बचाना है साथियो
हालात का तक़ाज़ा है दौरे-जदीद में
इन्सानियत का पाठ पढ़ाना है साथियो
बच्चे जवान बूढ़े ग़रीब और नातवां
इंसाफ़ हर किसी को दिलाना है साथियो
दुश्मन भी हमसफ़र हो अगर हक़ की राह में
उसका भी हमको साथ निभाना है साथियो
आपस में कोई इनको लड़ाये न इसलिए
नफ़रत से जेन-ज़ी को बचाना है साथियो
उम्मीद टूट जाए न फ़स्ले-बहार की
मायूस दिल में जोश उगाना है साथियो
पैग़ाम ये ज़हीर ज़माने को दीजिए
दुनिया को ख़ुशगवार बनाना है साथियो।

प्रिय पाठको!

'कान्ति' मासिक का यह अंक आपकी सेवा में सादर प्रस्तुत है, पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे। कृपया अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। –संपादक

लोकतंत्र को संदेश और मीडिया को रियलिटी चेक दे गया Gen Z आंदोलन



❖सुफ़ियान अहमद

जंतर-मंतर पर पेपर लीक के ख़िलाफ़ हुआ आंदोलन केवल एक विरोध-प्रदर्शन नहीं था। यह लोकतंत्र के चारों स्तंभों; विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया के लिए एक तरह का 'रियलिटी चेक' था, जिसे Gen Z ने अपने अंदाज़ में पेश किया। इस आंदोलन ने न केवल युवाओं की नाराज़गी या उनकी ताक़त का प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज की पीढ़ी किसी भी संस्था को उसकी परंपरागत प्रतिष्ठा के आधार पर नहीं, बल्कि उसके वर्तमान आचरण और जवाबदेही के आधार पर परखती है। यदि किसी संस्था की 'छवि' उसकी नज़र में नकारात्मक होने लगे, तो वह उसे 'अनफॉलो' करने में अधिक समय नहीं लगाती।

डिजिटल दौर में पली-बढ़ी यह पीढ़ी केवल दर्शक नहीं है। वह हर घटना को देखती है, समझती है, रिकॉर्ड करती है और उस पर अपनी राय भी बनाती है। उसके लिए लोकतंत्र केवल पांच साल में एक बार मतदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निरंतर संवाद, सवाल और जवाबदेही की प्रक्रिया है। यही कारण है कि जंतर-मंतर का आंदोलन एक सामाजिक या छात्र आंदोलन से आगे बढ़कर लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली पर भी टिप्पणी बन गया।

बदलना होगा यह सियासी खेल

इस आंदोलन का सबसे बड़ा संदेश विधायिका के लिए था। Gen Z ने स्पष्ट कर दिया कि राजनीति केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं हो सकती। चुनाव समाप्त होने के बाद भी जनता सवाल पूछेगी, सरकार के फ़ैसलों की समीक्षा करेगी और नीतियों पर अपनी राय रखेगी। आज का युवा केवल चुनावी भाषणों या नारों से संतुष्ट नहीं होता। वह तथ्यों, पारदर्शिता और जवाबदेही की अपेक्षा करता है।

सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को और तेज़ कर दिया है। पहले राजनीतिक संवाद मुख्यतः सभाओं, प्रेस कॉन्फ्रेंसों और अख़बारों तक सीमित रहता था, लेकिन अब फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब और अन्य डिजिटल मंच भी लोकतांत्रिक विमर्श के प्रमुख माध्यम बन चुके हैं। Gen Z

की भाषा में कहें तो उसका संदेश साफ़ है—"No Cap", यानी दावे नहीं, सच्चाई चाहिए। केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि परिणाम दिखाई देना चाहिए।

युवाओं ने यह भी संकेत दिया कि वे किसी भी राजनीतिक दल के स्थायी समर्थक नहीं हैं। वे मुद्दों के आधार पर समर्थन और विरोध दोनों कर सकते हैं। इसलिए लोकतांत्रिक राजनीति को भी बदलते समय के अनुरूप अधिक संवादशील, पारदर्शी और उत्तरदायी बनना होगा।

कार्यपालिका के लिए भी स्पष्ट संदेश

लोकतंत्र के दूसरे स्तंभ, अर्थात् कार्यपालिका के लिए भी इस आंदोलन में महत्वपूर्ण संदेश छिपा था। युवाओं ने दिखाया कि केवल सरकारी आदेश, बैरिकेड या पुलिस बल की मौजूदगी से उनकी आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता। संसद मार्च के दौरान लाठीचार्ज और आंसू गैस के बीच भी अनेक युवा अपने मोबाइल कैमरे चालू रखे हुए थे। वे केवल प्रदर्शन नहीं कर रहे थे, बल्कि घटनाओं का दस्तावेज़ भी तैयार कर रहे थे।

इस पूरे आंदोलन में यदि किसी संस्था को सबसे अधिक आत्म-मंथन की आवश्यकता है, तो वह मीडिया है। आंदोलन के दौरान कई ग्राउंड रिपोर्टरों के साथ बदसलूकी हुई। अनेक पत्रकारों को केवल इसलिए विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि वे ऐसे मीडिया संस्थानों से जुड़े थे, जिन पर आंदोलनकारी भरोसा नहीं करते थे। किसी भी लोकतांत्रिक आंदोलन में पत्रकारों के साथ ऐसा व्यवहार उचित नहीं कहा जा सकता। मंच से भी बार-बार अपील की जाती रही कि मीडिया या पुलिस के प्रति हिंसक व्यवहार न किया जाए।

आज हर स्मार्टफ़ोन एक कैमरा ही नहीं, बल्कि एक संभावित न्यूज़रूम भी है। घटनाएं कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच जाती हैं। यही कारण है कि प्रशासन के हर क़दम पर पहले से कहीं अधिक सार्वजनिक निगरानी रहती है।

इस आंदोलन में विरोध का तरीक़ा भी अलग दिखाई दिया। कहीं एक छात्र मुस्कुराते हुए पुलिसकर्मी को फूल देकर पूछ रहा था, "अंकल, लाठीचार्ज कब करोगे?" तो कहीं छात्राएं पुलिसकर्मियों के साथ खड़ी होकर रील बना रही थीं, जिसकी पृष्ठभूमि में गीत चल रहा था—"Everybody knows I'm a good girl, officer." यह दृश्य बताता है कि नई पीढ़ी विरोध को केवल नारों और भाषणों तक सीमित नहीं रखती, बल्कि अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और डिजिटल भाषा के माध्यम से भी दर्ज करती है।

यह विरोध पारंपरिक आंदोलनों से अलग था। इसमें हास्य था, व्यंग्य था, डिजिटल संचार था और कैमरे की मौजूदगी से पैदा हुई जवाबदेही भी थी।

न्यायपालिका के सामने भी कुछ प्रश्न

इस आंदोलन ने न्यायपालिका के सामने भी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न छोड़े। जिस टिप्पणी से यह पूरा विवाद शुरू हुआ, उसने यह याद दिलाया कि सार्वजनिक जीवन में शब्दों की संवेदनशीलता कितनी महत्त्वपूर्ण होती है। न्यायपालिका लोकतंत्र की सबसे विश्वसनीय संस्थाओं में गिनी जाती है। इसलिए उससे जुड़े प्रत्येक कथन और टिप्पणी का व्यापक सामाजिक प्रभाव पड़ता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि न्यायपालिका की आलोचना की जाए, बल्कि यह समझना आवश्यक है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक संस्था की तरह उससे भी संवाद, संवेदनशीलता और सार्वजनिक विश्वास की अपेक्षा रहती है। यही लोकतंत्र की आत्मा है।

सबसे कठिन सवाल मीडिया के सामने

इस पूरे आंदोलन में यदि किसी संस्था को सबसे अधिक आत्म-मंथन की आवश्यकता है, तो वह मीडिया है। आंदोलन के दौरान कई ग्राउंड रिपोर्टरों के साथ बदसलूकी हुई। अनेक पत्रकारों को केवल इसलिए विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि वे ऐसे मीडिया संस्थानों से जुड़े थे, जिन पर आंदोलनकारी भरोसा नहीं करते थे। किसी भी लोकतांत्रिक आंदोलन में पत्रकारों के साथ ऐसा व्यवहार उचित नहीं कहा जा सकता। मंच से भी बार-बार अपील की जाती रही कि मीडिया या पुलिस के प्रति हिंसक व्यवहार न किया जाए।

लेकिन इस घटना का एक दूसरा पक्ष भी है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। किसान आंदोलन की तरह इस बार भी कुछ पत्रकारों को अपनी संस्थागत पहचान छिपाकर रिपोर्टिंग करनी पड़ी। यह स्थिति किसी भी लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। जब पत्रकार अपनी पहचान छिपाने को विवश हों, तो इसका अर्थ केवल सुरक्षा का प्रश्न नहीं होता, बल्कि यह भी होता है कि मीडिया और समाज के बीच भरोसे का रिश्ता टूट चुका है।

यही सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। यदि नई पीढ़ी किसी मीडिया संस्थान पर भरोसा नहीं कर रही, तो क्या केवल उसे दोष देकर समस्या हल हो जाएगी? शायद नहीं। यह आत्मनिरीक्षण का समय है। मीडिया को स्वयं से पूछना होगा कि क्या वह वास्तव में जनता की आवाज़ बन पा रहा है? क्या उसकी प्राथमिकताएं जनसरोकारों से तय होती हैं या टीआरपी, क्लिक, वायरल सामग्री या कहीं और से? क्या हर पक्ष को समान अवसर मिलता है? क्या ख़बर और विचार की सीमाएं स्पष्ट हैं? क्या दर्शकों को निष्पक्षता का अनुभव होता है?

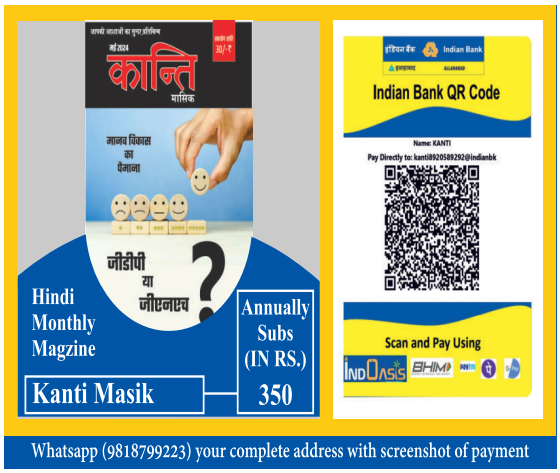
आज सूचना का एकाधिकार मीडिया के पास नहीं है। हर हाथ में मोबाइल है और हर सोशल मीडिया अकाउंट एक वैकल्पिक मंच बन चुका है। कोई भी घटना कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच सकती है। ऐसे समय में पेशेवर पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताक़त उसकी गति नहीं, बल्कि उसकी विश्वसनीयता है। तथ्य की पुष्टि, संदर्भ, निष्पक्षता और गहराई ही उसे सोशल मीडिया से अलग पहचान दिलाती है। यदि इन्हीं गुणों पर सवाल उठने लगें, तो दर्शक और पाठक दूसरे विकल्प तलाशने लगते हैं।

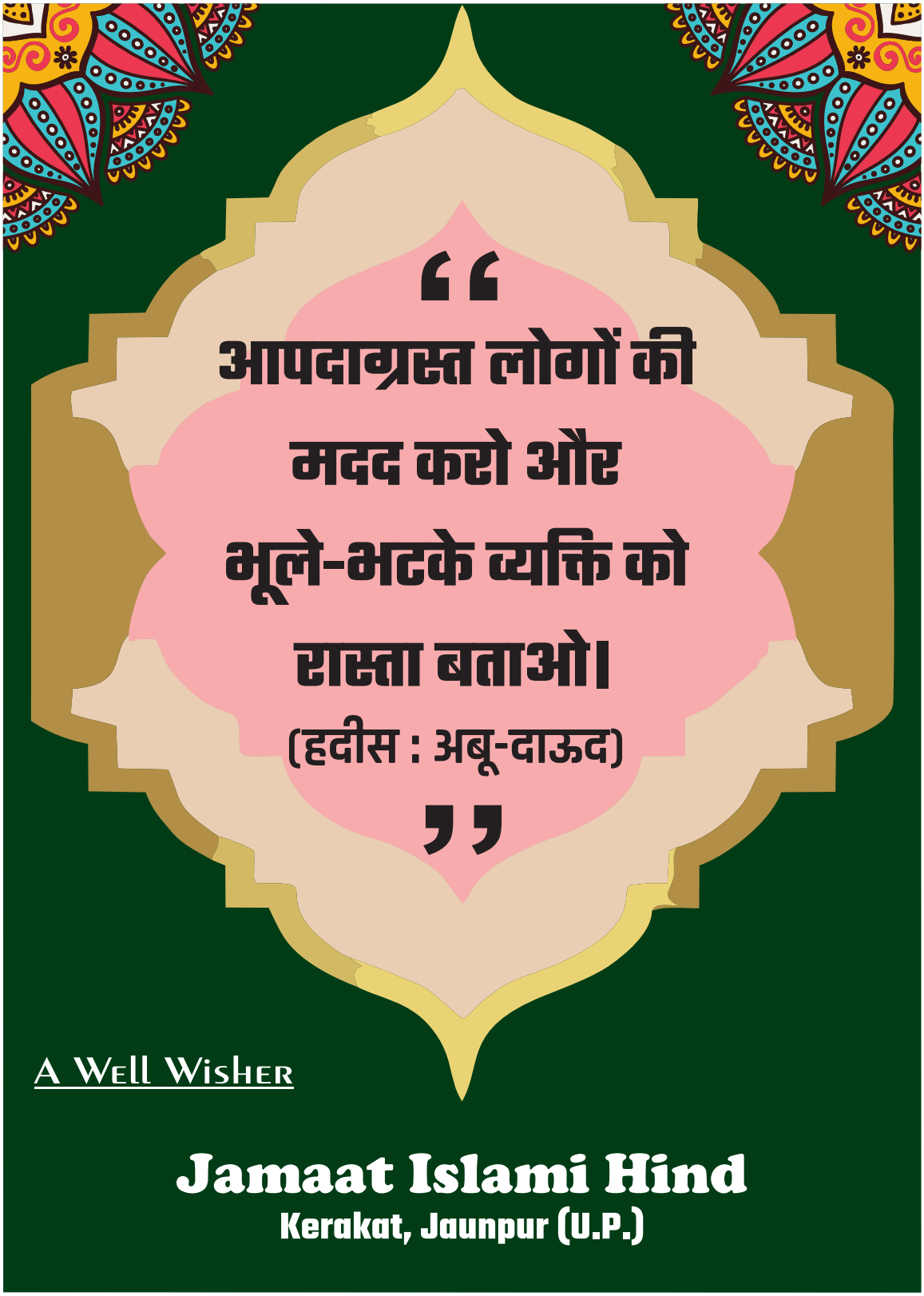
नई पीढ़ी पारंपरिक मीडिया से पूर्णता की अपेक्षा नहीं करती, लेकिन ईमानदारी और जवाबदेही अवश्य चाहती है। वह यह देखती है कि कौन-सा संस्थान कठिन सवाल पूछ रहा है, कौन तथ्यों की जांच कर रहा है और कौन सत्ता या भीड़, दोनों से समान दूरी बनाए हुए है। विश्वास विज्ञापनों से नहीं, बल्कि निरंतर विश्वसनीय आचरण से अर्जित होता है।

जंतर-मंतर का आंदोलन अंततः यही संदेश देकर गया कि लोकतंत्र में किसी भी संस्था का सम्मान केवल उसके संवैधानिक दर्जे से नहीं, बल्कि उसके आचरण, पारदर्शिता और विश्वसनीयता से तय होता है। लोकतंत्र के चारों स्तंभों के लिए यह स्पष्ट संकेत है कि बदलते समय के साथ उन्हें भी अधिक संवेदनशील, संवादशील और जवाबदेह बनना होगा।

जंतर-मंतर का आंदोलन अंततः यही संदेश देकर गया कि लोकतंत्र में किसी भी संस्था का सम्मान केवल उसके संवैधानिक दर्जे से नहीं, बल्कि उसके आचरण, पारदर्शिता और विश्वसनीयता से तय होता है। लोकतंत्र के चारों स्तंभों के लिए यह स्पष्ट संकेत है कि बदलते समय के साथ उन्हें भी अधिक संवेदनशील, संवादशील और जवाबदेह बनना होगा, वरना नई पीढ़ी का निर्णय बहुत संक्षिप्त होगा—"Respect is earned, not assumed." और यदि भरोसा टूट गया, तो उसकी डिजिटल दुनिया में उसका सबसे सरल अर्थ होगा—"Unfollow".

Gen Z ने अपनी भाषा में लोकतंत्र को एक नया संदेश दिया है। वह अंधभक्ति नहीं करती, बल्कि प्रश्न पूछती है; वह दावों से अधिक प्रमाण देखना चाहती है; और वह सम्मान केवल उसी संस्था को देती है, जो उसे अर्जित करे। यदि लोकतंत्र के चारों स्तंभ इस बदलती मानसिकता को समय रहते नहीं समझ पाए, तो नई पीढ़ी का निर्णय बहुत संक्षिप्त होगा—"Respect is earned, not assumed." और यदि भरोसा टूट गया, तो उसकी डिजिटल दुनिया में उसका सबसे सरल अर्थ होगा—"Unfollow". ■■




“
आपदाग्रस्त लोगों की
मदद करो और
भूले-भटके व्यक्ति को
रास्ता बताओ।
(हदीस : अबू-दाऊद)
”
A Well Wisher
Jamaat Islami Hind
Kerakat, Jaunpur (U.P.)

Gen Z : चुनौती या उम्मीद की किरण?

❖संपादन प्रभाग

आज के वैश्विक परिदृश्य में, 'Gen Z' (जेंज़ी) एक ऐसा शब्द बन गया है जो न केवल डिजिटल दुनिया में ट्रेंड कर रहा है, बल्कि हमारे घरों, शिक्षण संस्थानों और सामाजिक बहसों का केंद्र भी बना हुआ है। हाल ही में जमाअत इस्लामी हिन्द के उपाध्यक्ष, एस. अमीनुल हसन ने अपने ख़ुत्बा-ए-जुमा (31 जुलाई, 2026) में इस विषय पर एक अत्यंत विचारोत्तेजक चर्चा की। यह लेख उसी विमर्श का विस्तार है, जो यह समझने का प्रयास करता है कि क्या यह नई पीढ़ी वाक़ई एक 'चुनौती' है या फिर आने वाले कल की 'उम्मीद की किरण'?



Gen Z : एक पीढ़ीगत पहचान

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि 'Gen Z' कोई मनोवैज्ञानिक व्याधि या स्वभावगत कमी नहीं है, बल्कि एक पीढ़ीगत पहचान है। वर्ष 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोग इस पीढ़ी का हिस्सा हैं। एस. अमीनुल हसन के अनुसार, आज के युवाओं में दोहरी विशेषता है; वे 'Gen Z' भी हैं और 'नौजवान' (Youth) भी। यह वह अवस्था है जहां डिजिटल युग की तकनीकी दक्षता और युवावस्था का जोश एक साथ मिलते हैं। 10 साल पहले जो बच्चे थे, वे तब 'Gen Z' तो थे, लेकिन उनमें आज जैसा युवावस्था का जोश नहीं था। इसी प्रकार, 20 साल बाद उनका यह ऊर्जावान स्वभाव नहीं रहेगा। अतः यह समय इस पीढ़ी के भविष्य को संवारने का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इस पीढ़ी को देखने का नज़रिया

समाज में अक्सर माता-पिता, शिक्षकों और बुज़ुर्गों द्वारा Gen Z के प्रति एक नकारात्मक धारणा बनाई जाती है। उन्हें अति-संवेदनशील, सवाल खड़े करने वाली और डिजिटल मीडिया में डूबी हुई पीढ़ी कहा जाता है। अक्सर शिकायत की जाती है कि ये बड़ों की बात नहीं मानते या परंपराओं को चुनौती देते हैं। लेकिन, जब हम क़ुरआन और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) की सीरत का अध्ययन करते हैं, तो हमें एक बिल्कुल अलग चित्र दिखाई देता है।

इतिहास गवाह है कि जब भी किसी बड़े इंक़िलाब की नींव पड़ी, या जब भी किसी महत्वपूर्ण सामाजिक बदलाव का समय आया, तो उसके अग्रदूत नौजवान ही थे। हज़रत इबराहीम (अलैहि.) ने अपने युवा काल में ही समाज की कुरीतियों और बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ तार्किक सवाल उठाए थे। मक्की दौर में जब इस्लाम का प्रचार शुरू हुआ, तो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के इर्द-गिर्द खड़े होने वाले अधिकांश साथी युवा ही थे। अतः, धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ में नौजवान कभी समस्या नहीं, बल्कि 'उम्मीद की किरण' रहे हैं।

Gen Z की अद्भुत क्षमताएं

इस पीढ़ी में कुछ ऐसी विशिष्ट क्षमताएं हैं, जिन्हें यदि सही दिशा दी जाए, तो वे समाज के लिए एक बड़ा वरदान साबित हो सकती हैं :

सीखने की तीव्र क्षमता : आज के दौर में जानकारी हासिल करना बहुत आसान हो गया है। डिजिटल साधनों के माध्यम से Gen Z युवा तेज़ी से नई भाषाएं, तकनीकी कौशल और जीवन के हुनर सीख रहे हैं। यह उनकी सीखने की अद्भुत क्षमता है जो उन्हें पुरानी पीढ़ी से अलग और तेज़ बनाती है।

बदलाव की तत्परता : यह पीढ़ी परंपराओं के नाम पर किसी भी ऐसी चीज़ को स्वीकार नहीं करती जिसका कोई तार्किक आधार न हो। यदि उन्हें सही दलील और प्यार के साथ बात समझाई जाए, तो वे तुरंत बदलाव के लिए तैयार हो जाते हैं। उनकी ज़िद सिर्फ़ वहां होती है जहां उन्हें तार्किकता की कमी दिखती है।

सवाल करने का साहस : सवाल पूछना ज्ञान के विस्तार का द्वार है। हज़रत इबराहीम (अलैहि.) ने नमरूद से सवाल किया था। आज की पीढ़ी जब सिस्टम, समाज या सत्ता से सवाल करती है, तो वह वास्तव में सुधार की मांग कर रही होती है। उनके इस साहस को कुचलने के बजाय, इसे सही मार्गदर्शन देने की ज़रूरत है।

न्याय के प्रति प्रतिबद्धता : आज के युवा दुनिया में जहां भी ज़ुल्म देखते हैं, उसके ख़िलाफ़ सबसे पहले आवाज़ उठाते हैं। फ़िलिस्तीन के मसले से लेकर स्थानीय शैक्षणिक धांधली (जैसे भारत में पेपर लीक का मामला) तक, इस पीढ़ी ने साबित किया है कि वे अन्याय के ख़िलाफ़ खड़े होने का जज़्बा रखती है।

चुनौतियां

Gen Z की ख़ूबियों के बावजूद, उनके सामने कुछ गंभीर चुनौतियां हैं :

उद्देश्यहीनता : अधिकांश युवाओं के जीवन का कोई बड़ा मक़सद (Vision) स्पष्ट नहीं है। वे सोशल मीडिया पर घंटों 'स्क्रोलिंग' में समय बिताते हैं, क्योंकि उन्हें पता नहीं कि उन्हें जीवन में क्या हासिल करना है।

सूचना का बोझ : ज़रूरत से ज़्यादा जानकारी उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे अनिद्रा, चिंता (Anxiety) और भ्रम की स्थिति पैदा हो रही है।

तुलना का तनाव : सोशल मीडिया पर दूसरों की नक़ली 'परफेक्ट लाइफ़' देखकर वे ख़ुद को कमतर आंकने लगते हैं। दूसरों की दुनिया को देखकर होड़ या ईर्ष्या करने लगते हैं।

आध्यात्मिक शून्यता : वे तकनीकी रूप से बहुत आगे हैं, लेकिन रूहानी (आध्यात्मिक) रूप से ख़ाली महसूस कर रहे हैं। यही कारण है कि वे भटक रहे हैं।

क्या हो आगे की राह?

माता-पिता, शिक्षकों और ख़ुद युवाओं को चार मुख्य बिंदुओं पर काम करने की आवश्यकता है :

1. अल्लाह से ताल्लुक़ : युवाओं को नमाज़ और ईश्वर की याद के साथ जोड़ना अनिवार्य है। नमाज़ केवल एक रस्म नहीं, बल्कि मानसिक शांति और अनुशासन का ज़रिया है। जब दिल अल्लाह से जुड़ेगा, तो उन्हें न भटकने के लिए कोई सहारा ढूंढ़ना नहीं पड़ेगा।

2. टेक्नोलॉजी में 'तक़वा' : आज का 'तक़वा' (ईशपरायणता) केवल नमाज़ तक सीमित नहीं है। यह हमारे डिजिटल जीवन में भी होना चाहिए। हम क्या देख रहे हैं, क्या सुन रहे हैं, और क्या पोस्ट कर रहे हैं; इन सब में ईश्वर के डर का एहसास होना चाहिए।

3. अच्छी संगत का चुनाव : इंसान वैसा ही बनता है जैसी उसकी संगत होती है। युवाओं को रचनात्मक संगठनों (जैसे SIO, GIO आदि) से जुड़ना चाहिए, जहां उनकी ऊर्जा का सही इस्तेमाल हो सके। अच्छी संगत ही इंसान को ग़लत रास्ते पर जाने से रोकती है।

4. समाज सेवा और प्रतिभा का उपयोग : अल्लाह ने हर इंसान को कोई न कोई हुनर दिया है; कोई लिखने में माहिर है, कोई बोलने में, कोई एडिटिंग में। इन प्रतिभाओं को केवल पैसा कमाने तक सीमित न रखें। इन्हें समाज के उत्थान, उम्मत की सेवा और इंसानियत की भलाई के लिए इस्तेमाल करें।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि Gen Z एक 'चुनौती' नहीं, बल्कि 'पूंजी' है। यह पीढ़ी हमारे देश और पूरी मानवता के लिए एक बड़ा परिवर्तन ला सकती है। हमें अपनी स्ट्रेटजी बदलने की ज़रूरत है। आलोचना और नसीहत के बजाय, हमें उनके साथ दोस्त बनकर, उन्हें तर्क के साथ सही दिशा दिखानी होगी। अगर हम उन्हें ईमान, नैतिकता और सही मार्गदर्शन से जोड़ सकें, तो यही पीढ़ी आने वाले समय में एक ऐसी क्रांति की वाहक बनेगी जो समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी।

अल्लाह तआला हमारी नई नस्ल को सुरक्षित रखे, उन्हें भावनात्मक संतुलन और सही समझ प्रदान करे, ताकि वे भविष्य में समाज का गौरव बन सकें।■■



राष्ट्र के प्रति सम्मान और देश की एकता किसी भी लोकतांत्रिक समाज की बुनियादी ज़रूरत है। राष्ट्रीय गीत, ध्वज और अन्य प्रतीक नागरिकों में साझा राष्ट्रीय भावना पैदा करते हैं। लेकिन राष्ट्रप्रेम का अर्थ यह नहीं हो सकता कि नागरिक की अंतरात्मा और धार्मिक आस्था को पीछे छोड़ दिया जाए। एक लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा इसी बात से होती है कि वह बहुमत की भावनाओं के साथ अल्पसंख्यक की अंतरात्मा की आवाज़ का कितना सम्मान करता है।

'वंदे मातरम' से जुड़े हालिया विधायी प्रावधानों ने इसी प्रश्न को फिर सामने ला दिया है। गीत के कुछ अंशों में मातृभूमि का देवी के रूप में चित्रण किया गया है। एकेश्वरवादी आस्था रखने वाले नागरिकों के लिए इन अंशों को स्वीकार करना धार्मिक रूप से कठिन हो सकता है। इसे राष्ट्र के प्रति असम्मान समझना उचित नहीं। देश से प्रेम किसी गीत को गाने या किसी विशेष प्रतीकात्मक गतिविधि में भाग लेने से ही सिद्ध नहीं होता।

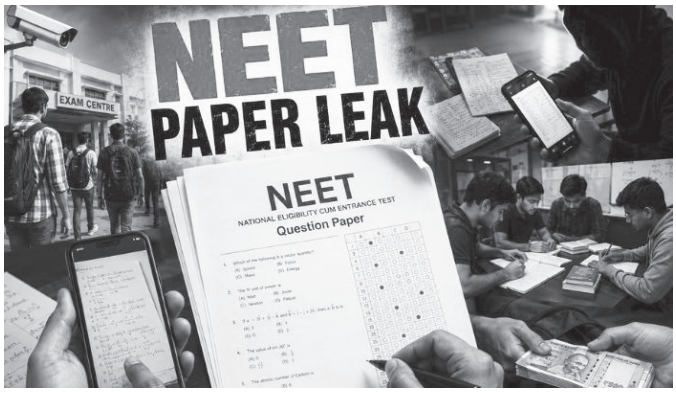
बिजो इमैनुएल मामले में सर्वोच्च न्यायालय का फ़ैसला इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इस फ़ैसले ने स्पष्ट किया कि वास्तविक धार्मिक विश्वास के कारण किसी गतिविधि में शामिल न होने के अधिकार की भी संवैधानिक सुरक्षा है। यही लोकतंत्र की ताक़त है।

राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा ज़रूरी है, लेकिन इसके लिए ऐसे क़ानून नहीं बनने चाहिए जो 'अपमान' या 'अनादर' जैसी अस्पष्ट अवधारणाओं के आधार पर नागरिकों के ख़िलाफ़ कार्रवाई का रास्ता खोल दें। क़ानून का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करना होना चाहिए, भय पैदा करना नहीं।

राष्ट्रप्रेम जितना आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक अंतरात्मा की स्वतंत्रता भी है। दोनों के बीच टकराव पैदा करने के बजाय ऐसा रास्ता तलाश करना होगा, जहां देश भी सम्मानित रहे और संविधान भी। ■■

शिक्षा का संकट केवल परीक्षा का नहीं, पूरी व्यवस्था का है

NEET विवाद के बाद शिक्षा व्यवस्था पर उठे सवालों ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि देश की शैक्षिक समस्याएं किसी एक परीक्षा, एक संस्था या एक मंत्री तक सीमित नहीं हैं। किसी व्यक्ति का इस्तीफ़ा राजनीतिक जवाबदेही का संकेत हो सकता है, लेकिन उससे वर्षों से चली आ रही व्यवस्थागत कमियां दूर नहीं होतीं। भारत को शिक्षा के क्षेत्र में अब तात्कालिक प्रतिक्रियाओं से आगे बढ़कर एक व्यापक और दीर्घकालिक दृष्टि की ज़रूरत है।



सरकारी स्कूलों का लगातार बंद होना इस संकट का सबसे चिंताजनक पहलू है। दूसरी ओर विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के संसाधनों में कमी, छात्रवृत्तियों में कटौती और शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण ने ग़रीब और मध्यमवर्गीय परिवारों के सामने अवसरों की असमानता को और गहरा किया है। शिक्षा यदि अधिकार के बजाय धीरे-धीरे बाज़ार की वस्तु बनती जाएगी, तो सामाजिक बराबरी का सपना कैसे पूरा होगा?

एक और बड़ी चुनौती शिक्षा और रोज़गार के बीच बढ़ती दूरी है। लाखों युवा डिग्रियां हासिल कर रहे हैं, लेकिन उनकी शिक्षा उन्हें बदलती अर्थव्यवस्था और तकनीकी दुनिया की ज़रूरतों के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं कर पा रही। इसलिए पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली और कौशल विकास की पूरी व्यवस्था पर पुनर्विचार आवश्यक है। ■■

बाढ़ हर साल आती है, हमारी तैयारी क्यों नहीं ?

असम, ओडिशा, गुजरात, केरल और देश के अन्य हिस्सों में बाढ़ की तस्वीरें हर वर्ष लगभग एक जैसी दिखाई देती हैं; डूबे हुए घर, बहती सड़कें, विस्थापित परिवार और राहत की प्रतीक्षा करते लोग। हर बार हम इसे प्राकृतिक आपदा कहकर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन सवाल यह है कि यदि बाढ़ बार-बार आती है, तो उससे होने वाला नुक़सान बार-बार क्यों दोहराया जाता है?



प्राकृतिक आपदा को पूरी तरह रोकना संभव नहीं, लेकिन उसके प्रभाव को कम करना निश्चित रूप से संभव है। समस्या तब बढ़ जाती है जब नदियों के प्राकृतिक प्रवाह में अनियोजित हस्तक्षेप हो, आर्द्रभूमियां ख़त्म होती जाएं, शहरों में जल-निकासी की व्यवस्था कमज़ोर हो और बस्तियां ऐसे क्षेत्रों में फैलती जाएं जहां बाढ़ का ख़तरा पहले से मौजूद है।

इसलिए आपदा प्रबंधन की नीति को केवल राहत और बचाव तक सीमित रखना अब पर्याप्त नहीं है। वैज्ञानिक नदी प्रबंधन, जलभराव वाले क्षेत्र का संरक्षण, मज़बूत जल-निकासी व्यवस्था, प्रभावी पूर्व चेतावनी प्रणाली और जलवायु-अनुकूल बुनियादी ढांचे को विकास नीति का हिस्सा बनाना होगा। जिन क्षेत्रों में बार-बार बाढ़ आती है, वहां कमज़ोर समुदायों के सुरक्षित और सम्मानजनक पुनर्वास की दीर्घकालिक योजना भी बननी चाहिए। राहत के समय सरकारों के साथ सामाजिक संगठनों और आम नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। लेकिन हर साल राहत सामग्री बांटना किसी स्थायी समाधान का विकल्प नहीं हो सकता। असली सफलता तब होगी, जब राहत शिविरों की ज़रूरत कम हो और आपदा से पहले ही नुक़सान को सीमित करने की व्यवस्था मज़बूत हो। ■■

भारत में हर दिन बंद हुए 25 स्कूल

पिछले 10 वर्षों में भारत में औसतन हर दिन 25 सरकारी स्कूल बंद हुए, जबकि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या में 2.26 करोड़ की कमी आई। नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 10 वर्षों में देशभर में कुल 94,000 सरकारी स्कूल बंद हुए हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या 2014-15 में 11.07 लाख थी, जो 2024-25 में घटकर 10.13 लाख रह गई। इसी अवधि में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या भी 83,000 से घटकर 79,000 रह गई। इसके विपरीत, निजी स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई और यह 2.88 लाख से बढ़कर 3.39 लाख हो गई।



रिपोर्ट में इसके पीछे स्कूल जाने की उम्र वाली आबादी में कमी, घटती जन्मदर, कम विद्यार्थियों वाले स्कूलों का एकीकरण और उच्च कक्षाओं में विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़े रखने की चुनौतियों को प्रमुख कारण बताया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पिछले एक दशक के दौरान बड़ी संख्या में स्कूलों का विलय किया गया है। दोनों राज्यों में मिलाकर लगभग 40,000 स्कूलों का विलय हुआ है। जब बच्चों के आसपास के स्कूल बंद हो जाते हैं, तो उनमें से कई बच्चे स्कूल जाना ही छोड़ देते हैं। रिपोर्ट में प्राथमिक स्तर के बाद विद्यार्थियों के स्कूल में बने रहने को लेकर भी चिंता जताई गई है। रिपोर्ट से पता चलता है कि शिक्षा के शुरुआती स्तर पर पैदा हुई सीखने की कमियां आगे की कक्षाओं तक बनी रहती हैं। ■■

प्रसंग

बीमार गुप्ता जी का हाल-चाल पूछने जाना

❖मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

एक बार मेरा मेरठ शहर जाना हुआ। वहां हमारे एक प्रिय मित्र गुप्ता जी भी रहते थे। वह काफ़ी दिनों से बीमार थे। उन पर फ़ालिज का हमला हो गया था। मैंने सोचा कि मेरठ आना हुआ है तो गुप्ता जी से मिलकर उनका हाल-चाल भी पूछ लिया जाए। अतः मैं उनके घर पहुंच गया। मुझे इस तरह अचानक अपने घर देखकर गुप्ता जी की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। मुझे तुरंत अंदर कमरे में ले गए और बच्चों से कहा कि देखो कौन आया है! जल्दी से इनकी ख़ातिरदारी के लिए चाय-नाश्ते का इंतिज़ाम करो। गुप्ता जी की ज़बान पर फ़ालिज का काफ़ी असर था, इसलिए उन्होंने बच्चों से जो कुछ कहा और कहना चाहा, उनके बच्चे समझ न सके और उन्होंने स्पष्ट करने के लिए सवाल किया। गुप्ता जी ने फिर वही बात दोहराई। चूंकि उनकी ज़बान में लड़खड़ाहट थी और बात भी स्पष्ट न थी, इसलिए बच्चे फिर वह बात न समझ सके। गुप्ता जी ने ग़ुस्से और झुंझलाहट में फिर वही बात दोहराई। एक लम्हे के लिए माहौल कुछ नाख़ुशगवार-सा हो गया। चूंकि मैं सामने मौजूद था, इसलिए उनके बच्चों ने सब्र से काम लिया और ख़ामोश हो गए। अलबत्ता वह समझ गए कि मेरे आदर-सत्कार की बात हो रही है।

सबसे पहले मैंने गुप्ता जी की बीमारी पर दुख प्रकट किया और उनके जल्द स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से दुआ की। इसके बाद कहा कि हम सबके स्रष्टा, मालिक और पालनहार की पुस्तक कुरआन में गुप्ता जी के बारे में और आप लोगों के बारे में कुछ बातें कही गई हैं। मैं चाहता हूं कि उनमें से कुछ बातें आप लोगों के सामने रख दूं।

मेरी इस बात पर उन लोगों ने बड़ी हैरत के साथ पूछा कि कुरआन में हम लोगों का उल्लेख है?!

मैंने कहा, हां! बिल्कुल। कुरआन तो सारे इंसानों के मार्गदर्शन के लिए सारे इंसानों के रब के पास से आई हुई पुस्तक है, तो फिर भला आप लोगों को उसमें क्यों नज़रअंदाज़ किया जाएगा।

हक़ीक़त में गुप्ता जी और उनके बीवी-बच्चे दोनों ही अपनी-अपनी जगह सही थे। फ़ालिज के मरीज़ और घर वालों के बीच बात न समझ पाने की वजह से नाख़ुशगवार माहौल पैदा हो ही जाता है। बहरहाल शानदार नाश्ता मेरे सामने लाया गया। चाय-नाश्ते के दौरान मुझे यह ख़याल आया कि गुप्ता जी की इस बीमारी की वजह से घर के लोग अक्सर उनकी बात समझने में असमर्थ रहते होंगे और इस तरह की अप्रिय स्थिति पैदा होती रहती होगी। मेरी मौजूदगी की वजह से तो घर वालों ने गुप्ता जी को कोई कड़वा जवाब नहीं दिया है, लेकिन मुमकिन है कि उनकी बातों से परेशान होकर घर के लोग उन पर झुंझलाहट और कड़वाहट का इज़हार करते हों। इस ख़याल के आते ही मैंने गुप्ता जी की पत्नी से कहा कि नाश्ते के बाद मैं मग़रिब (संध्या) की नमाज़ पढ़ूंगा। इसलिए साफ़-सुथरी चादर का इंतिज़ाम कर दें। नमाज़ के बाद मेरी इच्छा है कि घर के सब लोगों को आप यहां जमा कर दें। मैं उनसे कुछ ज़रूरी बात करना चाहता हूं।

नमाज़ अदा करने के बाद मैं फिर गुप्ता जी के कमरे में आ गया और मेरी इच्छा के अनुसार घर के सभी लोग वहां जमा हो गए। वे सब उत्सुक थे कि न जाने मैं उनसे क्या बात करने वाला हूं?!

सबसे पहले मैंने गुप्ता जी की बीमारी पर दुख प्रकट किया और उनके जल्द स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से दुआ की। इसके बाद कहा कि हम सबके स्रष्टा, मालिक और पालनहार की पुस्तक क़ुरआन में गुप्ता जी के बारे में और आप लोगों के बारे में कुछ बातें कही गई हैं। मैं चाहता हूं कि उनमें से कुछ बातें आप लोगों के सामने रख दूं।

मेरी इस बात पर उन लोगों ने बड़ी हैरत के साथ पूछा कि क़ुरआन में हम लोगों का उल्लेख है?!

मैंने कहा, हां! बिल्कुल। क़ुरआन तो सारे इंसानों

के मार्गदर्शन के लिए सारे इंसानों के रब के पास से आई हुई पुस्तक है, तो फिर भला आप लोगों को उसमें क्यों नज़रअंदाज़ किया जाएगा। उसके बाद मैंने क़ुरआन की सूरा बनी-इस्राईल की कुछ आयतों–

"वक़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअबुदू इल्ला इय्याहु व बिल-वालिदैनि एह्साना..."

"और तुम्हारे पालनहार ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो, न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात करो।"

(क़ुरआन, 17:23-24)

का पाठ किया और फिर उनका व्याख्यात्मक अनुवाद भाषण-शैली में पेश करते हुए कहा कि हमारे और आपके पालनहार का यह फ़ैसला और हुक्म है कि उसके साथ न तो किसी को भागीदार बनाया जाए और न उसके सिवा किसी की उपासना एवं भक्ति की जाए। इस हक़ीक़त को क़ुरआन में तरह-तरह से स्पष्ट किया गया है और इस बात को समझाने के लिए स्पष्ट तर्क दिए गए हैं। ईश्वर के इस आदेश को मानने वालों के लिए क्या-क्या पुरस्कार हैं, यह बात भी बताई गई है, साथ ही इस बात से भी सचेत किया गया है कि इस आदेश को न मानने वालों का परलोक में कितना दर्दनाक अंजाम होगा।

ईश्वर ने अपने बंदों को, आपको और हमें यह आदेश दिया है कि अपने मां-बाप के साथ अच्छे-से-अच्छा सुलूक किया जाए। और अगर वह बूढ़े हो जाएं या बीमार हो जाएं, जैसे कि हमारे मित्र गुप्ता जी बीमार हैं तो औलाद का और घर वालों का फ़र्ज़ है कि उनकी किसी बात पर, उनकी किसी झुंझलाहट पर उन्हें उफ़ तक न कहा जाए और न उन्हें झिड़का जाए।

कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें!

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

इस मार्गदर्शन के बाद ईश्वर ने अपने बंदों को, आपको और हमें यह आदेश दिया है कि अपने मां-बाप के साथ अच्छे-से-अच्छा सुलूक किया जाए। और अगर वह बूढ़े हो जाएं या बीमार हो जाएं, जैसे कि हमारे मित्र गुप्ता जी बीमार हैं तो औलाद का और घर वालों का फ़र्ज़ है कि उनकी किसी बात पर, उनकी किसी झुंझलाहट पर उन्हें उफ़ तक न कहा जाए और न उन्हें झिड़का जाए। बल्कि दिल व जान से नरमी और मुहब्बत के साथ उनकी सेवा और आज्ञापालन किया जाए और अपने पालनहार ईश्वर से उनकी भलाई, दया और सुरक्षा की दुआ की जाए और इस हक़ीक़त को अपने सामने रखा जाए कि ऐसा करके हम उन पर कोई एहसान नहीं कर रहे हैं, बल्कि उल्टे उनके हम पर इतने ज़्यादा एहसान हैं जिनका हक़ हम अदा नहीं कर सकते। उन्होंने हमें हमारे बचपन में पाला-पोसा और हमारी परवरिश की है। अगर हम और आप अपने प्रभु के आदेश का पालन करेंगे तो हमारा प्रभु परलोक में हमें इसका बेहतरीन बदला देगा और पालन न करने की स्थिति में सज़ा देगा।

एकेश्वरवाद, परलोक और मां-बाप की सेवा और मानव-अधिकार पर संक्षिप्त प्रकाश डालने के बाद मैंने गुप्ता जी के परिवारजनों से, जो कि मेरी बातचीत बड़ी ख़ामोशी और दिलचस्पी से सुन रहे थे, कहा कि क़ुरआन में हमारे प्रभु ने आपको यह निर्देश दिया है कि आप गुप्ता जी की ख़ूब सेवा करें और अगर उनकी कोई बात आपको बुरी लगे तो उसे बर्दाश्त करें और उसका इज़हार उन पर न करें।

गुप्ता जी के परिवारजन आम हिंदुओं की भांति चेतन या अवचेतन रूप से आवागमन (पुनर्जन्म) में आस्था रखते थे। इसलिए मैंने इस बारे में भी उनके चिंतन-मनन के लिए कुछ बातें रखीं। मैंने कहा कि कुछ लोग कहते और समझते हैं कि दुनिया में जो सुख, दुःख हैं वे हमारी पिछली ज़िंदगी के कर्मों का परिणाम हैं। उन लोगों का विश्वास है कि दुनिया में जो व्यक्ति बीमार, परेशान और समस्याओं का शिकार है तो इसका मतलब यह है कि उस व्यक्ति ने पिछली ज़िंदगी में बुरे काम किए थे जिसकी सज़ा उसे इस दुनिया में मिल रही है। इसकी वजह से कई बार ऐसा हो जाता है कि बीमार के

परिवार वाले बीमार के साथ हमदर्दी से पेश आने के बजाय उसे अपनी बीमारी का दोषी समझने लगते हैं। मैंने थोड़ा ज़ोर देकर कहा कि अगर उन लोगों की यह बात सही मान ली जाए कि इस दुनिया में बीमार, परेशान और दुखी इंसान पिछले कर्मों की सज़ा भुगत रहा है तो सोचिए कि भला हमारे प्रिय मित्र इन गुप्ता जी की सेवा कौन करेगा? फिर तो यह मुजरिम ठहरेंगे। आवागमन को स्वीकार करने के बाद किसी परेशान की मदद करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। आप लोग ठंडे दिल से इसपर विचार करें! मैंने बात को आगे जारी रखते हुए कहा कि गुप्ता जी ने पिछली ज़िंदगी में कोई बुरा काम नहीं किया है। यह उनका पहला ही जन्म है। इसलिए आप लोग गुप्ता जी को मुजरिम न समझें बल्कि अपने प्रभु का आदेश समझकर उनकी सेवा करें और करते रहें।

मैंने देखा कि वे सब गंभीरता और दिलचस्पी से मेरी बातें सुन रहे थे। उनके चेहरों पर चिंतनशीलता के लक्षण थे। मैंने आगे कहा कि आप लोगों के मन में यह सवाल पैदा हो रहा होगा कि जब दुनिया में सुख, दुःख पिछली ज़िंदगी के कर्मों का परिणाम नहीं हैं तो फिर इसका रहस्य क्या है? इस सवाल का भी जवाब क़ुरआन में दिया गया है। क़ुरआन ने हमें बताया है कि दुनिया में इंसान इम्तिहान और आज़माइश के लिए भेजा गया है और उसे सुख और दुःख दोनों तरह से आजमाया जा सकता है। जो लोग अपने स्रष्टा व मालिक पर विश्वास रखेंगे, उसके निर्देशों के अनुसार कार्य करेंगे और सुख और दुःख हर हाल में ईश्वर के निर्देशों पर चलेंगे, वे लोग मरने के बाद आने वाली ज़िंदगी में इसका इनाम पाएंगे। और जो ऐसा नहीं करेंगे वे सज़ा के पात्र होंगे।

यहां गुप्ता जी को बीमारी देकर आजमाया गया है। अब अगर ये ईश्वर ही की उपासना करें, सिर्फ़ ईश्वर ही से मदद मांगें और उसकी बंदगी करें, बीमारी में सब्र और धैर्य से काम लें तो ईश्वर इनसे राज़ी होगा और यह उसके पुरस्कारों के पात्र होंगे। इसी तरह आप लोग अगर ईश्वर की बंदगी करते हुए गुप्ता जी की दिलो-जान से सेवा करेंगे तो आपसे दयावान व दयालु प्रभु प्रसन्न होगा और आप लोगों को इस दुनिया में भी सुख-शान्ति प्रदान करेगा और परलोक में भी अपने पुरस्कारों से सम्मानित करेगा। ईश्वर ने ऐसे भले लोगों को यह ख़ुशख़बरी भी दी है कि वह उनके ऐसे सदाचारी परिजनों के साथ उन्हें स्वर्ग में दाख़िल करेगा।

मैंने इस्लाम के परलोकवाद पर कुछ मिसालों और दलीलों के साथ संक्षिप्त-सा प्रकाश डाला और उन सबसे इस पर विचार करने का अनुरोध किया और अपनी बातचीत समाप्त की। इससे ज़्यादा बातचीत का उस वक़्त मौक़ा भी नहीं था। मैंने देखा कि मेरी बातचीत गुप्ता जी और उनके परिवार के सभी लोगों ने बड़ी गंभीरता और एकाग्रता से सुनी। उन्होंने मुझ से अनुरोध किया कि मैं उन्हें हिन्दी क़ुरआन उपलब्ध कराऊं। और उसका अध्ययन करने का विश्वास दिलाया।

कुछ देर के बाद मैंने जाने की इजाज़त चाही। घर के सभी लोग मुझे दरवाज़े तक छोड़ने के लिए आए और इच्छा प्रकट की कि मैं उनके यहां बार-बार आता रहूं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का तरीक़ा था कि जब आप किसी मरीज़ का हाल-चाल पूछने के लिए जाते तो अवसरानुसार मरीज़ को नसीहत करते और सत्य का संदेश पहुंचाने के किसी मौक़े को हाथ से न जाने देते। एक बार आप एक यहूदी लड़के का हाल-चाल पूछने के लिए गए। उसकी सेहत के लिए दुआ की और उसे सत्य की ओर आमंत्रित किया। उस लड़के के मां-बाप भी वहां मौजूद थे।

हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने जानने वालों, चाहे वे रिश्तेदार हों या पड़ोसी, कारोबारी रिश्ता हो या दफ़्तर का, बीमारी और परेशानी में उनके पास जाएं और हर संभव सहयोग का प्रस्ताव दें। ईश्वर की कृपा से इससे समाज में सुखद बदलाव आएगा और हमारा ईश्वर हमसे प्रसन्न होगा।■■

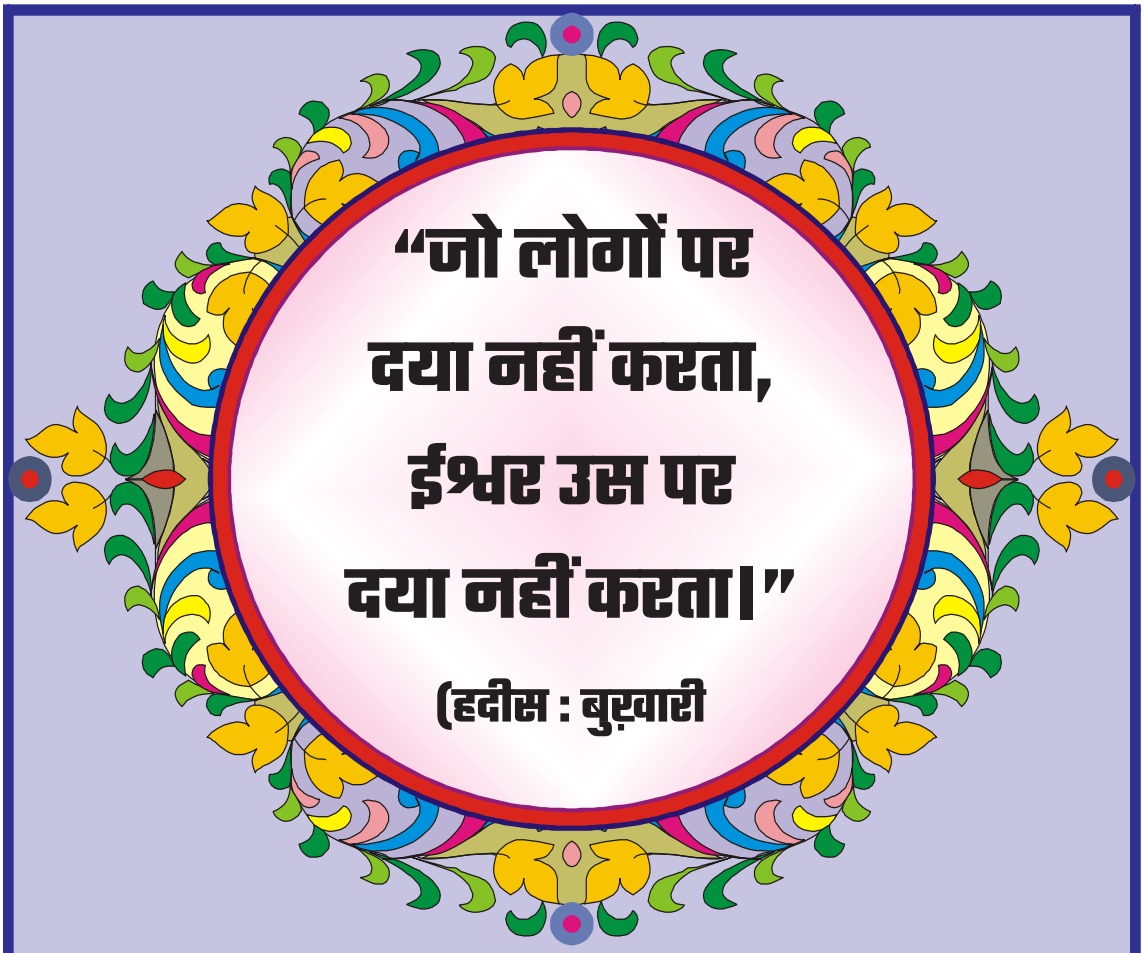
आवश्यक सूचना

मासिक पत्रिका कान्ति के सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं और एजेंसियों को सूचित किया जाता है कि

छपाई तथा संबंधित लागत में वृद्धि के कारण 'कान्ति मासिक' की सहयोग राशि में वृद्धि करना पड़ रही है। आशा है हमारे सम्मानित सहयोगकर्ता हमारी मजबूरी को समझ रहे होंगे। सितम्बर 2026 से प्रत्येक अंक की राशि 30 रुपये से बढ़कर 40 रुपये होगी तथा वार्षिक सहयोग राशि 350 रुपये से बढ़कर 450 रुपये होगी।

नोट : पुराने ग्राहक अपनी ख़रीदारी को 31 अगस्त 2026 या उससे पूर्व पुरानी दरों पर ही रिन्यू करा सकते हैं।

अभी संपर्क करें :
8920589292, 9891160829
mgrdawat@gmail.com



A Well Wisher

Haji Shabbir Ahmad
Muzaffar Nagar
(U.P.)

मुस्लिम महिला : आधुनिकता, अस्मिता और आत्मविश्वास

❖अज़का हयात

आज की महिलाएं ऐसे दौर में जी रही है जहां हर दिन उसे अपनी पहचान नए सिरे से गढ़ने के लिए कहा जाता है। सोशल मीडिया, फ़िल्में, फैशन इंडस्ट्री, सेलिब्रिटी संस्कृति, राजनीतिक विचारधाराएं, कॉरपोरेट विज्ञापन और यहां तक कि उसके अपने आसपास के लोग भी उसे यह बताने की कोशिश करते हैं कि एक "सफल महिला" कैसी होती है। कोई कहता है कि आज़ादी का अर्थ परंपराओं को छोड़ देना है। कोई कहता है कि उसकी असली पहचान उसकी सुंदरता में है। कोई उसकी सफलता को उसके करियर से मापता है। कोई उसकी लोकप्रियता से।

इन तमाम आवाज़ों के बीच एक मुस्लिम महिला के दिल में अक्सर एक ख़ामोश सवाल उठता है–"आख़िर मेरी असली पहचान क्या है? मैं किस रास्ते पर चलूं?" यही आंतरिक संघर्ष आज की मुस्लिम महिला का सबसे बड़ा पहचान संकट (Identity Crisis) बन चुका है।

पहचान का संकट क्या है?

पहचान संकट वह स्थिति है जब इंसान यह भूलने लगता है कि वह वास्तव में कौन है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है और उसकी असली क़ीमत किस चीज़ से तय होती है। ऐसा व्यक्ति समुद्र में बिना लंगर की नांव की तरह हो जाता है, जो हर लहर के साथ दिशा बदलती रहती है।

क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है–"और उन लोगों की तरह मत हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं अपने आपको भुला दिया।"

(क़ुरआन, 59:19)

यह आयत हमें एक गहरा संदेश देती है। जब इंसान अल्लाह को भूल जाता है, तो धीरे-धीरे वह अपनी असली पहचान भी खो देता है। इसलिए सबसे बड़ा पहचान संकट अपनी संस्कृति या आत्मविश्वास खोना नहीं, बल्कि अपने रब से रिश्ता कमज़ोर कर देना है।

आधुनिक मुस्लिम महिला की चुनौतियां

आज की मुस्लिम महिला दो चरम सीमाओं के बीच खड़ी है। एक ओर ऐसा समाज है जो अक्सर धार्मिक मूल्यों को पिछड़ापन समझता है। दूसरी ओर कुछ सांस्कृतिक परंपराएं हैं जो इस्लाम के नाम पर महिलाओं पर ऐसे बोझ डाल देती हैं, जिनका इस्लाम से कोई संबंध नहीं होता। इन दोनों के बीच वह यह समझने में उलझ जाती है कि वास्तव में इस्लाम क्या सिखाता है और समाज उससे क्या चाहता है।

उसके मन में अनेक प्रश्न उठते हैं—क्या मैं अपने दीन और करियर दोनों को साथ लेकर चल सकती हूं? क्या हया और महत्वाकांक्षा एक साथ हो सकती हैं? क्या मैं शिक्षा प्राप्त कर सकती हूं और फिर भी अपनी इस्लामी पहचान को सुरक्षित रख सकती हूं? क्या आत्मविश्वास और विनम्रता साथ-साथ चल सकते हैं? जब इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर नहीं मिलते, तब पहचान का संकट और गहरा हो जाता है।

सोशल मीडिया : नया आईना

आज सोशल मीडिया ने तुलना (Comparison) को जीवन का हिस्सा बना दिया है। हर स्क्रॉल पर हमें किसी का सुंदर घर, किसी की शानदार नौकरी, किसी की ख़ुशहाल शादी, किसी की बेहतरीन यात्रा और किसी की आदर्श ज़िंदगी दिखाई देती है। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि सोशल मीडिया वास्तविक जीवन नहीं, बल्कि चुने हुए सुंदर पलों का प्रदर्शन है।

बार-बार दूसरों से अपनी तुलना करना इंसान के भीतर असंतोष पैदा करता है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने दुनिया के मामलों में अत्यधिक तुलना से बचने की शिक्षा दी, क्योंकि यह इंसान को अल्लाह की नेमतों के प्रति नाशुक्रा बना देती है।

आज समस्या यह है कि बहुत-सी महिलाएं अनजाने में यह पूछने लगी हैं—"मैं अल्लाह के कितने क़रीब हूं?" की जगह "मैं दूसरों जितना सफल क्यों नहीं हूं?" यहीं से दिल की बेचैनी शुरू होती है।

आज़ादी का सही अर्थ

आज की बहुत-सी विचारधाराएं कहती हैं कि आज़ादी का मतलब है—कोई सीमा न हो। जो दिल चाहे वही करो। हर

इच्छा पूरी करो। अपना सच स्वयं बना लो। लेकिन इतिहास गवाह है कि इच्छाओं की असीमित स्वतंत्रता कभी स्थायी शांति नहीं देती। इस्लाम सिखाता है कि वास्तविक आज़ादी हर प्रकार की ग़ुलामी से निकलकर केवल अल्लाह की बंदगी करना है। जब एक महिला केवल अपने रब की रज़ा को अपना लक्ष्य बना लेती है, तब वह लोगों की राय, फ़ैशन, सुंदरता के मानकों और समाज की स्वीकृति की ग़ुलाम नहीं रहती। यही सच्ची स्वतंत्रता है।

आज बहुत-सी मुस्लिम महिलाएं चुपचाप चिंता (Anxiety), अकेलेपन, आत्म-संदेह, पूर्णतावाद (Perfectionism), मानसिक थकान (Burnout) और हीन भावना जैसी समस्याओं से जूझ रही हैं। उनके पास उपलब्धियां हैं, लेकिन सुकून नहीं। उनके पास साधन हैं, लेकिन संतोष नहीं। इसका कारण यह नहीं कि करियर, शिक्षा या सफलता बुरी चीज़ें हैं। इस्लाम तो हर हलाल क्षेत्र में उत्कृष्टता (Excellence) की प्रेरणा देता है। समस्या तब शुरू होती है जब उपलब्धियां हमारी पहचान बन जाती हैं। यदि सफलता हमारी पहचान होगी, तो असफलता हमें तोड़ देगी। लेकिन यदि हमारी पहचान अल्लाह से जुड़ी होगी, तो असफलताएं भी हमें मज़बूत बनाएंगी।

इस्लाम में महिला की वास्तविक पहचान

इस्लाम ने सदियों पहले महिला को वह सम्मान दिया, जिसकी चर्चा आज आधुनिक दुनिया कर रही है। क़ुरआन ईमान, इबादत, जवाबदेही और जन्नत के मामले में पुरुष और महिला दोनों को समान रूप से संबोधित करता है। एक मुस्लिम महिला की पहचान केवल उसके रूप, वैवाहिक स्थिति, धन या पेशे से नहीं होती। उसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह अल्लाह की बंदी है। चाहे वह बेटी हो, पत्नी हो, मां हो, शिक्षिका हो, डॉक्टर हो, व्यवसायी हो या गृहिणी—यदि उसका उद्देश्य अल्लाह की रज़ा है, तो उसका हर कार्य इबादत बन सकता है।

क़ुरआन की महान महिलाओं से सीख

अल्लाह ने क़ुरआन में अनेक महान महिलाओं का उल्लेख इसलिए किया ताकि वे हर युग की महिलाओं के लिए प्रेरणा बनें। मरयम (अलैहि.) ने लोगों की आलोचनाओं के बावजूद अपने रब पर भरोसा नहीं छोड़ा। फ़िरऔन की पत्नी आसिया ने महलों की विलासिता पर ईमान को चुना। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) एक सफल व्यवसायी होने के साथ-साथ पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की सबसे बड़ी समर्थक बनीं। हज़रत आयशा (रज़ि.) इस्लाम की महानतम विद्वानों में से एक बनीं और पूरी उम्मत को ज्ञान दिया।

इन महिलाओं ने अपनी पहचान लोगों की स्वीकृति पर नहीं, बल्कि अल्लाह के साथ अपने रिश्ते पर बनाई। इसीलिए उनका प्रभाव सदियों बाद भी जीवित है।

समाधान : अपनी पहचान को फिर से पाना

आज की मुस्लिम महिला को समाज से भागने की आवश्यकता नहीं है और न ही अंधी नक़ल करने की। उसे अपने रब की ओर लौटने की आवश्यकता है। जब वह यह समझ लेती है कि वह संयोग से नहीं, बल्कि उद्देश्य के साथ पैदा की गई है। अल्लाह ने उसे सम्मान दिया है। उसे एक महान उद्देश्य के लिए चुना है। तब उसकी पहचान का संकट धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है।

पहचान को मज़बूत करने के व्यावहारिक उपाय यह है कि सबसे पहले क़ुरआन से अपना रिश्ता मज़बूत करें। केवल तिलावत ही नहीं, बल्कि उसके अर्थों पर विचार करें और उन्हें अपने जीवन में उतारें। पांचों नमाज़ों की पाबंदी करें, क्योंकि नमाज़ दिन में कई बार हमें हमारे रब से जोड़ती है। ऐसे लोगों की संगति चुनें जो आपको अल्लाह की याद दिलाएं, न कि केवल दुनिया की दौड़ में धकेलें।

सोशल मीडिया का उपयोग सोच-समझकर करें। ऐसे खातों को फ़ॉलो करें जो ईमान, ज्ञान और सकारात्मकता बढ़ाएं, न कि तुलना और हीन भावना। इस्लाम का ज्ञान विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त करें ताकि संस्कृति और दीन में अंतर समझ सकें। और सबसे महत्वपूर्ण—अपने ऊपर धैर्य रखें। पहचान एक दिन में नहीं बनती। यह हर दिन अल्लाह की ओर उठाए गए छोटे-छोटे क़दमों से मज़बूत होती है। अपनी अहमियत साबित करने के लिए किसी और जैसा बनने की ज़रूरत नहीं है।

दुनिया हर कुछ वर्षों में महिला की नई परिभाषा बना देती है। लेकिन अल्लाह की दी हुई पहचान कभी नहीं बदलती। आज जब पूरी दुनिया अपनी पहचान तलाश कर रही है, तब मुस्लिम महिला को अपनी पहचान नई बनाने की आवश्यकता नहीं है। उसे केवल उस पहचान को फिर से खोजने की आवश्यकता है जो उसके रब ने उसे पहले ही प्रदान कर दी है—एक ऐसी बंदी, जिसे ईमान ने सम्मान दिया है, उद्देश्य ने दिशा दी है और जन्नत की आशा ने शक्ति प्रदान की है। यही पहचान उसका सबसे बड़ा सम्मान है। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। ■■

लघुकथा

इरफ़ान भी इरफ़ान से आगाह नहीं है

❖सुफ़ियान अहमद



जिस आदमी को बरसों तक किसी ने नहीं देखा, एक दिन उसे सब देखने लगे। वह आदमी तो कल भी था आज भी है। रोज़ की मशक़्क़त, रोज़ की चिंताएं, रोज़ की उम्मीदें। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना आया कि उसकी आवाज़ कैमरे में क़ैद हो गई।

उसने कुछ बातें कहीं। वे बातें नई नहीं थीं; नई थी उन्हें सुनने वालों की बेचैनी।

किसी ने उनमें संविधान पढ़ लिया। किसी ने राजनीति। किसी ने प्रतिरोध। किसी ने षड्यंत्र। शब्द वही रहे, अर्थ बदलते गए। कुछ ही दिनों में इरफ़ान एक आदमी नहीं रहा; वह बहस बन गया।

लोग उसे सुनने और समझने से ज़्यादा, उसे सिद्ध करने में लग गए। जो उसके पक्ष में था, वह उसके भीतर अपनी उम्मीद खोज रहा था। जो उसके विरोध में था, वह उसी चेहरे पर अपना भय पढ़ रहा था।

बीच में खड़ा इरफ़ान शायद सोच रहा था; क्या मैंने सचमुच इतना कुछ कह दिया?

वह तो बरसों से वही बातें अपने साथ लिए फिर रहा था। फ़र्क़ इतना था कि पहले वे उसके सीने में क़ैद थीं, अब लोगों के मोबाइलों में हैं।

धीरे-धीरे उसे लगा कि लोग उसकी बात नहीं सुन रहे, अपनी-अपनी आवाज़ उसमें सुन रहे हैं। जो उससे सहमत था, वह उसे अपनी आशाओं का चेहरा बना रहा था। जो उससे घृणा करता था, वह उसी चेहरे पर अपने संदेहों की परछाइयां खोज रहा था।

इरफ़ान दोनों के बीच खड़ा था—न उतना बड़ा, जितना उसके समर्थक उसे बना रहे थे; न उतना छोटा, जितना उसके विरोधी साबित करना चाहते थे।

शायद दुनिया का सबसे कठिन काम दूसरों को समझाना नहीं, ख़ुद को समझना है। लोगों ने जिस इरफ़ान को खोज लिया है, वह उससे कहीं पहले पैदा हो चुका था; और जिस इरफ़ान की तलाश अभी बाक़ी है, वह स्वयं हज़ारों इरफ़ान जैसे लोगों के भीतर बैठा है। ■■

"उस हस्ती की क़सम
जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान
है! बन्दा ईमान वाला नहीं
होता जब तक कि अपने
भाई के लिए भी वही चीज़
पसन्द न करे जो वह स्वयं
अपने लिए पसन्द
करता है।"
(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher
Jamaat Islami Hind
Mangrol, Baran (Raj.)

अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)

ताइफ़ की यात्रा

(गतांक से आगे)

❖मुशर्रफ़ अली

मक्का में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को लगातार विरोध और रुकावटों का सामना करना पड़ रहा था। ख़ास तौर पर चचा अबू-तालिब की मौत के बाद मक्का में उनका एक मज़बूत सहारा छिन गया था। उसी साल जो पैग़म्बरी का दसवां साल था, नबी की पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की भी मृत्यु हो गई, जिससे घर से उन्हें मिलने वाली तसल्ली और हौसला भी ख़त्म हो गया। इस वर्ष को सीरत में आमुल-हुज़्न (ग़म का साल) कहा जाता है।



अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मक्कावासियों से बहुत हद तक निराश हो चुके थे, इसलिए उन्होंने सोचा कि मक्का के बाहर इस्लाम की दावत के लिए कोई नया केंद्र तलाश किया जाए। उनका मक़सद था कि वहां के लोगों को अल्लाह की ओर बुलाया जाए और अगर वे इस्लाम क़ुबूल कर लें तो दावत के लिए एक नया मैदान मिल सकता है। इसी विचार से एक दिन नबी (सल्ल०) ज़ैद बिन हारिसा को लेकर, जिन्हें वे बेटे की तरह मानते थे, मक्का से 70 किलोमीटर दूर स्थित एक बड़ी और सभ्य बस्ती, 'ताइफ़' गये। उन्होंने दोनों तरफ़ का सफ़र पैदल ही तय किया। रास्ते में मिलने वाले क़बीलों को भी उन्होंने अल्लाह के रास्ते की ओर बुलाया, मगर कोई भी आने को तैयार नहीं हुआ।

ताइफ़ पहुंचकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सुक़ैफ़ के तीनों सरदारों और वहां के दूसरे प्रभावशाली लोगों से मुलाक़ात की। आपने उन्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और इस्लाम की दावत दी। लेकिन ताइफ़ वालों का रवैया बहुत ही ख़राब रहा। उन्होंने न केवल यह कि दावत क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया, बल्कि बेहद बदतमीज़ी और गुस्ताख़ी का रवैया अपनाया और अपमानित करके उनको वहां से निकलने पर मजबूर कर दिया। इतना ही नहीं जब वे वहां से लौटने लगे तो उन्होंने ताइफ़ के आवारा बाज़ारी लड़कों को नबी के पीछे लगा दिया जो आपके पीछे शोर मचाते फिरते थे और आपको पत्थर मारते थे। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा आपको बचाने की कोशिश करते रहे, यहां तक कि वे ख़ुद भी घायल हो गए। ताइफ़ की सीमाओं से निकलते-निकलते आपका शरीर लहू-लुहान हो गया और ख़ून से आपके जूते भर गये।

नबी (सल्ल०) ने ताइफ़ से कुछ दूर एक बाग़ में पनाह ली। आप बहुत थके हुए, घायल और दुखी थे। बाग़ के मालिक ने जब दो थके हुए अजनबी को देखा तो अपने ग़ुलाम अद्दास को कुछ अंगूर देकर उनके पास भेजा।

नबी (सल्ल०) ने अंगूर खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहा,

तो अद्दास चौंक पड़ा और बोला कि इस इलाक़े के लोग तो यह शब्द नहीं कहते हैं। नबी (सल्ल०) ने उससे उसके धर्म और वतन के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह नैनवा का रहने वाला है और ईसाई है।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम नैनवा के रहने वाले हो, जो अल्लाह के नेक बन्दे हज़रत यूनुस का शहर है।"

अद्दास ने हैरत से पूछा, आप हज़रत यूनुस को कैसे जानते हैं?

नबी (सल्ल०) ने कहा कि वे मेरे भाई थे, वे नबी थे और मैं भी नबी हूं।

अद्दास ने यह बात सुनी तो प्रभावित होकर आपके हाथों और पैरों को चूमने लगा। नबी (सल्ल०) ने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि ऐसे समय में जब पूरा शहर विरोध पर आमादा था, एक व्यक्ति का दिल प्रभावित हुआ।

ताइफ़ में इस्लाम के लिए दरवाज़ा बंद हो गया था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और उनके साथी पत्थरों की चोट से घायल थे। ऐसे मौक़े पर आपने अल्लाह के सामने जो दुआ की, उसका उल्लेख किए बिना यह अध्याय पूरा नहीं हो सकता है।

नबी (सल्ल०) ने अर्ज़ किया :

"ऐ अल्लाह! मैं अपनी कमज़ोरी, अपनी बेबसी और लोगों की नज़र में अपनी बे-क़द्री की शिकायत तेरे ही सामने करता हूं। ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले! तू कमज़ोरों का रब है और तू ही मेरा रब है। तू मुझे किसके हवाले करता है? ऐसे व्यक्ति के जो मेरे साथ सख़्ती से पेश आए, या ऐसे दुश्मन के जिसे तूने मेरे मामले का मालिक बना दिया अगर तू मुझसे नाराज़ नहीं है तो मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं, लेकिन तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज़्यादा कुशादा है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह मांगता हूं, जिससे अंधेरे रौशन हो गए और जिससे दुनिया और आख़िरत के मामले ठीक हुए, इस बात से कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हो या तेरी नाराज़गी मुझ पर आ जाए। तेरी ही रज़ामंदी मेरी मंज़िल है, यहां तक कि तू राज़ी हो जाए, और तेरे सिवा कोई ताक़त और शक्ति नहीं।"

"हमने एक अद्भुत कुरआन सुना, जो मार्गदर्शन की ओर ले जाता है, इसलिए हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाएंगे।" (कुरआन 72:1-2)

इसी बीच हज़रत जिबरील बादलों में दिखाई पड़े और आवाज़ देकर आपको बताया कि अल्लाह ने आपके पास पहाड़ों के फ़रिश्ते को भेजा है। आप इसे जो चाहे आदेश दें। फिर पहाड़ों के फ़रिश्ते ने आपको सलाम किया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अगर आप आदेश दें तो मैं इन दोनों पहाड़ों को मिलाकर एक कर दूं जिनके बीच ताइफ़ बसा हुआ है, ताकि ये लोग इनके बीच पिसकर ख़त्म हो जाएं।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०), जो समस्त जगत के लिए रहमत बनाकर भेजे गए थे, ने कहा, नहीं! मैं अल्लाह से उम्मीद करता हूं कि अल्लाह इनके वंश से ऐसे लोग पैदा करेगा, जो केवल एक अल्लाह की इबादत करेंगे और किसी को उसके साथ शरीक नहीं ठहराएंगे।

ताइफ़ से वापसी के अवसर पर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मक्का की ओर जा रहे थे। जब आप नख़ला की वादी में थे तो फ़ज्र नमाज़ का समय हो गया। आप नमाज़ के लिए खड़े हो गए और नमाज़ में लम्बी क़िरअत (क़ुरआन पाठ) करने लगे। इसी बीच वहां से जिन्नों का एक समूह गुज़र रहा था, जब उन्होंने क़ुरआन सुना तो ठहर गए। सरदार ने सबको शांत रहने का आदेश दिया। जिन्नों ने क़ुरआन के उस हिस्से को ग़ौर से सुना और उस पैग़ाम को लेकर अपनी क़ौम में लौट गए।

क़ुरआन के अनुसार उन जिन्नों ने अपनी क़ौम से कहा :

"हमने एक अद्भुत क़ुरआन सुना, जो मार्गदर्शन की ओर ले जाता है, इसलिए हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाएंगे।" (क़ुरआन 72:1-2)

मक्का वापस आकर नबी (सल्ल०) ने उसी जोश और जज़्बे के साथ अपना काम जारी रखा, जैसे कि आप करते आये थे। हज का मौसम शुरू होने वाला था, दूरदराज़ के क़ाफ़िले मक्का आने लगे थे। आप एक-एक क़ाफ़िले बल्कि एक-एक व्यक्ति से जाकर मिलते और उसके सामने इस्लाम पेश करते। उनमें से कुछ ने अच्छा जवाब भी दिया। फिर हज के बाद कई बाहरी लोगों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। ■■

“

(लोगो को) शिक्षित करो और आसानी पैदा करो। और जब तुममें से किसी को क्रोध आ जाए तो चाहिए कि चुप हो जाए। और जब तुममें से किसी को क्रोध आ जाए तो चाहिए कि चुप हो जाए। और जब तुममें से किसी को क्रोध आ जाए तो चाहिए कि चुप हो जाए।

”

(हदीस : अहमद, तबरानी फ़िल कबीर)

with best compliment from

Jamaat Islami Hind
Munger Unit
(Bihar)

KANTI Monthly, New Delhi
September 2026
Posted on 20-21 August 2026
Published on 18 August 2026
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52



AL-FARIYA HOSPITAL BUDAUN (UP)

"आसानी पैदा करो,
कठिनाई पैदा मत करो;
ख़ुशख़बरी दो,
घृणा पैदा मत करो।"

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher